

# प्रज्ञा

वार्षिक पत्रिका

(2017-18 & 2018-19)

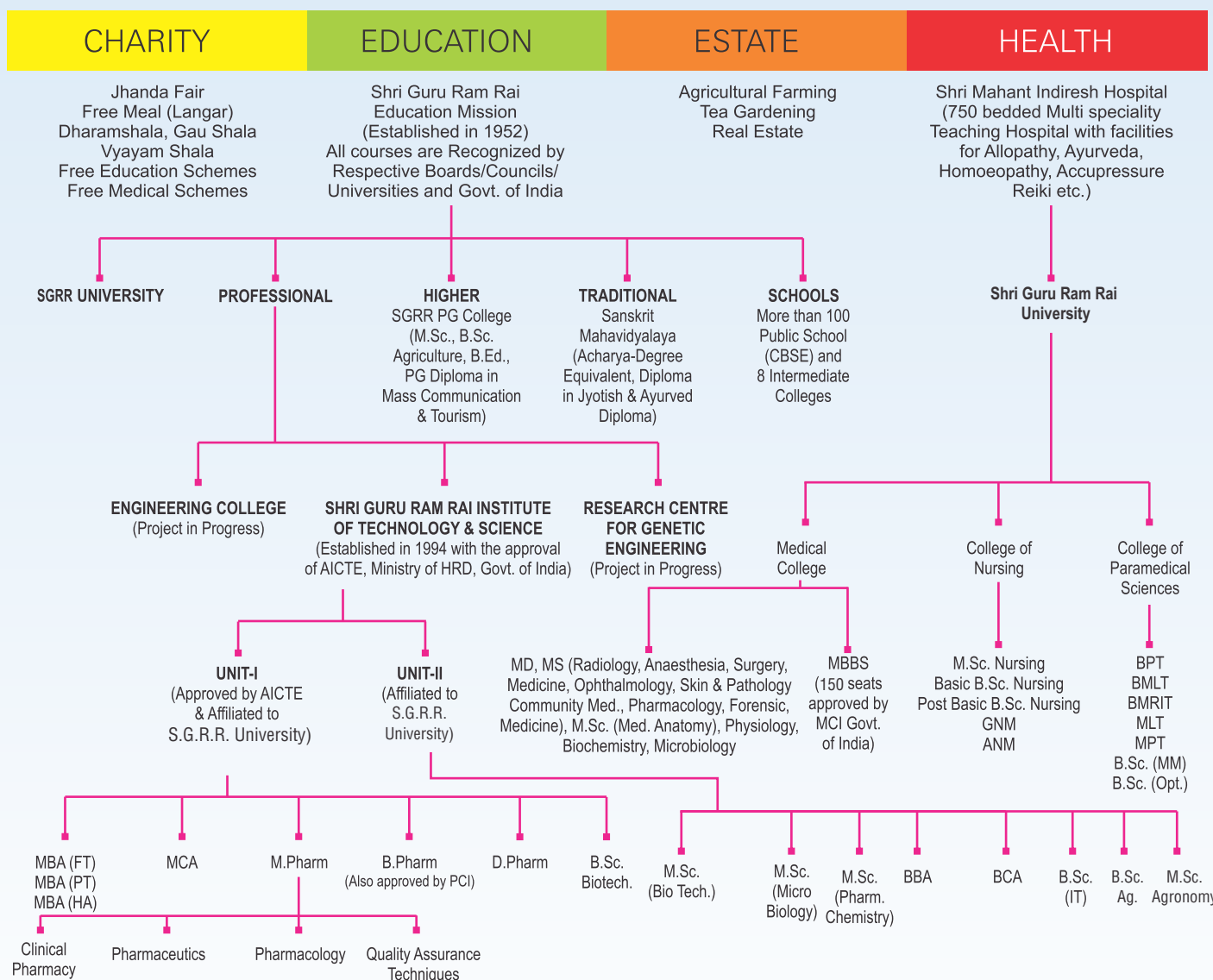




# Darbar Shri Guru Ram Rai Ji Maharaj

341 years old Religious/Philanthropic Organization

## ACHIEVEMENTS OF DARBAR SAHIB



# प्रज्ञा

## वार्षिक पत्रिका

2017-18 एवं 2018-19



सम्पादक  
डॉ० सुमंगल सिंह  
विभागाध्यक्ष  
हिन्दी विभाग

श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज  
देहरादून (उत्तराखण्ड)

**संरक्षक**

प्रो० विनय आनन्द बौड़ाई  
प्राचार्य

**सम्पादक**

डॉ० सुमंगल सिंह  
हिन्दी विभाग

**सह-सम्पादिका**

डॉ० अनुपम सैनी  
अंग्रेजी विभाग

**सम्पादक-मंडल**

डॉ० हर्षवर्धन पन्त  
डॉ० संजय कुमार पडालिया  
डॉ० मनोज कुमार पुरोहित  
डॉ० आनन्द सिंह राणा

**छात्र-सम्पादक**

प्रस्तावना राणा  
वैष्णवी गुप्ता

**आवरण एवं पृष्ठ संयोजन**

डॉ० हर्षवर्धन पन्त  
डॉ० आनन्द सिंह राणा

**प्रकाशक**

**प्राचार्य**

श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज,  
पथरीबाग, देहरादून (उत्तराखण्ड)

**मुद्रक**

सरस्वती प्रेस,  
2 ग्रीन पार्क, देहरादून  
दूरभाष : 9358865676



महाविद्यालय के संरक्षक



**पूज्य श्रीमहन्त देवेन्द्रदास जी महाराज**  
सज्जदा नशीन

पीठासीन श्रीमहन्त,  
दरबार श्री गुरु राम राय, देहरादून

श्रीमहन्त देवेन्द्र दास  
सज्जदा नशीन



दूरभाष { कोठी : 2624810  
कार्यालय : 2623635



मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्री गुरु राम राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून की वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' का संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है।

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है, इसलिए यह आवश्यक है कि निश्चित पाठ्यक्रम के अध्ययन के साथ-साथ सृजनात्मकता को भी अभिव्यक्त एवं विकसित करने का अवसर प्रदान किया जाये। व्यक्तित्व के इस बहुमुखी विकास में महाविद्यालय की पत्रिका एक उपयुक्त मंच प्रदान कर सकती है।

मुझे आशा है कि 'प्रज्ञा' पत्रिका में रोचक, श्रेष्ठ एवं सुरुचिपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जायेंगी, जो पाठकों के ज्ञान में अभिवृद्धि के साथ-साथ उन्हें सकारात्मक जीवन मूल्यों के प्रति अग्रसर करेंगी।

मैं प्राचार्य महोदय, संपादक मण्डल तथा समस्त महाविद्यालय परिवार को शुभकामनाएं देता हूँ तथा 'प्रज्ञा' चारों ओर ज्ञान का प्रकाश फैलाए यह मंगलकामना करता हूँ।

(श्रीमहन्त देवेन्द्र दास)

त्रिवेन्द्र सिंह रावत



उत्तराखण्ड सचिवालय

देहरादून-248001

फोन : (0135) 2755177

: (0135) 2650433 (का.)

फैक्स : (0136) 2712827



## संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि श्री गुरु राम राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून अपनी वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' का प्रकाशन करने जा रहा है, इस हेतु समस्त सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनायें। इससे जहां एक ओर नवोदित रचनाकारों की सृजन-शीलता को प्रोत्साहन मिलता है, वहीं दूसरी ओर शिक्षण संस्था द्वारा सृजित और संकलित ज्ञान और सूचनाओं को कॉलेज तथा उसकी सीमाओं के बाहर भी विस्तारित करने में मदद मिलती है साथ ही पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों को भी अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का सुअवसर प्राप्त होता है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका 'प्रज्ञा' में ऐसी महत्वपूर्ण एवं रोचक सामग्री का प्रकाशन किया जायेगा, जिससे छात्र वर्ग के जीवन-दर्शन, कार्य-संस्कृति और अध्ययन रुचि में अभिवृद्धि होगी।

मैं 'प्रज्ञा' पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(त्रिवेन्द्र सिंह रावत)





रमेश पोखरियाल 'निशंक'  
Ramesh Pokhriyal "Nishank"



मंत्री  
मानव संसाधन विकास  
भारत सरकार  
MINISTER  
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT  
GOVERNMENT OF INDIA



## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि श्री गरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज, उत्तराखण्ड अपनी वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' का संयुक्तांक प्रकाशित करने जा रहा है।

महान् समाज सुधारक, शिक्षाविद् एवं दार्शनिक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने शिक्षा को व्यापक अर्थों में परिभाषित करते हुए कहा है कि "शिक्षा वह है जो व्यक्ति को यथार्थ के महत्व को समझने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा के माध्यम ये आंतरिक शक्ति को इतना अधिक विकसित करना है कि जिससे वह व्यवहार में भी परिलक्षित होकर एवं समाज को प्रगतिशील पथ अग्रसर करते हुए महान राष्ट्र का निर्माण कर सके।"

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका जहाँ एक ओर युवा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की सृजनात्मक क्षमताओं को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करती है वहीं महाविद्यालय की वर्षपर्यंत की गतिविधियों एवं उपलब्धियों को भी संचित दस्तावेज के रूप सम्मुख रखती है। विद्यार्थियों में सर्जना एवं पहल को विकसित करने के लिए यह अनिवार्य है कि हम विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और उन्हें कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से अपने अनुभव को अभिव्यक्त करने का उपयुक्त अवसर समय-समय पर प्रदान करें। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका इस दृष्टि से विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता को विकसित करने और उसके माध्यम से नवीन ज्ञान को सृजित करने का महत्वपूर्ण साधन है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में लेख, संस्मरण व अन्य पठनीय और ज्ञानवर्द्धक होंगी तथा पत्रिका विद्यार्थियों की सृजनात्मक मेधा को प्रोत्साहित करेगी और पठन-पाठन एवं रचनाधर्मिता में उनकी रुचि को प्रखर करेगी।

मैं वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(रमेश पोखरियाल 'निशंक')



सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

Room No. 3, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 115  
Phone: 91-11-23782387, 23782698, Fax: 91-11-23382385  
E-mail: minister.hrd@gov.in

**धन सिंह रावत**

राज्यमंत्री (स्वतन्त्र प्रभार)  
उच्च शिक्षा, सहकारिता, प्रोटोकॉल,  
दुग्ध विकास



**विधान सभा भवन**

**देहरादून**

**कक्ष सं: 115**

फोन : (0135) 2666410

फैक्स : (0136) 2666411 (का.)



## **शुभकामना संदेश**

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि श्री गुरु राम राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका 'प्रज्ञा' का संयुक्तांक प्रकाशित किया जा रहा है। महाविद्यालय परिवार द्वारा किया जा रहा है यह प्रयास सराहनीय है। आशा है कि पत्रिका के माध्यम से अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की प्रतिभा को निखारने एवं उन्हें समाज की मुख्य धारा में जोड़ने हेतु प्रेरित करने का प्रयास किया जायेगा। सारगर्भित एवं प्रेरणा दायक लेखों का समावेश कर पत्रिका को उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बनाया जायेगा।

श्री गुरु राम राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'प्रज्ञा' की लोकप्रियता एवं सफलता हेतु सम्पादक मण्डल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

**(डॉ धन सिंह रावत)**

**विनोद चमोली**

विधायक

धर्मपुर, विधानसभा

*Vinod Chamoli*

*M.L.A.*

*Dharampur, Vidhan Sabha*



सदस्य विधा सभा  
उत्तराखण्ड

निवास: म०नं० 130/6  
ओल्ड नेहरू कालोनी, देहरादून  
कार्यालय : 0135-2722512  
आवास : 0135-2676600  
मोबाइल : 9410148510



## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री गुरु राम राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून अपनी वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' का द्विवार्षिकांक प्रकाशित करने जा रहा है।

यह महाविद्यालय उत्तर भारत का प्रमुख केन्द्र रहा है। यहां से शिक्षा प्राप्त कर अनेक प्रतिभाएं विभिन्न क्षेत्रों में प्रदेश एवं देश का नाम रोशन कर रही हैं।

'प्रज्ञा' में प्रकाशित विद्वान गुरुजन एवं छात्र-छात्राओं के लेख भावी पीढ़ी हेतु प्रेरणादायक होंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं।

  
विनोद चमोली  
विधायक  
18, विधान सभा क्षेत्र धर्मपुर

(विनोद चमोली)



**विनोद कंडारी**

विधायक  
देवप्रयाग, विधानसभा

*Vinod Kandari*

*M.L.A.*

*Devprayag, Vidhan Sabha*



सदस्य विधा सभा  
उत्तराखण्ड

निवास: - 09 एम0एल0ए0  
ट्रांजिट हॉस्टल, रेसकोर्स, देहरादून।  
कार्यालय : 0135-2720727  
मोबाइल : 9410977777



## शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि श्री गुरु राम राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देहरादून अपने वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' के संयुक्तांक प्रकाशित करने जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित लेख पाठकों के लिये उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होंगे।

मेरी ओर से 'प्रज्ञा' पत्रिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(विनोद कंडारी)

## FROM THE *Principal's* DESK



The Institutional framework of Higher Education in India consists of universities and colleges. As per data of the UGC uploaded on its website, India has 920 Universities comprising four types of Universities – Central Universities, State Universities, State Private Universities and Deemed to be Universities, besides Institutes of National Importance.

India's higher education system is the third largest in the world next to the United States of America and China. The main governing body at tertiary level is the University Grants Commission or the UGC, which enforces its standards, advises the government, and helps co-ordinate between the Centre and the states. The accreditation for higher education is over seen by 15 autonomous Institutions by the University Grants Commission.

Dear staff and students; out of nearly 40,000 colleges in India, SGRR (P.G) College, Pathri Bagh Dehradun, holds a distinct place due to its NAAC ranking. The NAAC (National Assessment and Accreditation Council) an established body by the University Grants Commission has awarded S.G.R.R. (P.G.) College, Dehradun 'A' Grade with 3.04 CGPA in the year 2016, which is the highest grading in our state.

The UGC high power selection committee for CPE (College with Potential for Excellence) selected our College for CPE (First Phase) for year period 2012-2017.

In the year 2017 again the college was selected for the CPE status by UGC and awarded the CPE (Second Phase) for the period 2017-2022. This is the only college granted this Special Status by UGC in the state of Uttarakhand.

The blessings and guidance of His Holiness Pujya Shri Mahant Devendra Dass Ji Maharaj were of immense value; this helped the college to achieve the coveted status of CPE.

In the last few years a very good number of students of our college qualified the national level competitive examinations which are the gateways to enter high profile jobs or for admissions in Universities and Institutes of National/International importance like IITs/ IISc Bangalore /IIP/CDRI/IMA/OTA etc. Our teachers are regularly in touch with such students; these students are also giving guidance with the help of modern means of communication to junior students of the college. For example WhatsApp group or Facebook are very popular means of communication among students.

Every year HNB Garhwal (Central) University declares the university merit lists of various courses; where a good number of students of SGRR PG College secure positions in merit. For example in 2017, M.A. English Exam, I, II, III rd all three positions were from our college. I am proud of them.

Seven departments of our college are Research Centers and 17 students pursuing PhD at SGRR PG College after getting selected from all India competitive examination conducted by HNB Garhwal University.

The NCC unit of the college is one of the best units in Uttarakhand. Every year a good number of cadets qualify 'C' & 'B' Certificates. For last few years our cadets have been regularly participating in 26th January National Parade on Raj Path, New Delhi.

A few cadets are selected every year for the training in the Indian Military Academy and Officers Training Academy. The entry in these First Class Establishments of Indian Army is on the basis of all India selection.

The volunteers of three NSS units of the college periodically organize blood donation camps. Blood donation is most needed by the hospitals at the time of emergencies like dengue/swine flu/accidents etc. A large number of student volunteers of our college register with Shri Mahant Indires Hospital, Dehradun, with their blood groups; they donate blood during emergency. The NSS volunteers also participate in the social, environment related programs of state and

national importance. The college has also Rovers/Rangers unit, in which the student volunteers participate in state as well as national level camps.

The college sports teams (those of boys as well as girls) have won lots of Championships time to time in various games like cricket, football, badminton athletics etc. The students of our college have contested not only up to University level but also at the regional, zonal, national and at international levels.

Every year HNB Garhwal University organizes university level cultural contests for all the affiliated colleges in university campus, Srinagar Garhwal. Approximately 30 students from our college participate in cultural activities at university level. They do take part in almost every cultural event in the University & win prizes in different events.

I am highly thankful to the management of our College for rendering all possible help in the development of the college. I also thank the Professors, Associate Professors, Assistant Professors, and non-teaching staff and students for working hard and creating a distinct name of the college not only at state level but also at the national level.

**Prof. V. A. Bourai**



# सम्पादकीय



श्री गुरु राम राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' का द्विवार्षिकांक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। मैं स्वयं को भाग्यशाली मानता हूँ क्योंकि उत्तराखण्ड का प्रतिष्ठित कॉलेज एवं नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त व सी.पी.ई. स्टेटस प्राप्त महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'प्रज्ञा' का संपादन करने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ है।

वास्तव में किसी भी महाविद्यालय की पत्रिका में उस महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की रुचि, प्रतिभा, मानसिक स्तर तथा उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का लेखा-जोखा होता है। इस प्रकार महाविद्यालयीय पत्रिका जहाँ एक ओर महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों को शब्द देती है, वहीं दूसरी ओर महाविद्यालय के यथार्थ को भी प्रतिबिम्बित करती है।

रचनात्मकता जीवन में न केवल आवश्यक है अपितु उसे सार्थक भी बनाती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, यदि कोई वस्तु मनुष्य को प्राणी (पशु) से ऊपर उठाती है, तो वह है रचनात्मकता। यही रचनात्मकता पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होती है।

यदि भौतिक पहलुओं को ही सत्य मानना होता तो मनुष्य जीवन भौतिक पहलुओं तक ही सीमित रह जाता, किन्तु एक रचनाकार जीवन के इस भौतिक पहलू से ऊपर उठकर कल्पना के सहारे एक ऐसी दुनिया का निर्माण करने में सफल होता है जो मानसिक तथा आध्यात्मिक तत्वों से निर्मित होती है तथा जिसकी रचना करते समय उसे स्वयं भी आनंद की अनुभूति होती है और वह अपने पाठकों को भी आनंद की अनुभूति का एहसास कराता है।

रचनात्मकता की इस कसौटी पर महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं कितना सफल हुए हैं, यह उनके द्वारा पत्रिका में प्रकाशित लेखों, कविताओं आदि से स्पष्ट हो जाता है। इसमें बेशक भाषायी परिपक्वता का अभाव मिले किन्तु उनके विचारों एवं भावों की भौतिकता तथा सृजनात्मकता आसानी से देखी जा सकती है।

लेखन के महत्व को बताते हुए अंग्रेजी लेखक फ्रांसिस बेकन ने कहा है Reading makes a full man; conference a ready man; and writing an exact man. अर्थात् पढ़ने की प्रवृत्ति मनुष्य को सम्पूर्ण बनाती है। वाद-विवाद उसके मस्तिष्क को हाज़िर-जवाब बनाता है, जबकि लेखन उसे सटीकता प्रदान करता है। इस प्रकार लेखन की प्रवृत्ति मनुष्य के ज्ञान को एक सकारात्मक दिशा प्रदान करती है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए, जब हम महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की रचनाओं का विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि उनकी रचनाओं में सृजनात्मकता की कोई कमी नहीं है। भले ही पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में कोई गंभीर भाव या विचार न मिले, किन्तु रचनाकारों में अभिव्यक्ति देने की उत्कंठा स्पष्ट रूप से अनुभव की जा सकती है। इस दृष्टि से सभी नवोदित रचनाकार बधाई एवं साधुवाद के पात्र हैं।

छात्र-छात्राओं के अधिसंख्य लेखों में से पत्रिका के लिए लेखों का चयन भी संपादक मंडल के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है अतः जिन छात्र-छात्राओं की रचनाएं पत्रिका में प्रकाशित न हो पाई हों वे निराश न होकर अपनी-अपनी रचनाशीलता निरन्तर बनाये रखें, आगामी पत्र-पत्रिकाएं उनकी अभिव्यक्ति का इंतजार कर रही हैं।

यदि पत्रिका उसके आवरण से लेकर रचनाओं की सार्थकता तथा चयन आपको प्रभावित करे तो इसका सम्पूर्ण श्रेय हमारे सम्पादक मंडल के सम्मानित साथियों को जाता है। जिन्होंने लेख चयन, उसके सुधार आदि कार्य में रात-दिन एक करके यह कार्य सम्पन्न किया।

महाविद्यालय के सभी विद्वान साथियों का भी संपादक मंडल ऋणी रहेगा जिन्होंने गुरु गरिमा का निर्वाह करते हुए समय-समय पर अमूल्य सुझाव दिये। समस्त विभागाध्यक्षों के भी हम हृदय से आभारी हैं जिन्होंने अत्यन्त व्यस्तता के बावजूद विभागीय रिपोर्ट उपलब्ध करवाकर सहयोग प्रदान किया।

**प्रज्ञा** के प्रकाशन में हम ऊर्जावान प्राचार्य प्रो० वी०ए० बौड़ाई का विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं, जिनके कुशल नेतृत्व में महाविद्यालय ने विगत वर्षों में तमाम ऊँचाईयों को प्राप्त किया है। पत्रिका के प्रकाशन में आपका मार्गदर्शन हमें निरन्तर प्रोत्साहित करता रहा है।

पत्रिका प्रकाशन में सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार पूज्य महाराज जी श्री देवेन्द्र दास जी का हृदय से आभार व्यक्त करता है, जिनके कुशल निर्देशन में श्री गुरु राम राय एजुकेशन मिशन दिन-दोगुनी और रात-चौगुनी प्रगति कर रहा है। श्री महाराज जी के आशीर्वाद स्वरूप ही '**प्रज्ञा**' का यह अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

डॉ० सुमंगल सिंह  
प्रधान संपादक

‘शास्त्रे संभालो निज वीणा फिर एक बार,  
बोल उठे मेरी उर-तंत्री के सभी तार।  
अनायास उनसे निकलकर गूँज जायँ,  
भाव-भीने रस-सने मानस के उद्गार।’

-राम बहोरी शुक्ल

# *Higher Education Director's Visit*





# *National Seminar & Workshops*





# National Seminar & Workshops





# National Seminar & Workshops





# Cultural Activities





# *RUSA New Building Inauguration*





# *Blood Donation Camp*





# अनुक्रमणिका

• NAAC Report	Dr. S. K. Padaliya	02	• मेंस्ट्रुअल हाइजीन...	नरेन्द्र राणा	25	• उत्तराखण्ड का बहुमूल्य...	डॉ. हर्षवर्धन पन्त	47
	Dr. Anupam Sanny		• The Nobel Prize	Meemansha	26	• Black Holes...	Bishwas Nautiyal	48
• Microbes of Cosmetics	Dr. Poonam Sharma	03	• एक कविता ऐसी भी	प्रिया कटैत	26	• टिहरी रियासत में सड़क	डॉ. महेश कुमार	50
• हिन्दी भाषा एवं विज्ञान	डॉ. हर्षवर्धन पन्त	04	• Historical Geology	H.R. Arvinth Kumar	27	• Urticaria: A Common...	Gauri Singh	53
• Dalip Kaur Tiwana...	Amandeep Kaur	05	• An Old Father thought	Simran Babbar	27	• स्वच्छता के पथ पर	शिवपुत्र अनुराज	55
• An Ode To My Sister	Dr. Jyoti Pandey	06	• बेटी	वैष्णवी गुप्ता	28	• स्वच्छता चालीसा	मीमांशा कैन्तुरा	55
• If I Could	Priyanka Tariyal	06	• Life! A Journey...	Srishti Raturi	28	• A Piece of Wood	Lovely	55
• Valkoinen Kuolema...	Nupur Joshi	06	• Are you Addicted...	Kalpna	28	• Films Versus Reality	Mehjabeen	56
• Bhuvan- ISRO's...	Dr. Geeta Rawat	07	• आज घर में अकेले था	मेजर प्रदीप जसह	29	• Perfection is not...	Ayesha P. Siddiqui	57
• जिन्दगी	डॉ. दीपाली सिंघल	08	• परिश्रम सफलता की...	त्रिलोक राणा	29	• अब वो दिन बीत गये	कु. मीमांशा कैन्तुरा	57
• At Times I Wonder	Nidhi Lakhera	08	• LUCA	Soniya Tyagi	30	• बी. आर. अम्बेडकर	पियुष गुसाईं	58
• सैनिक	शिवांगनी	09	• लोग	त्रिलोक राणा	30	• Importance of Yoga	Ansh Malhotra	59
• These Walls	Priyanka Tariyal	09	• Founder Memorial...	Prateek Upreti	31	• Hope	Simran Babbar	59
• Atal Bihari Vajpayee	Megha Panwar	10	• देश	नरेन्द्र राणा	33	• Is Social Networking...	Ankit Saini	60
• Self Defence	Aditi Sharma	11	• Farming...	Tanuja Chand	33	• संघर्ष	कुसुमलता सेमवाल	61
• Some People Are Like	Saumya Lakhera	12	• आरक्षण इतिहास व...	गौतम दुबे	34	• आर.टी.आई.	अजय जोशी	62
• My India	Afreen Ansari	12	• वंशवाद (परिवारवाद)	अंशिका शर्मा	35	• स्वतंत्रता सेनानी	ज्योत्सना	62
• Living With Hope	Pratima Patel	12	• Ayushman Bharat	Aaliya	36	• माँ	अधवेश प्रताप	63
• CBCS का विरोध	शिवांगनी शर्मा	14	• Value of Love	Seema Thapa	37	• राजधानी में तेजी से...	पियुष गुसाईं	63
• Commercial Banks	Nupur Joshi	15	• Hydroponics	Tanuja Chand	37	• Life Must Go On	Gauri Singh	64
• What is Birthday?	Afreen Ansari	15	• Digital Children	Digital Children	38	• God Among Us	Mahima Bisht	64
• Simple Math	Afreen Ansari	15	• गुरु महिमा	श्वेता भण्डारी	38	• Life is an Examination	Gauri Singh	64
• Mental Health	Pinki Deorari	16	• Have You Earned...	Ayushi Tyagi	39	• माँ की महिमा	आकांक्षा चौधरी	65
• I Want to....	Akanksha Chaudhari	16	• A 'Heaven on...	Abdul Aziz	39	• नेत्र अंतरआत्मा का...	प्रतिमा पटेल	65
• भारतीय शिक्षा प्रणाली	गौतम दुबे	17	• महिलाओं की आर्थिक...	अंकित सैनी	40	• डॉ. कलाम के सूक्त	तन्वी	66
• Facts About Japan	Mamta Rawat	18	• Save Fuel, Save	Anjali Bisht	40	• अब रहम नहीं करूँगा...	आयुषी त्यागी	66
• Thoughts: That ....	Chetna Kalra	18	• Workshop on...	Shruti Pandey	42	• Irony of Life	Saumya Lakhera	66
• Why not a Girl?	Afreen Ansari	19	• प्रदूति एक उपहार	प्रस्तावना	43	• नया आगाज	डॉ. एच. सी. जोशी	67
• People With Good...	Kanishka Thakur	19	• Grandma	Anjali Bisht	44	• शरीर	शशिप्रकाश कोटनाला	67
• मोबाइल: वरदान या...	सिमरन चन्द	20	• हिन्दी	नरेन्द्र राणा	44	• In Conversation with...	Saumya Lakhera	68
• Because We Don't...	Kanishka Thakur	21	• जीवन क्या है	जी एस रावत	44		Kritika Sawan	
• Interesting Unknown...	Kalpna	22	• Memory	Lovely	45	• National Conference...	Ashish Henry	70
• जीवन क्या है	जी.एस. रावत	22	• विचार	ज्योत्सना	45	• Tete-a-tete with...	Ayesha P. Siddiqui	72
• Honey Bees and...	Mamta Rawat	23	• जीवन में कला का...	शिवांगनी शर्मा	46		Ayushi Maletha	
• समय और ब्रह्मांड	समक्ष खाली	24	• कर्म की शक्ति	प्रतीक उप्रेती	46	• Reports		

## ***Journey towards Progression: NAAC Report (2017-18 and 2018-19)***

The concept of quality sustenance and quality enhancement in institutions of higher education in India took concrete shape with the establishment of NAAC in 1994. The S.G.R.R. (P.G.) College has been an integral part of this Assessment and Accreditation process initiated by NAAC. The First and Second Cycle of Assessment & Accreditation in S.G.R.R. (P.G.) College took place in 2010 and March 2016 respectively. Accredited with "A" Grade by NAAC in Second Cycle and awarded CPE Second Phase by UGC (2017-22) the college is steadily pursuing its journey towards excellence.

In the college, IQAS (Internal Quality Assurance System) is the regulating body which assists in maintaining and enhancing quality. To prepare the AQAR (Annual Quality Assurance Report) within the stipulated time is the foremost requirement of IQAS which has been successfully accomplished by our college. The AQAR of the session 2015-16 was submitted on 6 February, 2017 and for the session 2016-17 submitted on 13 March, 2018. The submission of third AQAR on 18 January, 2019 was somewhat challenging as NAAC introduced many modifications in the new prescribed guidelines. The data of AISHE (All India Survey on Higher Education) was also successfully uploaded online in last three years, i.e. 2016, 2017 and 2018.

Apart from AQAR submission, the responsibility of IQAS is to develop a well structured system for "conscious, consistent and catalytic improvement" in the overall performance of the Institution. That's why IQAS taps all kinds of information related with administrative and academic activities of the college. It emphasizes on the vigilant observation of students, parents and other stakeholders. To serve the purpose,

IQAS convenes quarterly meetings regularly during an academic year. All IQAS meetings are held under the chairmanship of Principal, Prof VA Bourai in which different stakeholders (Alumni, Community Management and Student Union Representative) participate. The IQAS members give their inputs or invaluable suggestions for the progress and betterment of the college. During IQAS meetings, achievements of students and faculties are enumerated and a roadmap is prepared for future activities.

IQAS is a continuous, systematic and comprehensive process of maintaining and upgrading quality. The Assessment and Accreditation process of NAAC focuses on the seven criteria on the basis of which AQAR is prepared. These seven criteria are:

- (i) Curricular Aspects
- (ii) Teaching-Learning and Evaluation
- (iii) Research, Innovations and Extension
- (iv) Infrastructure and Learning Resources
- (v) Student Support and Progression
- (vi) Governance, Leadership and Management
- (vii) Institutional Values and Best Practices.

To ensure improvement in the existing system, feedback process plays a pivotal role. In every academic session, IQAS arranges feedback responses from students which serve as a process of self-evaluation to all involved in the system. In order to maintain learning resources and infrastructure such as library, laboratories, playgrounds and classrooms, the grants received from various agencies such as RUSA, UGC and other funding agencies are documented succinctly in IQAS. Various kinds of scholarships

given to meritorious students from various resources such as by stakeholders and departments are documented in IQAS. Departments of the college organize seminars, conferences and workshops to enhance the quality of teaching and research and to widen the mental horizon of students.

A significant achievement of our college was that the Uttarakhand Government nominated Prof. V A Bourai the Convener of the 'Fact Finding Committee' to evaluate 12 government colleges of Garhwal region to guide them regarding the Assessment and Accreditation process by NAAC. Consequently he and his team including Dr. SK Padaliya (Assistant Professor, SGRR (PG) College and Dr. SN Sidh (Asstt Prof., GDC Gairsain Chamoli) visited these colleges. On the basis of qualitative questionnaire, the Convener and his team collected mandatory information from the Principals of these colleges and observed their preparation for NAAC A&A.

On the basis of their observations, Prof. VA Bourai gave them suggestions and motivated them to achieve better grades in NAAC A&A. Such encouraging attitude of our Principal has always stimulated the IQAS of our college also to set the benchmark for quality enhancement. Here I recall the quotation of John Locke that "the improvement of understanding is for two ends: first, own increase of knowledge; secondly, to enable us to deliver that knowledge to others."

Quality enhancement is a continuous, evolving process and IQAS of our college has been making untiring efforts in order to meet NAAC Criteria in 3rd Cycle of Accreditation and Assessment due in 2021.

**Dr. S. K. Padaliya**  
Co-ordinator, IQAS

**Dr. Anupam Sanny**  
Secretary, IQAS

## *Microbes of Cosmetics*

Cosmetics are external preparations, normally applied to human body parts, mainly for beautifying, cleansing and protecting. These products are non sterile but must be completely free of high virulence microbial pathogens. These products must not normally harm body function or structure. The cosmetics of daily use are creams, gels, powder, lotions, perfumes, eye cosmetics, bindi etc. These cosmetics show dermatological problems and allergy. The main causes of allergies are low quality of cosmetics, spoilage of cosmetics, secretion of toxins by micro organisms, chemical ingredients of cosmetics, inadequate preservative system, packaging materials and

mode of use.

Common microbes of cosmetics are E.coli, Aerobacter, Bacillus subtilis, Alternaria, Aspergillus, Fusarium, Trichoderma etc. Production of cosmetics products requires quality management system which consists of quality raw material, hygienic design of production, validated preservative system. Inadequately preserved products can provide conducive environment to microorganisms.

**Dr. Poonam Sharma**  
Assistant Professor  
Department of Botany



## हिन्दी भाषा एवं विज्ञान

आज वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी भाषा अपनी लिपि और ध्वन्यात्मकता (उच्चारण) के लिहाज से सबसे शुद्ध और विज्ञान सम्मत भाषा है। हमारे यहां एक अक्षर से एक ही ध्वनि निकलती है और एक बिंदु (अनुस्वार) का भी अपना महत्व है। विज्ञान में हिन्दी के उपयोग को अगर सार्थक बनाना है तो वैज्ञानिक सोच को आत्मसात करना जरूरी है। विज्ञान की जानकारी आम आदमी तक पहुंचे ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए, लेकिन मूल समस्या यह है कि बुनियादी या प्राथमिक स्तर पर हिन्दी में पढ़ाया जाने वाला विज्ञान माध्यमिक शिक्षा के बाद स्नातक स्तर पर किसी काम में नहीं आता क्योंकि तब भाषा बदलती है। बीएससी, एमएससी, इंजीनियरिंग सहित सभी प्रोफेशनल कोर्सेस की भाषा अंग्रेजी है, ऐसे में देश के करोड़ों छात्र अपने बुनियादी विज्ञान के ज्ञान का प्रयोग अपनी भाषा में नहीं कर पाते। माध्यमिक शिक्षा के बाद सारी पढ़ाई अंग्रेजी में होने की वजह से वो हीन भावना के शिकार भी होते हैं, साथ में उनकी विज्ञान में खुद की कोई सोच विकसित नहीं हो पाती या सीधे शब्दों में कहें तो छात्र अंग्रेजी से सीधे तौर पर सहज नहीं हो पाते जिससे कि उनमें मौलिकता की कमी हो जाती है। अनेक बार तो हिन्दी माध्यम के छात्र इंजीनियरिंग आदि प्रोफेशनल कोर्सेस में पिछड़ते चले जाते हैं जबकि वही छात्र माध्यमिक स्तर पर पढ़ाई में बहुत अच्छे होते हैं। छात्रों को अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने की आजादी होनी चाहिए। इसके बिना वो हमेशा हीन भावना महसूस करेगा। माध्यमिक स्तर के बाद विज्ञान इंजीनियरिंग मेडिकल और प्रोफेशनल कोर्सेस की भाषा हिन्दी में होनी चाहिए तभी विज्ञान का सही मायनों में प्रसार होगा। हिन्दी में विज्ञान को शैक्षणिक स्तर के साथ-साथ रोजगार की भाषा भी बनाना होगा, अगर कोई छात्र हिन्दी माध्यम से विज्ञान या इंजीनियरिंग आदि की पढ़ाई करे तो उसे बाजार भी सहायता करें जिससे कि उसे नौकरी मिल सके। उसके साथ रोजगार के मामले में भेदभाव नहीं होना चाहिए। सरकार को इसके लिए एक व्यवस्था विकसित करनी होगी तभी हिन्दी विज्ञान की भाषा बन पायेगी। इसी तरह हिन्दी में विज्ञान संचार को भी रोजगारपरक बनाते हुए बढ़ावा देना होगा। देश में हिन्दी में विज्ञान संचार बहुत उन्नत स्थिति में नहीं है। इसकी सबसे बड़ी वजह शायद यह है कि हिन्दी में विज्ञान संचार रोजी-रोटी से नहीं जुड़ पाया है। इसमें कैरियर की दृष्टि से भी पूर्णकालिक रूप में बहुत ज्यादा अवसर नहीं हैं। देश के अधिकांश हिन्दी अखबारों और मीडिया चैनलों में वैज्ञानिक पत्रकार नहीं हैं। देश में इस समय जितना भी विज्ञान लेखन और पत्रकारिता हो रही है अधिकांशतया पार्ट टाइम हो रही है। वही लोग ज्यादातर विज्ञान लेखन कर रहे हैं जो हिन्दी के

उत्थान के लिए सरकारी विभागों से जुड़े हैं या वो लोग जो पद और पैसे से समृद्धिशाली हैं। हिन्दी में विज्ञान संचार या पत्रकारिता को सबसे पहले आकर्षक रोजगार से जोड़ना पड़ेगा तभी यह उन्नत दिशा में पहुंचेगा। वैज्ञानिक जागरूकता और जन सशक्तीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी में विज्ञान पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। हिन्दी में विज्ञान संचार और स्थानीय स्तर पर देशी वैज्ञानिकों की जानकारी देने वाले लेखन का सामने आना जरूरी है। हमारे देश में लगभग साढ़े तीन हजार से भी अधिक हिन्दी विज्ञान लेखकों का विशाल समुदाय है परन्तु प्रतिबद्ध लेखक मुश्किल से पांच या सात प्रतिशत ही होंगे। इन लेखकों ने विज्ञान के विविध विषयों और विधाओं में 8000 से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं परन्तु इनमें से अधिकतर पुस्तकों में गुणवत्ता का अभाव है। मौलिक लेखन कम हुआ है और संदर्भ ग्रंथ न के बराबर हैं। लोकप्रिय विज्ञान साहित्य सृजन में प्रगति अवश्य हुई है परन्तु सरल सुबोध विज्ञान साहित्य जो जन साधारण की समझ में आ सके, कम लिखा गया है। इंटरनेट पर आज हिन्दी में विज्ञान सामग्री अति सीमित है। विश्वविद्यालयों तथा राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थानों में कार्यरत विषय विशेषज्ञ अपने आलेख, शोधपत्र अथवा पुस्तकें अंग्रेजी में लिखते हैं। वे हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषा में विज्ञान लेखन में रुचि नहीं रखते। संभवतः भाषागत कठिनाई तथा वैज्ञानिक समाज की घोर उपेक्षा उन्हें आगे नहीं आने देती। हिन्दी में विज्ञान विषयक शोधपत्रों/आलेखों को प्रस्तुत करने के लिए अंग्रेजी के समकक्ष विज्ञान मंचों की स्थापना की आवश्यकता है। अकादमिक संस्थाओं के माध्यम से भी विज्ञान लेखन को दृढ़ता देने के प्रयास सुनिश्चित करने होंगे। किसी शोधार्थी का मूल्यांकन सिर्फ उसके शोध प्रबंध से प्रकाशित शोधपत्रों से ही नहीं बल्कि विज्ञान को आम जनता के बीच पहुंचाने में सफलता के पैमाने पर रखकर भी होना चाहिए। सही मायनों में हिन्दी विज्ञान की भाषा तभी हो सकती है जब उसे शैक्षणिक स्तर पर ठीक से बढ़ावा मिले अर्थात् स्नातक और शोध स्तर पर हिन्दी के काम की स्वीकार्यता हो। साथ में हिन्दी में विज्ञान संचार रोजगारपरक भी हो। दूसरी बात यह है कि अपनी भाषा में विज्ञान को लोगों तक पहुंचाने के लिए वैज्ञानिक समाज को भी आगे आना होगा। संचार माध्यमों के साथ-साथ वैज्ञानिकों की भी जिम्मेदारी है कि वो हिन्दी में विज्ञान की सामग्री को लोगों तक पहुंचाने में सहयोग करें।

**डॉ. हर्षवर्धन पन्त**

सहायक प्राध्यापक  
रसायन विज्ञान विभाग

## *Dalip Kaur Tiwana: A Prolific Writer of Punjab*

Dalip Kaur Tiwana, winner of Sahitya Akademi Award was born on 4th May in 1935 in a small village of Rabbon in Ludhiana district of Punjab in a wealthy traditional family of prosperous zamindars. One of the leading Punjabi novelists of contemporary times, Tiwana truthfully delineates the culture of Punjab and its people in her works such as *And Such Is Her Fate*, *Gone are the Rivers*, *Who am I*, *Twilight*, *Mark of the Nose-Ring*, *A Journey on Bare Feet*, *The Tale of the Phoenix*. Her novels are deeply rooted in the socio-cultural ethos of the Punjab, more specifically in the erstwhile princely state of Patiala. They vividly reflect the society of post-independence Punjab: its system of patriarchy and the position of women therein, the caste hierarchies, class divisions, the dynamics of land operating among poor peasantry wherein the site of victimization is a woman, as is borne out by her well known novel *And Such Is Her Fate*. Tiwana projects a very fine understanding of the social contrasts which engulf a woman, her loneliness and anguish, her sexuality and a woman's point of view about the institution of marriage.

Tiwana is a sensitive and prolific writer who has given a new approach and perspective for the study of social reality of crucial issues concerning women. Her purpose is to set out the extent to which a society has established the discriminating order of caste, class and gender. She analyzes the issues of class, caste and gender which, when viewed together, offer a comprehensive précis of the feminist work undertaken to date to explain men's violence against women in a society. Her feminist framework offers a wide ranging review of feminist understandings of violence against women. She posits that women who are toiling masses are leading their life as beasts of burden

and as victims of dominant caste onslaught. It is but natural that they are mute.

Though entire Punjab is reflected in Tiwana's novels, nevertheless she specifically focuses on the areas of the Malwa and Majha that lie around and below the Sutlej. She writes about the people there, their fates and their fortunes in their own Punjabi Malwa dialect. She has captured their spirit through a woman's sensibility which gives a different dimension and colouring to her writings.

Alongside portraying the social reality, Tiwana's novels also reveal the variegated cultural mores and beliefs, value systems of Indian society, sometimes juxtaposing them with the culture of the West. From the poor low caste peasantry of rural Punjab to the royalty of the state of Punjab, she delineates the cultural milieu of these vastly different set ups with equal felicity, depicting their festivals and marriage ceremonies, food habits and dresses, their way of life, their rituals and superstitions.

Significantly, what imparts Tiwana's writings an abiding value is that apart from presenting a very authentic and sensitive picture of the state of post independence Punjab, they engage in contemplation of fundamental human questions, the question of self identity and the concept of transcendence. Many of Tiwana's characters grapple with the eternal question of their search for self. In this spiritual journey they try to seek answers from the Vedas, the Upanishads, the Ramayana, the Mahabharata, the precepts of Lord Buddha, Guru Nanak and Sant Kabir.

**Amandeep Kaur**  
Research Scholar  
Department of English



## *An Ode To My Sister*

You're the key to my conflicting emotions  
 A reliable answer to my abstract apprehensions  
 You're the beginning and my final destination  
 I'm the river, you're my fountain  
 Together we mingle into the ocean of love  
 You're the smile I wear amidst life's atrocities  
 The tears that through my eyes flow incessantly  
 You're my sunshine in the dreary winter gloom  
 A cool breeze on a scorching summer noon  
 Your presence I feel in the morning dewdrops  
 Your absence in the passing chill of the night  
 I'm the earth you're my sky  
 Without the other remain incomplete  
 You're my North Star when I lose my way  
 My Rock of Gibraltar when the whole world falls astray  
 To have you by my side I suddenly feel rich  
 To possess the most prized possession  
 You, my sister, my closest companion  
 Now and forever.

**Dr. Jyoti Pandey**  
 Assistant Professor  
 Department of English

## *If I Could*

If I could save time in a bottle...  
 I would rather not  
 I would like it to flow by its pace  
 I would like me to grow on its face  
 I would like to make my own memory clock  
 The minute hand as the trouble slot  
 Second hand will be the happy wind  
 &  
 The hour hand be my lessons kit.

**Priyanka Tariyal**  
 M.A. (English), IV Semester

## *“Valkoinen Kuolema” The White Death*

In the winter of 1939, the USSR invaded Finland twice. People of Finland were plundered, tortured and brutally murdered.

In the middle of the war, there emerged a hero, Simo Hayha, a native of Finland, born in 1906, raised up on a farm in the town of Rautjarvi near the border of Soviet Union.

As the winter war began, Simo Hayha was called upon to go to war and he knew that he would be fighting for a good cause-to try to stop the Russians from taking his farm, homeland and country.

Dressed in a white snow camouflage suit, Hayha would disappear into the snowy surrounding. Just before Christmas on December 21st, Hayha made a personal record by killing 25 enemies in one day. By Christmas eve of 1939, Hayha had confirmed 138 killings.

On several occasions, the Russians sent their own snipers to take him out, but Simo managed to win those duels every time.

By the end of the war, Hayha was known and feared 'the white death'- nickname given by the Russians soldiers.

Till this day Simo Hayha is considered as one of the deadliest snipers of the world-having about 705 (unconfirmed killings) and 542 (confirmed killings).

**Nupur Joshi**  
 B.Sc. (CBZ), I Semester

# ***Bhuvan- ISRO's Geoportal***

## **Introduction**

Bhuvan, the name is derived from the Sanskrit word which means 'Earth', a Geoportal of ISRO and Gateway to Earth Observation Data Products and Services. It is an initiative of Indian Space Research Organisation, Department of Space, Government of India, to evince the Indian Earth Observation capabilities from the Indian Remote Sensing (IRS) series of satellites. The images showcased on Bhuvan are from Multi-sensor, Multi-platform and Multi-temporal domains. It has capabilities to overlay thematic information, derived from such imagery on virtual world for the benefit of users.

## **Components of Bhuvan**

Initial version of Bhuvan was launched on 12 August, 2009. Since its launch, it has been taking many steps forward to reach users with wide range of services and applications. In this time frame, two more versions and several minor versions were released with several advanced features and now it's moving towards its fourth release. Bhuvan 3D, Bhuvan 2D, Pocket Bhuvan (Mobile Version of Bhuvan), Bhuvan Thematic Services, Bhuvan Geoprocessing Services, Bhuvan Projects, Bhuvan Online Discussion Forum etc. are various components of Bhuvan Geoportal.

## **Significance of Bhuvan**

Bhuvan provides a gateway to explore and discover the virtual Earth in 2-Dimensional 3-Dimensional land space with tremendous possibilities for adding value at the user end. Now it is available in 3 Indian languages i.e. Hindi, Telugu and Tamil. It is planned to make it available in other Indian languages too in the near future.

Bhuvan allows scientists, academicians, policy makers or general public to use this integration of vast amounts of geospatial data. The unique features of Bhuvan are: availability of uniform high resolution data at 6m for the entire Indian Territory, 2.5 m for 10 states and being updated

for other states. Rich Thematic Information (soil, land use and land cover, wasteland, water resources etc), visualisation of ISRO Automatic Weather Stations data or information in a graphic view and use tabular weather data of user choice, Ocean Services to increase the catch per unit effort of the fishermen community from INCOIS, Disaster Services, Urban Design Tools to build roads, junctions and traffic lights in an urban setting, Terrain Profile displays the terrain elevation profile along a path, Mobile Compatibility supports Android and Windows Operating Systems, Online Geoprocessing Custom query-shell, Multi Lingual and Data Download are few fields of study which depict the story of success and support of Bhuvan Geoportal.

Since its advent, Bhuvan is being referred in several forums, journals, and blogs for its usage. Few of the areas where Bhuvan is used are: APNIC showcasing school information using Bhuvan Sarva Siksha Abhiyan, Clean Ganga, India Geoportal towards National Spatial Data Infrastructure, INFFRAS Dissemination and Visualization of Forest Fire alerts, Pradhanmantri Awas Yojana (RAY)- Technology demonstrated to NGO (SPARC, Mumbai), on how to use Bhuvan for delineating the Slum Boundaries and visualizing them on Bhuvan, Amritsar Tourism Web GIS for Amritsar Tourism Development Board, Gateway to Karnataka Forest Observation. Researchers are using Bhuvan data for various scientific studies like landslide study in CURRENT SCIENCE, VOL.98, NO. 7,10 April 2010, Usage of Bhuvan in Educational book covering Himalaya (glaciers and mountains) and Ganga river, the students/researchers/users for various engineering applications, natural resources mapping and management has recorded tremendous downloads in last 8 years.

**Dr. Geeta Rawat**

Assistant Professor

Department of Geography

## जिन्दगी

कभी तानों में कटेगी,  
कभी तारीफों में,  
ये जिन्दगी है  
पल-पल घटेगी।

ले जाने को कुछ नहीं,  
फिर क्यों चिन्ता करते हो,  
इससे सिर्फ खूबसूरती घटेगी,  
ये जिन्दगी है  
पल-पल घटेगी।

बार-बार रफू करते रहते हैं,  
जिन्दगी की जेब।  
कम्बख्त फिर भी  
निकल जाते हैं,  
खुशियों के कुछ लम्हे।

जिन्दगी में सारा झगड़ा ही  
ख्वाहिशों का है।  
ना तो किसी को गम चाहिए,  
ना ही किसी को कम चाहिए।

उड़ जायेंगे एक दिन,  
तस्वीर से रंगों की तरह।  
हम वक्त की टहनी पर,  
बैठे हैं परिन्दों की तरह।

बोली बता देती हैं  
इंसान कैसा है।  
बहस बता देती है,  
ज्ञान कैसा है।

घमण्ड बता देता है,  
कितना पैसा है।  
संस्कार बता देते हैं,  
परिवार कैसा है।

ना राज है जिन्दगी,  
ना नाराज है जिन्दगी  
बस जो है, वो आज हैं जिन्दगी।

डॉ० दीपाली सिंघल  
रसायन विज्ञान विभाग

## At Times I Wonder

At times I wonder why stars gloom  
At times I wonder why the flowers bloom  
At times I wonder how fast moments pass by  
Just like blink of an eye

At times I wonder why dreams are shattered  
It's because one is often easily flattered  
At times I wonder life is a coin  
With its two sides difficult to join

Some people are joyous, while others repel  
As they have no reason to dwell and their life  
has no motion  
As their minds are full of pre conceived notion  
At times I wonder why people change  
And for others they remain strange

At times I wonder life is an ocean with some  
parts unexplored  
Just like people who are deployed  
With a lot of effort  
Some people climb the ladder to success

While others find no joy in the magnificent  
things possess

As all they that matters is their thought process  
Some people live a life that is dark  
While others struggle throughout their life to  
leave their golden mark

Some people live a life full of chaos  
While others remain happy with their imperfect  
flaws  
Some people spend their whole life to make it  
fairer  
While others with their remarkable contribution  
become torch bearers

Everyone is fighting his/her own battle  
Winners are those who really struggle  
Some people get afraid with the very thought  
of death  
While others fight till their last breath.

**Nidhi Lakhera**  
B.A., VI Semester

## सैनिक

इस कविता की भूमिका बस इतनी सी है कि एक सैनिक अपने शहीद मित्र के घर उसके पार्थिव शरीर को लेकर जाता है क्या दृश्य वह देखता है, उसका वर्णन है—

माँ की आँखों की बाढ़ न थमती,  
कैसे ढाढस दिलाऊँ मैं,  
तेरे शरीर को छूने न देती,  
कैसे तुझे ले जाऊँ मैं।

पिता तेरे फूट पड़े हैं,  
छाती पीटकर रोते हैं,  
बेटे के बलिदान का बदला,  
चीख-चीखकर कहते हैं।

पत्नी तेरी वीरांगना है,  
हिम्मत बांधे डटी हुई है,  
कि राम की प्रतीक्षा में,  
शिला बनी खड़ी हुई है।

बेटा तेरा बहुत बहादुर,  
आँखों में ज्वाला लिए चल रहा है,  
मैं भी फौज में आऊँगा अंकल  
आकर मुझसे कहता है।

ऐ साथी तुम मरे नहीं हो, अमर हो गए इतिहासों में, बलिदान  
नहीं जाने देंगे हम तुम्हारा कौड़ी में।

वो अपने शहीद मित्र को कहता है कि तुम्हारी शहादत व्यर्थ नहीं  
जाएगी—

बहुत हुई शांति प्रियता,  
अब ज्वाला बिखरानी है,  
सौ नहीं दो सौ नहीं,  
ये गिनती लाखों तक पहुँचानी है,  
एक-एक आंतकी ढेर कर, आतंकवाद मिटाना है  
42 शहीद जवानों का हिसाब अभी चुकाना है।

एक-एक कतरे की कीमत,  
सूत समेत वसूलेंगे,  
अब मिली है पूरी छूट,  
तुमको नहीं अब छोड़ेंगे,  
देखोगे अब रौद्र रूप तुम, त्रिनेत्र हमारा जगाया है,  
इस तांडव से अब बचना तुम्हें नहीं गवारा है।

माना इस देश को राजनेता चलाते हैं, अधिकारी चलाते हैं किन्तु  
इन वीर सपूतों के बदौलत ही आज हमारा हिन्दुस्तान जिंदा है।  
सत्ता को माना वह चलाते,  
कलम में माना ताकत है,  
किन्तु वीर सपूतों की,  
अपनी अलग परिभाषा है,  
जब सब नत्मस्तक रहते हैं, शीश उठाकर चलते हैं,  
पड़ोसी देश में भी ये प्यारे जयघोष भारत का करते हैं,  
जयघोष भारत का करते हैं।

शिवांगनी

बी.एस.सी- द्वितीय सेमेस्टर (पी.सी.एम.)

## These Walls

These walls you find intriguing  
The colors you are so drawn to...  
Once you come to realisation...  
Chills you feel right in your heart are  
penetrating your head so hard  
The dried desert in those hazel eyes  
The voice box dancing to mute words

Trying & trying to dissect the plethora of  
those paints and shades on extreme ends of  
the spectrum  
Band by band before losing their virginity  
Screaming the words so slowly  
These are the walls you find intriguing...

**Priyanka Tariyal**

M.A. (English), IV Semester

## Atal Bihari Vajpayee

Atal Bihari Vajpayee (25 December, 1924 - 16 August, 2018) was an Indian politician who served three terms as the Prime Minister of India. First term of 13 days in 1996, second term for a period of 13 months from 1998 to 1999, and finally, for a full term from 1999 to 2004. One of the founding members of the Bharatiya Janata Party (BJP) he was the first Indian Prime Minister who was not a member of the Indian National Congress party but served a full five-year term in office.

### Early Life And Education

Vajpayee was born to Krishna Devi and Krishna Bihari Vajpayee on 25 December, 1924 in Gwalior. His grandfather, Pandit Shyam Lal Vajpayee, migrated to Morena, Gwalior from his ancestral village of Bateshwar, Uttar Pradesh. His father, Krishna Bihari Vajpayee was a school teacher in his hometown.

Vajpayee did his schooling at the Saraswati Shishu Mandir in Gwalior. In 1934, Atal Bihari was admitted to AVM School Barnagar Distt Ujjain after his father joined as headmaster. He spoke about his 'life changing moment' at a public rally in 1996 Lok Sabha election trail. He attended Gwalior's Victoria College (now Laxmi Bai College) and graduated with distinction in Hindi, English and Sanskrit. He completed his post graduation in Political Science from DAV College, Kanpur.

His activism started with Arya Kumar Sabha of Gwalior, the youth wing of the Arya Samaj, of which he became the general secretary in 1944. He also joined the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) as a Swayamsevak or volunteer, in 1939. Influenced by Babasaheb Apte, he attended the Officers Training Camp of the RSS during 1940-44 and became a pracharak, (RSS terminology for a full-time worker) in 1947.

### Works

Vajpayee authored several works of both prose and poetry. Some of his major publications are listed below. In addition to these, a vast collection is composed of his speeches, articles and slogans.

#### Prose

- *National Integration* (1961)
- *New Dimensions of India's Foreign Policy* (1979)
- *Gathbandhan Ki Rajneeti* (2009)
- *Kucha Lekha, Kucha Bhashana* (1996)
- *Bindu-Bindu Vicara* (1997)
- *Decisive Days* (1999)
- *Sankalp - Kaal* (1999)
- *Vicara - Bindu (Hindi Edition, 2000)*

#### Poetry

- Kaidi Kaviraj ki kundaliyan
- *Amar Aag Hai* (1994)
- *Meri ekyavan kavitayen* (1995). Some of these poems were set to music by Jagjit Singh for his album 'Samvedna'.
- *Chuni Hui Kavitayein* (2012)

An English translation of a selection of some of Vajpayee's Hindi poetry was published in 2013.

#### Awards

1992 - Padma Vibhushan

1994 - Lokmanya Tilak Award

1994 - Outstanding Parliamentarian Award

1994 - Pandit Govind Ballabh Pant Award

2015 - Bharat Ratna

2015, Bangladesh Liberation War Honour (Bangladesh Muktijuddho Sommanona)

During his tenure as Prime Minister, India carried out the Pokhran-II nuclear tests in 1998. Vajpayee sought to improve diplomatic relations with Pakistan travelling to Lahore by



bus to meet with PM Nawaz Sharif. After 1999, Kargil War with Pakistan, he sought to restore relations through engaging with President Pervez Musharraf, inviting him to India for a summit at Agra. After a long and illustrious political journey, Vajpayee retired by hectic public life due to health problems. He breathed his last on 16 August, 2018. When the NDA

Government led by Narendra Modi came to power in May 2014, it declared that Vajpayee's birthday, 25 December, would be marked as 'Good Governance Day'.

**Megha Panwar**

B.Sc., I Semester

## *Self Defence*

Even after the change in POSCO Act, the number of rape cases with children are increasing at an alarming rate. The culprits have become so emotionless that they do not even think about the victim's age. Even the death punishment wouldn't stop such incidents.

Have we ever thought about the reason of increasing number of such cases? No, we haven't. The fact is that we only criticize the government, local authorities and destroy public property in the name of campaigns after such incidents.

No matter how developed we are, talking about sex education is a taboo in the eyes of society. Lack of sex education at school level or at family level is the foremost reason for such crime because it makes teenagers curious about the changes taking place in their bodies and leading them towards such crimes.

Delay in decision making process of the court is also one of the most important reasons. Even the high profile Nirbhaya's case took more than two years for final verdict.

The biggest irony is that rape is a matter of

shame for the families of victim in India and therefore they choose to stay quiet and make compromises rather than seeking help from the judicial system. In many cases this leads the culprit who is in one sided love with a girl to get married.

Girls in India still do not even know the techniques of self-defence. Until a girl knows to defend herself, these incidents wouldn't stop. That's why self defence classes can help in decreasing such cases. Not only self defence classes but also moral values classes should be made compulsory at school and college level. In recent years, it has been observed that in 30% of the cases, the culprits are not even 18 years old. The culprits are not only the boys but also their families and their teachers who are not able to teach them that girls are not the objects of amusement. They too are human beings. Their feelings needs to be respected.

Hence, in the prevailing environment, the girls needs to be given compulsory training in self defence.

**Aditi Sharma**

B.Sc., I Semester

## *Some People Are Like*

Some people are like sunrise  
Some people are like sunset  
Few are the ones whom we remember  
The rest we forget.

Some people are like storms  
Some people are like breeze  
Some are the blooming flowers  
The rest are merely weeds.

Some people bring in the rain  
Others bring light  
Some people become our reason to cry  
While other makes our life bright.

Some people are the prickly thorns  
Some are like a soft rose  
While others are merely clouds  
Who disappear as the wind blows.

Some people want to tie us down  
Through invisible strings  
While the rest the ones  
Who nurture our wings.

**Saumya Lakhera**

M.A. (English), II Semester

## *My India*

Gujarat for mills  
Nagaland for hills  
Andhra Pradesh for ships  
Sikkim for trips  
Rajasthan for sand  
Madhya Pradesh for land  
Assam for tea  
U.P. for ghee  
Kerala for dance  
Goa for romance  
Kashmir for looking  
Tamilnadu for cooking  
Delhi for earning  
Maharashtra for learning  
Bihar for mines  
Uttarakhand for shrines  
This is my famous India  
I love my India.

**Afreen Ansari**

B.Sc. (CBZ), I Semester

## *Living With Hope*

Neither too far have the good days gone  
Nor have totally disappeared the  
impressions of beautiful memories  
Neither has life yet taken away the second  
chance  
Nor have the shining rays of sun  
disappeared their glance  
Neither has the right time arrived yet after  
the sunset  
Nor have the difficulties of life departed with  
their fits

But there still is hope to cope up with time  
There will be days when heart will sing  
melodious rhyme  
Once again back will be the days when life  
will run smoothly like melting butter  
And there will be no obstacles of locked  
doors and closed shutters.

**Pratima Patel**

B.Sc. (CBZ), I Semester

# ***Justification of CBCS in Higher Education***

## **(1st Prize winner in HNB Garhwal University Intercollegiate Debate Competition [In Favour] 2018-19)**

*"Sometimes I do wonder if education lost its voice. Did it happen by accident or did we give it a choice?"*

*"Too often we choose to follow the traditional way in order to find an answer, but do remember this plague is an epidemic don't let it spread like cancer don't let it spread like cancer..."*

In 2015-2016 University Grant Commission under Government of India made CBCS mandatory for 400 public universities at both undergraduate and post graduate level.

The introduction of CBCS in High School can be justified on three grounds- 1st its advantages. 2nd its comparison with the traditional ways and 3rd- its direct benefit to the nation and so with the due permission of the chair I begin with unfolding 1st aspect of it.

The Credit Based choice system is not just a term but a major shift from teacher centric education system to the learner centric education system, it aspires India to meet international standards in the world.

Besides it also serves a lot of purposes, 'flexibility' is also one of them. The CBCS provides comfort for slow learners as much as it does for fast learners. Yet another my next point and the most important one... Shockingly one child (student) suicides in every one hour in

India. The report by none other than *Times of India*. In this context the application of CBCS which offers semester system assumes special significance.

The second aspect of this issue i.e. comparison with the traditional ways. The traditional coherent system does not cater to the expectations of all stakeholders of management education. While it tries to bring about parity in output, the rigid system fails on many counts at the input level, which again proves the necessity of changing the traditional system with the CBCS one. Third aspect is the direct benefit to the people of India.

The time has come that we collectively acknowledge the fact that education is the most demanding of all and needs 'innovation' and so instead of criticizing the new system we should promote it and give reverence to the system that has evolved to change the visiting times.

Now we have to acknowledge the fact that "why aren't my needs obvious? And why aren't they being met? Says a high school student at a beast that cannot be quenched.

Moving on to the traditional path to meet today's needs is difficult, hard to meet.

**Sakshi Badoni**

B.A., II Semester

*"It is as impossible to withhold education from the receptive mind as it is impossible to force it upon the unreasoning."*

-Agnes Repplier

# CBCS का विरोध

## (प्रथम पुरस्कार विजेता एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय में आयोजित अर्तमहाविद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिता (प्रतिपक्ष में) 2018-19)

वह देश भारत, जहाँ विश्व का सर्वप्रथम महाविद्यालय नालंदा रहा हो, जिस देश की उच्च शिक्षा में मिसाल दी जाती थी, आज वो देश अपने गौरवान्वित इतिहास को भूलकर पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की ओर अग्रसर है और उसी पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली में से एक है विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) जिसमें छात्रों के पास निर्धारित पाठ्यक्रमों का चयन करने का विकल्प होता है और जिसे वह अपने हिसाब से सीख सकते हैं।

किन्तु कहते हैं न 'आधा तीतर, आधा बटेर'। मध्यप्रदेश के विश्वविद्यालयों में लागू CBCS प्रणाली का कुछ यही हाल है। बिना पूरी तैयारी और शिक्षा ढाँचे में मूलभूत बदलाव के IIT की तर्ज पर लागू CBCS प्रणाली आज बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है।

सेमेस्टर प्रणाली भी CBCS पर ही आधारित है जिसमें शिक्षा सत्र को, 6-6 महीने के दो सत्रों में बांट दिया गया किन्तु इस प्रणाली की रीढ़ यानी सतत् आंतरिक मूल्यांकन प्रणाली को पुरानी मानसिकता के कारण ढंग से लागू ही नहीं किया गया। उस पर गजब यह कि एक विषय के दो या तीन प्रश्न पत्र की पुरानी व्यवस्था को खत्म कर हर विषय के लिए केवल एक ही प्रश्न पत्र की व्यवस्था कर दी गई। दो या तीन प्रश्न पत्र की एक साथ पढ़ाई कर एक ही पर्चे में उसे पूर्ण करना छात्रों के बस के बाहर हो गया है तो यहाँ प्रश्न यह उठता है कि CBCS ने छात्रों पर बोझ घटाया है या बढ़ाया है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने 2018 में प्रदेश सरकार को CBCS प्रणाली लागू करने के निर्देश इसलिए दिए थे ताकि पढ़ाई के लिए माहौल बन सके। इस प्रणाली के लागू होने का उद्देश्य यह था कि इसमें छात्रों पर बोझ नहीं पड़ेगा व उनमें सीखने की प्रवृत्ति बढ़ेगी किन्तु अफसोस आज स्थिति इससे बिल्कुल विपरीत है। यह प्रणाली आंतरिक मूल्यांकन के अपने मूल उद्देश्य से ही भटक गई है।

CBCS की सबसे पहली विशेषता यह बताई गई थी कि इसमें Cafeteria दृष्टिकोण अपनाया जाएगा, जिसमें छात्र-छात्राओं को अपने पसंद के विषय पढ़ने का अवसर मिलेगा किन्तु इस सुविधा से इस विश्वविद्यालय को नदारद रखा गया।

जहाँ CBCS बात करता है कौशल विकास की परन्तु जो वार्षिक प्रणाली में विषय की तीसरी किताब हुआ करती थी उसी को कौशल का नाम देकर छात्रों पर थोप देना क्या कौशल विकास है? आज भी हम देखते हैं कि महाविद्यालयों में परिक्षाएं समय पर नहीं होती, परिणाम समय पर नहीं आते, प्रयोगशालाओं की हालात बद से बदतर होती जा रही हैं। UGC द्वारा दी गई रिपोर्ट से पता चलता है कि आज भी देश के 49 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में लगभग 60 हजार अध्यापकों के पद खाली हैं।

जहाँ UGC कहती है कि एक अध्यापक पर 20 छात्र होने चाहिए वही हकीकत एक अध्यापक पर 100 छात्र है तो हमारी शिक्षा प्रणाली की नींव ही कमजोर है और ऐसी स्थिति में भी शिक्षा प्रणाली के साथ आविष्कार हो रहे हैं तो मैं कहना चाहूँगी कि आविष्कार तब करना चाहिए जब आपकी नींव मजबूत हो।

CBCS प्रणाली में हिन्दी भाषा के अनिवार्य करने से पूर्व उत्तर से आने वाले छात्रों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। CBCS प्रणाली जो Grading पर आधारिक है जिसे CBSE स्कूली स्तर पर नकार चुका है, तो उच्चतम स्तर पर CBCS प्रणाली का क्या औचित्य है।

जब CBCS प्रणाली लागू हुई थी तो सीधा केन्द्र से एक आदेश आ गया था और विश्वविद्यालयों को तैयारी करने का कोई समय नहीं दिया गया जिस कारण अव्यवस्था निरन्तर बनी हुई है।

CBCS का विरोध करते हुए DUTA की अध्यक्ष नंदिता नैरेन कहती हैं कि CBCS मुख्य रूप से गैर-सरकारी विश्वविद्यालयों के लिए लाभकारी है ना कि दिल्ली विश्वविद्यालयों जैसे संस्थानों के लिए जहाँ एक बड़ी व भिन्न आबादी है।

हम यूँ अंधाधुंध अमेरिका का पदगमन नहीं कर सकते क्योंकि हम उनके जितने आर्थिक सक्षम नहीं हैं। तो सरकार को विद्यार्थियों के साथ अपने इन आविष्कारों को रोकना चाहिए और सटीक विकासीय कदम शिक्षा के क्षेत्र में उठाने चाहिए।

शिवांगनी शर्मा

बी.एससी.- द्वितीय सेमेस्टर (पी.सी.एम)



## Commercial Banks

Commercial banks are the most important source of institutional credit in India. Banking in India originated in the last decade of the 19th century. The oldest banks were the Bank of Bengal, the Bank of Bombay and the Bank of Madras. These were private shareholders banks and the shareholders were mostly European. Later on, these three banks were amalgamated into Imperial Bank of India in 1921, which was subsequently nationalized into the State Bank of India (SBI) in 1955. Allahabad Bank and the Punjab National Bank were established in 1885 and 1895 respectively.

Commercial banks in India were entirely private banks before Independence. The banking sector underwent a major structural transformation after 1969, when 14 major commercial banks were nationalized in July 1969, and six more in April 1980. At present, Indian Commercial Banks (89 Scheduled Commercial Banks) can be classified into three broad categories.

**1) Public Sector Banks-** These are owned by government or some agency of government. There are 26 Public Sector

Banks consisting of SBI and its five subsidiaries and 20 nationalized banks like (Allahabad Bank, Bank of Baroda, Oriental Bank of Commerce etc). Public sector banks sponsor Rural Regional Banks (RRB) whose main objective is to give credits at lower interest rates to weaker sections; hence are regarded as common man's banks.

**2) Private Banks-** They are in the hands of private bankers. The Major Private Banks are ICICI Bank, HDFC Bank, Axis Bank. They are also known as new-generation tech savvy banks.

**3) Foreign Banks-** They are wholly owned subsidiaries incorporated in foreign countries. Major foreign banks operating in India are ABN-AMRO Bank, American Express Bank Ltd. Citibank, Standard Chartered Bank etc. They are making Indian banking system more competitive and efficient.

**Nupur Joshi**

B.Sc. (CBZ), I Semester

## What is Birthday?

A question asked by BBC World to many VIPs around the globe. The best answer given by Dr. Abdul Kalam....

*"The only one day in life, when your mother smiled when you cried.... Otherwise whenever you cry your mother also cries...."*

**Afreen Ansari**

B.Sc. (CBZ), I Semester

## Simple Math

"2" 'get' and "2" 'give'  
Creates many problem

So

Just double it

"4" 'get' and "4" 'give' solves  
many problems.

**Afreen Ansari**

B.Sc. (CBZ), I Semester

## Mental Health

Mental health is a level of psychological well being or an absence of mental illness. It is the psychological state of someone who is functioning at a satisfactory level of emotional and behavioural adjustment.

According to the World Health Organization (WHO), mental health includes subjective well-being in which the individual realizes his or her own abilities, can cope with the normal stress of life, can work productively and fruitfully and is able to make a contribution to his or her community.

Persons struggling with their mental health may experience stress, loneliness, depression, anxiety, relationship problems, suicidal thoughts, addiction, self-harm, self-injury, various mood disorders, or other mental illnesses of varying degrees as well as learning disabilities.

Following are the precautions to cure mental health:-

**Physical Activity-** It is a very good way to improve your mental health as well as your physical health. Playing sports, walking, cycling or doing any form of physical activity can trigger the production of endorphins which is a natural mood enhancer.

**Meditation-** The practice of mindfulness meditation has several benefits, such as bringing about reduction in depression, anxiety and stress.

**Expressive Therapies-** Expressive therapies are a form of psychotherapy that include music - therapy, art - therapy, dance- therapy and poetry - therapy. It has been proven that Music therapy is an effective way of helping people who suffer from mental health disorders.

**Pinki Deorari**  
B.Sc. (CBZ), V Semester

## I Want to....

Keeping you safe forever  
Is what I want to do  
Be your armour  
To defend you

Making you laugh until you cry  
Is what I want to do  
Be the sun in a cloudless sky  
Every day anew

Always holding you tight  
Is what I want to do  
Be your shelter day and night  
No matter what

Painting many things for you  
To hang them on the refrigerator  
Like my first painting still on it

Be kind like you to the animals  
Seeing you feeding a stray cat  
Want to talk to, and believe in God  
Seeing you pray everyday

Be caring and loving like you  
And wanted to do everything  
That I could do

Want to thank for each  
And everything you  
Sacrificed for me, Ma-Pa and a  
Tight hug is what I want to do.

**Akanksha Chaudhari**  
B.Sc. (CBZ), I Semester

# भारतीय शिक्षा प्रणाली

क्या आप एक मध्यम वर्ग के परिवार से हैं ?

क्या आपके घर वाले भी कहते थे आज पढ़ लो कल खुश रहोगे ?

क्या आप 6 घंटे क्लास में और 6 घंटे उन्हीं अध्यापकों के यहाँ ट्यूशन पढ़े हो।

तो उपरोक्त सभी कार्यों का श्रेय भारतीय शिक्षा प्रणाली को जाता है।

संभवतः भारतीय शिक्षा की विकृति तब बिगड़ी जब अंग्रेज भारत आये और भारत पर अपना पूर्णतः अधिपत्य कर लिया। जब ब्रिटिश ने भारत की शिक्षा प्रणाली को देखा तो उन्होंने अपने पिता को पत्र लिखते हुए कहा कि यदि हम भारतीयों को आंग्ल (अंग्रेजी) भाषा पढ़ायेंगे तो ये अपनी संस्कृति भूल जाएंगे और उनके द्वारा दी गई ये श्राप आज भी उस आधार पर उसी दर से पढ़ाया जा रहा है।

संभवतः आप सोच रहें होंगे ब्रिटिश के आने से पहले भारत में शिक्षा नहीं थी तो आप गलत है। आर्यभट्ट यहाँ हुए, चाणक्य यहाँ पैदा हुए, सुश्रुत ऋषि यहाँ हुए, महर्षि कणाद और ऐसे ना जाने कितने। विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय नालन्दा विश्वविद्यालय हमारे यहाँ था। जब अंग्रेजों को गणित का ग भी नहीं आता था तब हम वैदिक गणित का अध्ययन करते थे।

## भारतीय शिक्षा प्रणाली = रट्टा मार प्रतियोगिता

भारतीय शिक्षा प्रणाली प्रथम तो आपकी जिज्ञासा को मारता है मतलब यह कि यदि दूसरी कक्षा का बच्चा पूछ ले कि चिड़िया कैसे उड़ती है, तो डाँट कर बैठा दिया जाता है। दूसरा अंक आपके इज्जत को व्यक्त करता है। अर्थात् (Marks अंक = इज्जत)

जातिप्रथा संभवतः हमारे शिक्षा प्रणाली में भी आ गयी है। क्योंकि अगर लड़का है तो इंजीनियर बना दो, लड़की है तो चिकित्सक। हम लोग रोज घिसा-घिसा के 12 घंटे पढ़ाई करते हैं और अन्य वस्तुओं के नाम पर शून्य अर्थात् कला, संगीत, तर्क-वितर्क, लेखन सब समय खराब है अर्थात् जो भी वस्तु आपके जीवन को निखारे वो खराब है। मुझे यदि आई.एस.आर.ओ. के बारे में पूछे तो मैं खट से बता दूँ पर वही बात 20 लोगों के सामने बोलने को कहा जाए तो गला रूँध जाए पैर कांपने लगे वगैरह-वगैरह, चूँकि ये घटना मेरे साथ हुई है। भारतीय शिक्षा प्रणाली समान क्षेत्र उपलब्ध नहीं कराती अर्थात् हमारे देश में बोर्ड ढाँचा समान नहीं है। जिसका परिणाम यह है कि यू.पी. बिहार बोर्ड का गणित मजबूत होता है पर आंग्ल (अंग्रेजी)

नहीं, ऐसे है महाराष्ट्र बोर्ड वालों का व्याकरण (अंग्रेजी का) सही होता है गणित नहीं, ऐसे ना जाने हमारे देश में कितने बोर्ड है।

अर्थात् 12.5 करोड़ बच्चे जूनियर में प्रवेश करते हैं और 10 लाख नौकरी पाते हैं। हमारे देश के 90% विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम पुराना है। हमारे देश के कुल जी.डी.पी. का 2% ही शिक्षा पर खर्च करता है। हमारे देश को अनुसंधान के इच्छुक छात्रों के लिए हमारा देश व विश्वविद्यालयों के पास धनराशि नहीं है हमारे देश की प्रति आर एण्ड डी 30,000 रू है इस मामले में हम साउथ अफ्रीका और केनिया से भी पीछे हैं। हमारे देश में 1 लाख में से 10 छात्र पीएच.डी. कर पाते हैं और उनमें से 10 लाख में से 17 छात्र ही अपना अनुसंधान सनद (Patent) करा पाते हैं। जबकि चाईना करता है प्रतिवर्ष 541 साउथ कोरिया करता है 4500 अर्थात् आजादी के बाद हम विज्ञान में लेस मात्र ही प्रगति कर पाये हैं।

प्रतिवर्ष इस शिक्षा के दबाव से 7000 बच्चे आत्महत्या करते हैं और न जाने कितने ऐसा करने की सोचते हैं। ऐसा नहीं है कि हमारे पास अच्छे संस्थान नहीं हैं, IIT है AIMS है, लेकिन क्या ये काफी हैं, जिस देश में 50% से अधिक युवा हैं? क्या ये काफी हैं कि GDP का केवल 2% ही शिक्षा में लगता है?

निष्कर्ष:- हर बच्चे का अपना हुनर है, अपनी प्रतिभा है। जरूरत यह है कि हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसी हो जो इन्हें पहचाने। मुझे विश्वास है कि मेरा यह लेख आपको पसंद आया होगा कृपया कोई भी त्रुटि हो मुझे क्षमा प्रदान करने की महती कृपा प्रदान करें।

गौतम दुबे

बी.एस.सी., प्रथम वर्ष

**“हो सकता है आप कभी ना जान सकें कि आपके काम का क्या परिणाम हुआ, लेकिन यदि आप कुछ करेंगे नहीं तो कोई परिणाम नहीं होगा।”**

—महात्मा गाँधी

## ***Facts About Japan***

- In Japanese, the name 'Japan' is 'Nippon or Nihon', which means 'Land of the Rising Sun.' It was once believed that Japan was the first country to see the sun rise in East in the morning.
- Japanese live on average four years longer than Americans.
- Japan consists of over 6,800 islands.
- Home to 33 million people, the Tokyo-Yokohama metropolitan area is the largest populated region in the world.
- Japan has more than 3,000 McDonald's restaurants, the largest number in any country outside the U.S.
- There are more elderly (over the age of 65), than children in Japan today.
- Japanese eat more fish than any other people in the world, about 17 million tons

per year.

- Japan is the world's largest importer of sea foods.
- Over two billion manga, Japanese comic books or graphic novels are made in Japan.
- Japan comprises a single race. On the other hand, India consists of many races.
- Japanese work for long hours as compared to other countries. That's why they prefer power nap at work places to get more energy.
- Cherry blossoms (sakura) are Japan's national flower.
- Haiku poetry invented in Japan, consists of only three lines and it is the world's shortest poetic form.

**Mamta Rawat**  
B.Sc., I Semester

## ***Thoughts: That Influence Lifestyle***

- "You cannot change your future, but you can change your habits. And surely your habit will change your future." This thought by Dr. A.P.J. Abdul Kalam teaches us about the importance of changing our habits in our life. If you do what you always have been doing you will get what you always have been getting. The results come out from the efforts you make. If you are doing the same thing everyday and expecting the different result, it is one of the silliest thing you can ever do in your life. To get something different you have to do something different.
- Mistakes are painful, but after some time a collection of mistakes become an experience and this leads to success.
- Winners always compare their achievement with their own goal. While losers compare their achievement with the failures of others.
- Future belongs to those who dream. People who change the world, are those who do something extraordinary. People who make difference in their lives dream a long before about their success then it comes to them. Dream about your goals if you want to achieve them.
- To be beautiful means to be yourself. You don't need to be accepted by others. You need to be yourself. Beauty lies inside us. It is not needed to be accepted by someone else to become beautiful. The meaning of life is inside you.

**Chetna Kalra**  
B.Sc. (CBZ), I Semester



## Why not a Girl?

Being a girl, it often makes me wonder  
 Why not a girl, did anyone ponder?  
 People pray for a boy  
 Not for a girl  
 They want a man  
 Not a woman  
 But -----  
 In need of education  
 They go to goddess Saraswati  
 In need of money  
 They go to goddess Lakshmi  
 In need of courage  
 They go to goddess Durga  
 Then ----- why?  
 Not a girl!  
 Why not a girl  
 Alas! Let them realize  
 Boy and girls are equal in 'Mother's eyes'  
 Then why this discrimination?  
 In the age of modernization  
 Girls have always proved their worth  
 Be it Medical, Engineering, Space or Earth!  
 Oh! God! I pray  
 Let these people wake up and say  
 Girls are no less than the boys  
 In fact they are the best! the best! the best!

**Afreen Ansari**  
 B.Sc., I Semester

## People With Good Hearts

Here's the thing about people with good hearts. They give you excuses when you don't explain yourself. They accept apologies even if you don't give. They see the best in you when you don't need them to. At your worst, they lift you up, even if it means putting their priorities aside. The word 'busy' does not exist in their dictionary. They make time, even when you don't. And you wonder why they're the most sensitive people. You wonder why they're the most caring people. You wonder why they are willing to give so much of themselves with no expectation in return. You wonder why their existence is not so essential to your well-being. It's because they don't make you work hard for the attention they give you. They accept the love they think they've earned and you accepted the love you think you're entitled to. Let me tell you something. Fear the day when a good heart gives up on you. Our skies don't become grey out of no where. Our sunshine does not allow the darkness to take over for no reason. A heart does not turn cold unless it's been treated with coldness for a while.

**Kanishka Thakur**  
 B.Sc., I Semester

*"We are what our thoughts have made us; so take care about what you think. Words are secondary. Thoughts live; they travel far."*

-Swami Vivekanand

## मोबाइल— वरदान या अभिशाप?

आज का युग सूचना का युग है। आज वही व्यक्ति या राष्ट्र जीवित या आगे बढ़ सकता है, जिसके पास संचार की बेहतर व्यवस्था सुविधा है। पिछले कुछ दशकों से हमारे रोजाना जीवन में बहुत तबदीली हुई है। प्रतिदिन नई-नई वस्तुएँ तथा नए-नए उत्पाद सामने आ रहे हैं, जो जीवन शैली को तब्दील कर रहे हैं, इनमें से एक है—मोबाइल। अतः सूचना क्रांति के समय में जो उपकरण सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, वह है मोबाइल।

मोबाइल फोन इस शताब्दी का अभूतपूर्व चमत्कार है। यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बनकर सदा हमारे साथ रहता है और आज विश्व में सर्वाधिक इस्तेमाल किया जाने वाला उपकरण है। यही नहीं, हमारे देश में जितनी आबादी है, यहाँ मोबाइल फोनों की संख्या उससे अधिक हो गई है।

मोबाइल फोन लगातार विकास और उन्नयन के अधीन रहे हैं, क्योंकि उनका आविष्कार पहले किया गया है। मोबाइल आज के समय में मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन है। मोबाइल फोन एक ऐसी वस्तु है, जो आज के समय में सबकी आदत बन गई है, जिसे लोग चाह कर भी छोड़ नहीं पा रहे हैं। मोबाइल के नेटवर्क ने देश दुनिया में काफी तरक्की कर ली है, इसके टॉवर आजकल गांव-गांव में खड़े हैं, जिससे नेटवर्क में कोई परेशानी नहीं आती है। इसके द्वारा हम कभी भी किसी से भी बात कर सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे नौजवान पीढ़ी की जिन्दगी तो मोबाइल फोन के सहारे ही चल रही है। मोबाइल फोन संचार का सबसे बढ़िया तथा कम समय में जल्दी सेवा देने वाला साधन है। कहीं भी बैठे हों, किसी से भी बात की जा सकती है तथा संदेश भी पहुँचाया जा सकता है। यहाँ तक कि आज शादी-विवाह, दुख-सुख या किसी और समारोह के संदेश भी मोबाइल द्वारा ही दिए जाते हैं। इससे समय की बहुत बचत होती है। कभी ऐसा समय था जब किसी को संदेश पहुँचाने के लिए पत्र लिखने का प्रचलन था।

आज मोबाइल के रूप में जो क्रांति आई है, मनुष्य की खोजों का परिणाम है। पहले वह पत्र व तार के माध्यम से संदेश भेजता था, परन्तु मोबाइल का आविष्कार होने से वह कभी भी व कहीं से भी सुविधापूर्वक अपने सगे-सम्बन्धियों से बात कर सकता है। अब तार वाले टेलीफोनों से उसका पीछा छूट गया है। हर समय ऐसे फोनों को अपने साथ रखना संभव नहीं था। आज वह किसी भी स्थान चाहे वह देश हो या विदेश, पहाड़ी इलाका हो या मैदानी हर जगह फोन लेकर जा सकता है। मोबाइल फोन ने आपस की दूरियों को समाप्त कर

दिया है। विज्ञान के कारण आज यह मात्र बात करने का उपकरण नहीं है अपितु इसके अंदर और तकनीकी बदलाव कर इसे इतना आधुनिक बना दिया गया है कि हम इसके माध्यम से विभिन्न अवसरों की फोटो व वीडियो रिकॉर्डिंग कर सकते हैं। जहाँ चाहे वहाँ रेडियो का मजा इस उपकरण के माध्यम से ले सकते हैं। मोबाइल के जरिए हम ई-मेल कर सकते हैं व अपने कार्यालय को इसके माध्यम से सुचारु रूप से चला सकते हैं। मोबाइल की सहायता से कोई विपत्ति आने पर तत्काल सहायता के लिए बुलाया जा सकता है। ये हर कदम पर हमारे लिए बहुपयोगी बन गया है।

पहले किसी बात को जानने के लिए या तो हम टीचर से पूछते थे, या बड़ों या माँ-बाप से। पहले ज्ञान किसी के द्वारा या सिर्फ किताब से मिलता था, पुस्तकालय जाकर किताब से ज्ञान लेना होता था, लेकिन अब बात अलग है, अब किसी भी बात को जानने के लिए क्या बच्चा क्या बड़ा सब तुरन्त गूगल करते हैं। मोबाइल में इंटरनेट के द्वारा हम ज्ञान की बातें यहाँ-वहाँ की न्यूज और भी सब कुछ जान सकते हैं। बच्चे पुस्तक की बजाय मोबाइल खोलते हैं। किसी सब्जेक्ट में परेशानी होने पर बच्चे तुरन्त अपने दोस्त को फोन करके उसका जबाब पता कर लेते हैं, और लाइव चैट के द्वारा आमने-सामने बैठकर पढ़ाई कर लेते हैं।

आज के स्मार्टफोन का प्रयोग करके हम ऑनलाइन बैंकिंग यानी बैंक का काम पैसा भेजना और प्राप्त करना मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से प्राप्त होना प्रारम्भ हो गया है, इसके साथ रेलवे की टिकट बुकिंग, होटल बुकिंग, दवा, भोजन, फास्ट फूड आदि सभी अपने मोबाइल द्वारा घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं। इसके साथ ही सोशल साईट फेसबुक और व्हाट्सएप आदि के आ जाने से हम अपने मित्रों और सगे सम्बन्धियों से जुड़ सकते हैं। इससे आज व्यापारिक गतिविधियों में तेजी आई है। छोटे-छोटे व्यापारी अमेजन, फ्लिपकार्ट आदि ऑनलाइन शॉपिंग साइट से जुड़कर अपने व्यापार को बढ़ा सकते हैं।

मोबाइल फोन में जहाँ जितनी सुविधाएँ हैं, वहीं इन सुविधाओं से कुछ हानियाँ भी हैं। निश्चित रूप से मोबाइल द्वारा पारिवारिक, सामाजिक संपर्क बढ़ा है और इसके माध्यम से लोग अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में अधिक सहज हुए हैं परन्तु मोबाइल से कुछ हानियाँ भी हैं। अनावश्यक बातचीत, घंटों मोबाइल से बातें करते रहने की आदत से एक ओर तो व्यक्ति कीमती समय नष्ट करता है, वहीं कई तरह की शारीरिक समस्या भी पैदा होती हैं

जिसमें सबसे अधिक श्रवण शक्ति का प्रभावित होना, हाथ की मांसपेशियों में तनाव व मस्तिष्क का प्रभावित होना मुख्य है। आजकल देखा जाता है, कि सारा-सारा दिन मोबाइल फोन से ही चिपके रहते हैं, बच्चों को तो इसकी बहुत बुरी आदत लग जाती है, जिससे वे पढ़ाई एवं दूसरी चीजों पर ध्यान नहीं दे पाते।

आजकल देखा जाए तो बच्चे खेलने-कूदने के बजाय लगातार फोन पर लगे रहते हैं, जिस कारण कई मानसिक बीमारियाँ पैदा हो रही हैं। फोन पर लगातार लगे रहने से इससे निकलने वाली खतरनाक किरणें भयानक बीमारियों को जन्म दे रही हैं, इनसे कैंसर जैसी भयानक बीमारी के होने का खतरा रहता है।

इसके अलावा लोग वाहन, जैसे कार, बाइक चलाते समय मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते रहते हैं, जो स्वयं अपनी जान को जोखिम में डाल देते हैं।

मोबाइल से सबसे ज्यादा नुकसान विद्यार्थी वर्ग को होता है, जो अपना समय पढ़ने के बजाय फोन पर गाना सुनने, अनावश्यक बातें करने, व्हाट्सएप और फेसबुक पर चैटिंग करने में अपना वक्त बिताते हैं। इससे उनका पढ़ाई का स्तर गिर रहा है, साथ ही स्मार्टफोन से निकलने वाली किरणें आँखों को भी क्षति पहुँचाती हैं। सेलफोन के दुरुपयोग के कारण विद्यार्थी अपने उज्ज्वल भविष्य से भटककर

पतन की ओर जाने लगा है। उसमें असभ्यता, अशिष्टता एवं असमाजिकता पनपने लगी है। जीवन सुधार की ओर न जाकर गलत पथ पर जा रहा है।

अतः मोबाइल में तकनीकी कोई गड़बड़ी नहीं है, वास्तव में इसने हमारे जीवन को समृद्ध व आसान ही किया है। वह उपयोगकर्ता पर निर्भर करता है कि वह इसका सदुपयोग करता है या फिर दुरुपयोग। यदि उपयोगकर्ता मोबाइल फोन का प्रयोग उचित ढंग से और सृजनात्मक कार्यों के लिए करता है, तो मानव जीवन का विकास और प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा, जो कि मोबाइल फोन के आविष्कारकर्ता की भी इच्छा थी। विज्ञान के यह आविष्कार हमारी सुविधाओं के लिए हुए हैं, पर इनका उपयोग से ज्यादा दुरुपयोग किया जाता है। सही विकास तो वह होता है जिसमें सुख चैन हो। यह हमें कुछ वक्त की खुशी तो देते हैं पर भविष्य में परेशानियाँ खड़ी करते हैं।

अतः हमें मोबाइल का प्रयोग एक सीमा तक ही करना चाहिए, क्योंकि सीमा से ज्यादा कुछ भी सही नहीं होता।

**सिमरन चन्द**

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## *Because We Don't Fear To Fall...*

Call us a slut.....

Call us a whore.....

Never mind.....

We have the curves you adore.....

The curves you fall for every time.....

Yes we all are feminine.....

The one you feel like have a weakened soul....

Not strong enough to be mature....

Little did you know the pain we bear....

Stupid are people who still feel superior....

We have the powers to make the world fall....

Even every mythology speaks it all.....

Even the rulers abide our rules.....

Keep on saying the things you fools.....

Respect a women before calling her a slut.....

You know she can kill you with a single cut.....

We are not born to show powers, that's all.....

We lead a simple life that sums all.....

Proudly a woman, a mother, a sister is a single soul.....

A lady with a class and attitude is all.....

We know we don't care.....

Because we don't fear to fall.....

**Kanishka Thakur**

B.Sc., I Semester

## Interesting Unknown Facts

- Hot water will turn into ice faster than cold water.
- The strongest muscle in the body is the tongue.
- Ant takes rest for around 8 minutes in 12 hour period.
- 'I am' is the shortest complete sentence in the English language.
- Coca-Cola was originally green.
- When the moon is directly overhead, you will weigh slightly less.
- Camels have three eyelids to protect themselves from the blowing desert sand.
- There are two credit cards for every person in the United States.
- Minus 40 degree Celsius is exactly the same as minus 40 degrees Fahrenheit.
- Chocolate can kill dogs, as it contains theobromine which affects their heart and nervous system.
- Women blink nearly twice as much as men.
- You can't kill yourself by holding your breath.
- It is impossible to lick your elbow.
- People say 'Bless you' when you sneeze because when you sneeze, your heart stop for a millisecond.
- Rhythm is the longest English word without a vowel.
- If you sneeze too hard, you can fracture a rib. If you try to suppress a sneeze, you can rupture a blood vessel in your head or neck and die.
- $111,111,111 \times 111,111,111 = 12,345,678,987,654,321$ .
- Honey is the only food that doesn't spoil.
- Snail can sleep for 3 years.
- Elephant is the only animal that can't jump.

**Kalpana**

B.Sc. (CBZ), I Semester

## जीवन क्या है

ये ना सोचो जीवन एक खेल है  
हादसों उमंगों उत्साह का मेल है  
गिरकर उठना, उठकर चलना  
ये जीवन की रीति पुरानी है  
इसी का नाम जिन्दगानी है।

ये न सोचो क्या खोया तुमने  
ये सोचो की क्या पाया है,  
मत देखो अपने जख्मों को  
ये सोचो कि किस पर मरहम लगाया है।

जी.एस. रावत  
सहायक लेखाकर

“कुछ आरम्भ करने के लिए  
आपका महान होना  
आवश्यक नहीं। लेकिन  
महान होने के लिए आपका  
कुछ आरम्भ करना अत्यंत  
आवश्यक है”



## *Honey Bees and Honey*

Honey bees make honey as a way of storing food to eat over the cooler winter period, when they are unable to forage and there are fewer flowers from which to gather food.

Honey is ideal for bees - it is full of nutrients and great energy food because it is high in sugar. When you consider that whilst flying, a honey bee's wings beat about 11,400 times per minute, you can guess they need a great deal of energy!

They beat their wings to regulate the temperature in the hive - even when they are not flying out to forage for food. There is tremendous activity in the hive and it requires energy.

- Why do bees make honey, then store it? Why don't they simply eat it as they go along?

In winter season honey bees do not come out of their hive due to cold weather. For this reason, they collect and store their food to last them through the winter months. Then, comes the spring, the weather will warm up, the flowers will begin to appear and they'll be able to collect food again.

- Which bees make honey? Do all bees make honey?

The honey you are familiar with, is made only by honey bees. Bumblebees don't make honey as such, but in a sense, they make their own version of it. For bumblebees, it's more a case of storing nectar for a short period of time, because bumblebee colonies do not last as long as honey bee colonies do.

Honey bee colonies have to feed a colony of workers plus the queen throughout the winter. With bumblebees, only the queen survives, and the rest of the colony die. There is another type

of bee, referred to as the 'Melipona', which is a genus of stingless bees, and which makes a type of honey in small quantities, but this type of honey is not widely available.

### **Interesting facts about Honey Bees-**

- The honey bee is also known as *Apis mellifera*.
- Only female honey bees can sting, the males (drones) can't sting.
- If the queen honey bee is removed from the hive for 15 minutes, the rest of the colony knows about it.
- A typical honey bee colony may have around 50,000 workers.
- Male honey bees (drones) have no father, but they do have a grandfather.
- The queen honey bee is about twice the length of workers.
- A queen may lay as many as 1000-2000 eggs per day as she establishes her colony.
- They communicate through pheromones passed on through feeding. This is called 'trophallaxis'.
- Drones die after mating.
- The honey bee is the only insect that produces a food eaten by man.
- Honey bee communicates by dancing and when a bee finds a good source of nectar it informs and shows its source to its friends by dancing which positions the flower in relations to the sun and hive this is known as the 'waggle dance.'

**Mamta Rawat**  
B.Sc., I Semester

## समय और ब्रह्मांड

समय, यह क्या है? यह विज्ञान जगत का सबसे बड़ा रहस्य है और हमारे ब्रह्मांड से किस प्रकार जुड़ा है? समय को हम महसूस नहीं कर सकते, इसे हम देख नहीं सकते, पर यह फिर भी हमारे जीवन में अहम भूमिका अदा करता है। पहले लोगों का यह मानना था कि समय और ब्रह्मांड दोनों मुक्त रूप से अलग-अलग हैं। अतः ब्रह्मांड में हुआ किसी भी प्रकार का बदलाव समय को प्रभावित नहीं करता है। न्यूटन के अनुसार समय ब्रह्मांड में हर जगह हर किसी के लिए समान रहता है। अर्थात् यदि मेरे लिए 1 मिनट गुजरा है तो ब्रह्मांड में हर वस्तु के लिए 1 ही मिनट गुजरा है चाहे वो किसी बड़े ग्रह पर हो, चाहे ब्लैक होल के नजदीक हो या फिर किसी बहुत तेज गति से चल रहे यान पर हो।

परन्तु ऐसा नहीं है, समय और ब्रह्मांड अलग-अलग नहीं है बल्कि जुड़े हुए हैं। समय सटीक नहीं बल्कि सापेक्ष होता है। समय सबके लिए एक सा नहीं होता है यह अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग गति करता है। हम अंतरिक्ष और समय को अलग नहीं कर सकते हैं।

समय के गुजरने की गति वस्तु के वेग और गुरुत्वीय क्षेत्र पर निर्भर करती है। यदि मेरा वेग और गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र आपके गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र और वेग से अलग है तो मेरे लिए और आपके लिए समय के गुजरने की गति भिन्न-भिन्न होगी। गुरुत्व और वेग के बढ़ने पर समय के गुजरने की गति धीमी हो जाती है।

उदाहरण— वृहस्पति ग्रह का आकार पृथ्वी से बहुत अधिक है इसलिए उसका गुरुत्वीय क्षेत्र भी पृथ्वी से बहुत अधिक होगा अतः पृथ्वी पर समय वृहस्पति ग्रह के मुकाबले जल्दी बीतेगा। अतः वृहस्पति ग्रह पर यदि कोई व्यक्ति रहेगा तो वह ज्यादा समय तक जीवित रहेगा। इसी प्रकार अगर हम किसी ऐसे यान में बैठे हो जिसमें वेग बहुत ज्यादा है तो भी समय बहुत धीमे बीतेगा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समय और ब्रह्मांड आपस में जुड़े हुए हैं।

हर जड़त्वीय निर्देश तंत्र के लिए प्रकाश की चाल नियत होती है। जैसे-जैसे हम लाइट की चाल के नजदीक पहुँचते हैं समय हमारे लिए धीमा हो जाता है। अगर हमारी चाल प्रकाश की चाल के बराबर हो जाए तो समय हमारे लिए रुक जाएगा।

अंतरिक्ष और समय को समझने के लिए हमें अंतरिक्ष और समय दोनों को अलग-अलग समझना होगा। हमारे हर तरफ जो कुछ भी है सब इसी अंतरिक्ष का हिस्सा है। इस अंतरिक्ष में किसी भी वस्तु को

दर्शाने के लिए हम 3-D ग्राफ का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण— अब अगर समय की बात करें तो इसे परिभाषित करना थोड़ा मुश्किल होगा परन्तु हम ये जानते हैं कि यह हमेशा आगे बढ़ता रहता है। हम इसे चौथी विमा मानते हैं। इस तरह हमें 4 विमीय अंतरिक्ष समय मिलता है। अंतरिक्ष और समय दोनों एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते हैं।

मान लेते हैं कि हमारा एक दोस्त है जिसे हमें मिलना है और हम उसे कहते हैं कि “भाई तू मुझे कॉलेज के मैदान में शाम 4 बजे मिलना”। अगर हम उसे केवल ये कहें कि कॉलेज के मैदान में मिलना या केवल ये कहें कि शाम 4 बजे मिलना तो उसके लिए हमको मिलना कठिन हो जाएगा वह ये नहीं पता लगा पाएगा कि सही से किस समय पर कहाँ मिलना है।

इससे ये पता चलता है कि बिना अंतरिक्ष और समय को जोड़े किये किसी घटना को पूरी तरह से समझना मुश्किल होगा। हमें ये तो पता है कि अंतरिक्ष – समय 4 D होता है लेकिन 4 D ग्राफ की कल्पना करना थोड़ा कठिन है इसलिए हम इसे X-Y ग्राफ के जरिए दिखा सकते हैं।

इसके जरिए हम कह सकते हैं कि अगर कोई चीज अंतरिक्ष में आगे बढ़ रही है तो वो समय में भी आगे बढ़ रही है।

Einstein says “for physicists, the separation between past, present and future is only an illusion.”

अर्थात् वर्तमान, भूत और भविष्य हमेशा रहते हैं समय का गुजरना केवल हमारा भ्रम है।

अब यह सोच पैदा होती है कि यह दुनिया फिर हमें हमेशा चलती हुई ही क्यों नजर आती है। इसे हम वीडियों के द्वारा बता सकते हैं। जब हम कोई वीडियो देखते हैं तो ये चलती हुई नजर आती है जबकि ऐसा नहीं है यह तो उन सब रुकी हुई तस्वीरों का संगम है जो इसका आधार बनाते हैं।

अब सवाल ये उठता है कि अंतरिक्ष समय ग्राफ का फायदा क्या है? इसका फायदा ये है कि हम किसी घटना का छोटा चित्र बनाकर उसके भविष्य के बारे में और उसके पहले यानि भूतकाल के बारे में भी बता सकते हैं। इसका सबसे अच्छा उदाहरण बिग बैंग है कि किस प्रकार ये हुआ और किस प्रकार हमारा अंतरिक्ष फैल रहा है।

इसके जरिए हम बता सकते हैं कि हमारा अंतरिक्ष पहले कैसा रहा

होगा और भविष्य में कैसा होगा ?

इसी प्रकार किसी ग्रह के अंतरिक्ष समय ग्राफ के जरिए हम बता सकते हैं कि वह आज से दस साल पहले कहाँ रहा होगा और दस साल बाद कहाँ होगा ?

अंतरिक्ष समय के तथ्य के कारण ही हम गुरुत्वाकर्षण को समझ पाए हैं और न जाने कितने राज अंतरिक्ष में छुपे हुए हैं। हम स्वयं भी इस

अंतरिक्ष का हिस्सा है अतः भौतिकी के जितने नियम इस अंतरिक्ष पर लागू होते हैं उतने ही हम पर भी। यह ब्रह्मांड अंतरिक्ष और समय हमेशा से ही हम मानव जाति के लिए रहस्य बनकर रहे हैं और मानव जाति का सृजन ही इन अपार रहस्यों को सुलझाने के लिए हुआ है।

**समक्ष खाली**

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## मेंस्ट्रुअल हाइजीन- “मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन”

जिन्दगी के खूबसूरत सफर की शुरुआत माँ से होती है। एक स्वस्थ सुन्दर बच्चे की चाह सबको होती है। परन्तु सबको यह नहीं मालूम होता कि स्वस्थ बच्चा एक स्वस्थ गर्भ से ही जन्म ले सकता है। यह समझ भी जरूरी है एक स्वस्थ गर्भ की शुरुआत मासिक धर्म के प्रारम्भ से ही होती है। बेटियाँ ही भविष्य में माँ बनती हैं, इसलिए उनके स्वास्थ्य का ख्याल शुरु से ही रखना चाहिए। आयु के अनुसार जैसे-जैसे वह परिपक्वता की ओर अग्रसर होती है। शारीरिक जरूरतों के अनुरूप उनके खान-पान का उचित ध्यान रखना चाहिए। मासिक धर्म बेटियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है जिससे भविष्य में उनके माँ बनने के गुण अवतरित होते हैं। एक प्रकार से देखे तो यह ऐसा पड़ाव है जिसमें किसी नए जीवन की नींव पड़ती है इसलिए सकुचाने की जगह इसे सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए। मासिक धर्म कोई शर्म की बात नहीं है मगर यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत में आज भी केवल 18% स्त्रियाँ ही सेनेटरी पैड का प्रयोग करती हैं आज भी अधिकतर लड़कियाँ सेनेटरी पैड खरीदने मेडिकल स्टोर पर नहीं जाती हैं। संकोच के कारण वह एक बेबुनियाद अपराध बोध से ग्रस्त हो जाती है इसलिए अब समय है लड़कियों को शिक्षित करने का उन्हें, आत्मविश्वास से भरपूर बनाने का यह समय है स्वयं में मानसिक बदलाव लाने का और इस परिवर्तन का प्रारम्भ परिवार से ही होगा सबसे पहले तो परिवार की महिलाओं-माँ को स्वयं स्त्री होने पर गर्व महसूस करना चाहिए। खुद को सम्मान की नजर से देखेंगे तभी आप अपनी बेटियों और बेटों में भी सम्मान की भावना ला पाएंगे। ना तो शारीरिक बदलावों से शर्मिदा हो और ना ही उसके बारे में बात करने से। माँओं को यह पहल करनी होगी कि वे बेटियों

और बेटों दोनों को पीरियड के बारे में पॉजिटिव एटीट्यूड रखना सिखाए। दोनों को इसलिए क्योंकि जब आप किसी से किसी चीज को छुपाते हैं तो उसके प्रति उत्सुकता बढ़ जाती है इसके विपरीत आप इन विषयों पर स्वस्थ ढंग से बात करें इनके विषय में समझ का सिलसिला बढ़ाए, यकीनन इससे आपकी बेटि का आत्मविश्वास बढ़ेगा और उसे मासिक धर्म किसी किस्म की शर्म या झिझक का कारण नहीं लगेगा। मैं सभी शिक्षित महिलाओं से आग्रह करता हूँ कि वह मासिक धर्म से सम्बन्धित जानकारी को अधिक से अधिक महिलाओं तक पहुँचाए और उन्हें सेनेटरी पैड का प्रयोग करने के तरीकों के बारे में बतायें। मासिक धर्म सामान्य शारीरिक विकास और परिवर्तन की प्रक्रिया है इसमें शर्म-झिझक और संकोच जैसी कोई बात नहीं है।

सही और सार्थक जानकारी जागरूकता लाती है और जागरूक मनुष्य बदलाव लाता है इसलिए मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन के बारे में आप जो कुछ भी जानते हो वो अधिक से अधिक महिलाओं तक पहुँचाये जिससे वह शिक्षित हो सके और इस सामान्य शारीरिक प्रक्रिया के संदर्भ में व्यापक स्तर पर नजरिया बदल सके। आइए परिवर्तन की इस पहल को स्वीकारे स्वयं का और समाज का नजरिया बदले और अपनी बेटियों के लिए आत्मविश्वास से भरपूर सुन्दर स्वस्थ भविष्य का सृजन करें।

**नरेन्द्र राणा**

बी.कॉम., पंचम सेमेस्टर

## The Nobel Prize

The Nobel Prize is the most coveted International award of the world. It was instituted by the inventor of dynamite, Alfred Bernhard Nobel. On Oct. 21, 1833 a baby boy was born to a family in Stockholm, Sweden, who became a famous scientist, inventor, businessman and famous founder of the Nobel Prize. The award is given on December 10, which is the death anniversary of its founder.

Nobel prize is given every year to those eminent persons who have made pioneering achievements in the field of Physics, Chemistry, Medicine, Peace, Literature and Economics.

### Indian Nobel Prize Winners

Name	Field	Year
Rabindranath Tagore	Literature	1913
Dr. C. V. Raman	Physics	1930
Mother Teresa	Peace	1979
Dr. Amartya Sen	Economics	1998
Kailash Satyarthi	Peace	2014

- Another group of Nobel Laureates is of Indian origin but who reside or live abroad.

Dr. Hargovind Khurana	Medicine	1968
Dr. S. Chandrasekhar	Physics	1983
Venkatrama Krishnan	Chemistry	2009

- This last group includes those Nobel Laureates who are foreigners but born in India. Some of them lived in India during that period when they received the Nobel Prize, some others are of Indian ancestry.

Ronald Ross	Physiology for Medicine	1902
Rudyard Kipling	Literature	1907
14th Dalai Lama	Peace	1989
V. S. Naipaul	Literature	2001

**Meemansha Kaintura**

B.Sc. (CBZ), I Sem.

## एक कविता ऐसी भी

बड़ा आदमी बनने की, ख्वाहिश नहीं मुझे।

ऊँची उड़ान भरना चाहती हूँ।

बड़ा आदमी बनने की, चाह नहीं मुझे।

खुलकर जीना चाहती हूँ।

खुले भवन डर को देखो जरा।

क्या पकड़ पायेगा मुझे।

इतनी ऊँची उड़ान भरूँ मैं।

देखकर दंग रह जाय मुझे।

खुले गगन में नाचूँ मैं।

ऐ हवा, क्या रोक पायेगी तू मुझे।

बड़ा आदमी बनने की चाह नहीं मुझे।

मैं खुलकर जीना चाहती हूँ।

इतनी ऊँची उड़ान भरूँ मैं।

लहरें छू तक न पाये मुझे।

डुबाना तो वो भी चाहता है मगर,

फिर भी ऊँचा उड़ना चाहती हूँ।

जकड़े हुए ये, जंजीरे मुझे।

तोड़ दूँ, इन जंजीरों को।

इतनी ऊँची उड़ान भरूँ मैं।

रोक न ख्वाब कोई पाये मेरे।

ऊँची उड़ान भरना चाहती हूँ।

मैं खुलकर जीना चाहती हूँ।

**प्रिया कठैत**

बी.एस.सी., तृतीय सेमेस्टर



## *Historical Geology*

The Indian Subcontinent presents a marked diversity in its landforms and climate. While in the east, vast swampy regions of Sunderban are frequented by marine water, up in the north, we have the world's tallest mountains, topped by the Mount Everest. Likewise, there exists a sharp contrast in the climate. We have the world's wettest spot, Cherrapunjee, in the east and dry deserts of Rajasthan in the west. Whereas the Northern mountainous region of the Himalaya experiences Sub-Zero temperature in the winter, in summer, the mercury rises above 50°C in some parts of the Gangetic plains. In the southern coastal regions, the temperature is almost 30°C throughout the year. These regions of climatic contrasts also differ from each other in terms of relief, geological structures and rock formations.

This beautiful subcontinent is but a momentous incidence in the ever changing shape of the earth's surface. The diversity in the landforms and the contrasts in their climate, which fascinate us most, are merely a passage

from uninterrupted past to unknown future. The swamps and deserts, the mountains and lowlands, the land and the sea have been exchanging their locales on the surface of the earth as a consequence of the pulsating nature of the mother earth. The migration of the shore line in recent past is interpreted in the recorded history and archeology. Vast areas, which were under marine water in the geological past, form parts of the present topographic contrasts of the Indian subcontinent. Their history is recorded in terms of the rock formation and geological structure. The areas, which were above the marine water in the geological past, have in some cases completely disappeared leaving behind no traces of their existence. Their presence is interpreted by indirect methods. Reconstruction of the past shore lines, distribution of diverse type of landforms on the continents and the topography of the oceanic bottoms during the geological past form the subject-matter of Historical Geology.

**H.R. Arvinth Kumar**

B.Sc. (PMG), V Semester

## *An Old Father Thought*

Around my eyes revolves my whole life  
As like a circle I can see now completion  
I saw how happiness comes in life  
When my daughter was born, she was crying  
Difference between us two was, but we were  
never apart  
A centre there was holding us together,  
maybe from heart  
Seeing an infant crying I can imagine my  
rebirth now.  
I even saw how silence enters in life  
When her mother passed away, then  
After her marriage she also went away,  
My familiar faces are now gone too far

I'm like an ancient building about to fall  
A long journey it was....full of memories,  
tears and smiles  
And now, full of sighs.  
I saw then when the door knocked,  
My daughter, son-in-law and my grandson  
standing  
Saying, "In your last years we will be  
together."  
I've seen that life can't be described in words  
Around my eyes revolves my whole life  
As like a circle I can see now completion.

**Simran Babbar**

M.A. (English), III Semester

## बेटी

माँ के आँगन में, इठला कर आई

बाबा की लाडली, बन मुस्कुराई,

दादा-दादी के मन में, आस बन आई

तब भी वह बेटी, जी न पाई।

‘बेटी’ एक ऐसा शब्द, जिसके दो वर्ण संसार की सारी खुशियाँ समेटे हुए हैं।

पिता के आँगन में खिलने वाली वो नहीं सी कली, जिन्दगी में अनेकों किरदार बखूबी निभा जाती है।

भाई की कलाई सँवारने से लेकर माता-पिता की सेवा तक, पति की अर्धांगिनी का कर्तव्य हो या जीवनदायिनी माँ। इन सभी अवतारों में नारी, बिना विश्राम करे, बिना हारे, हर प्रयास करती है।

परन्तु आज दुख की बात यही है कि उसी नारी के अस्तित्व को खतरा आन पड़ा है। आज जननी का जन्म भी समाज को अखर रहा है, कन्या भ्रूण हत्या जैसे पाप करने में भी आज पिता का हृदय जार-जार नहीं होता। आखिर क्यों?

बेटी समाज की आधारशिला है। केवल चूल्हा चौका सँभालना ही उसका प्रारब्ध नहीं है। समाज की हर बेटी को अधिकार है कि वह भी पढ़े व उच्चतम शिक्षा प्राप्त करे। यदि बेटियों को डराकर घर में बिठा दिया जायेगा तो हमारी अनेक प्रतिभावान कन्याएँ अपनी पहचान बनाने में से पहले ही अंधेरों में गुम हो जाएगी।

अतः नारी शिक्षा व नारी उत्थान केवल शाब्दिक न रहे, बल्कि अस्तित्व में भी आए। यह हम सब का कर्तव्य है कि बेटी को दर्द और लाचारी से निकालकर सुख और उज्ज्वल भविष्य प्रदान करें।

नर और नारी जीवन का अभिन्न अंग है। एक की भी कमी से दूसरे का जीवन अक्षम हो जाता है। अतः एक अधिक शिक्षित व साक्षर समाज के निर्माण के लिए नारी रक्षा व नारी शिक्षा दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

यदि नारी है तो नर है अन्यथा जीवन बे डगर है।।

नारी से ही है संसार, सृष्टि का यह मूल आधार।

नारी की शिक्षा का सार, सबसे माँगे शिष्टाचार।।

वैष्णवी गुप्ता

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## Life! A Journey...

Life, a journey of ups and downs, a journey where connections with our loved ones are of utmost importance, a journey after reaching its destination leave memories to cherish, a journey where the world rewards a valuable individual with riches, a journey to make your story worth a million, a journey where struggle exists at each step and the upcoming one, a journey to live in its true meaning which is to live for others, a journey where your hard work can turn your goals into tomorrow's reality, a journey to make your story an exceptional and motivational one, a journey to leave footprints all along the way, a journey to end on a happy note....

**Srishti Raturi**

B.Sc. (CBZ), I Semester

## Are you Addicted to FB?

‘Facebook’ is like a drug. Its overuse may lead to addiction. This was the status updates by one of my friends. But, how many people would think over it and realize how addictive ‘facebook’ can be! This Mark Zuckerberg creation of is a place where you meet your old, past and present friends online, like their status, comment on their pictures and chat with them. But on the other hand it is a way to distract yourself.

It leads to sheer wastage of time. Those who get addicted to it, spend a large part of the day on facebook. The time they are away they think of facebook. Even during the time they are away from facebook, they keep on thinking about facebook, about the likes and comments they are expecting which they might be tagged in.

**Kalpna**

B.Sc., I Semester

## आज घर में अकेले था

आतताइयों के दंश से जब मात थी कराहती,  
आँचल फटा चहु ओर थी रो रही माँ भारती।  
स्वतंत्रता के उस समर में तब हुई अनेक आहुती,  
संघर्ष प्रतिफल में हुई इस स्वतंत्रता की आरती।  
नव स्वराज्य में थी अनेक, चुनौतियाँ ललकारती,  
कृष काय जीर्ण शीर्ण माता अपने लाल को पुकारती।  
रमन, भाभा, कलाम की भूमि को सदा निहारती,  
शौर्य मेधा ही सदा चरण मातृभूमि के पखारती।

देश हित में द्रुत गति होते रहे सब अनुसंधान,  
विकसित देशों में गिनती होगी था अभिमान।  
प्रतिभाशाली मेधा, शौर्य पराक्रम का था सम्मान,  
लहराया अंतरिक्ष में और चंद्रमा पर राष्ट्र निशान,  
किन्तु नहीं था हम सबको इसका तनिक भी भान,  
तज आध्यात्म धन पीछे भागे जाने इसको अपनी शान,  
बना दिया इस प्रखर प्रदीप्त भूमि को भययुक्त मसान।

उर्वरा ये भूमि प्यारी समग्र वासियों को सदा दुलारती,  
आतंकियों की ताड़ना से फिर क्यों मातृभूमि चित्तकारी।  
प्रताप, भगत, के वंशजों को है आज फिर पुकारती,  
विध्वंस हो आतंक का बस यही करुण गुहार थी।

सांगा, सुभाष के वंशजों तुमको होगी धिक्कार,  
यदि भय कम्पित अरि दल में न हो जाए हाहाकार,  
वीर विरोध में बल भर के तुम जो कर दो एक हुंकार,

पानी मांगे मृत देह तो उसका भी करना सत्कार।

हिमाद्रि तक चलो बढ़ो,  
हिमगिरि के शिखर चढ़ो।  
मरू भूमि में जाकर अड़ो,  
सिन्धु युद्ध भिड़कर लड़ो।

प्रथम सपाप्त करें आतंक विष इस बेल को,  
समझे सारा जनमानस शत्रु के इस खेल को।  
एक हैं हम फिर क्यों न बढ़ाए इस मेल को,  
राष्ट्र हित सर्वोपरि, छोड़ो प्याज और तेल को।

आतंक का समापन कर हो बस विकास की ही बयार,  
खुश रहे देश का प्रत्येक व्यक्ति सुखी रहे सारे परिवार।  
मित्रों सुन लो हम सबका सपना भी तब ही होगा साकार,  
देखेंगे वो दिवस भी जब सीमित ही वीजा देगी ये सरकार।

कहना तब की छटा कुहँसा, अम्बर में फैली लाली,  
दीपमालिका से उजियारी होगी रात अमावस की काली।  
दीपोत्सव की सुखद बधाई देना तब ही लाके खुशहाली,  
मनाएंगे सब मिल जुलकर तब एक साथ सही दीवाली।

मेजर प्रदीप सिंह

विभागाध्यक्ष

भू-विज्ञान विभाग

## परिश्रम सफलता की कुंजी है

प - पहले हम खुद को जाने।  
रि - रीति-रिवाज तो हम तब माने।  
श्र - श्रद्धा होगी तब हर मन में।  
म - मन के कुशल लायेंगे शांति सम्पूर्ण वतन में।  
स - संकल्प जो हम कर लेंगे।  
फ - फलेगा नाम वतन का हमारे।  
ल - लहू और सम्पूर्ण जिस्म में।  
ता - ताना-बानी छोड़कर, सोचे न जाने।

की - कितने लोग मिटे होंगे वतन पे।  
कु - कूट-कूट कर भर जायेगी जब कुछ करने की  
इच्छा।  
न - न जाने कितने कर रहे होंगे हमारा पीछा।  
जी - जी हाँ इन सबको है पीछे छोड़ना।  
है - है अपना रास्ता बनाना और अपनी मंजिल को पाना।

त्रिलोक राणा

बी.एस.सी., प्रथम वर्ष

## LUCA

The Last Universal Common Ancestor (LUCA), also called the "Last Universal Ancestor" (LUA), "cenancestor", "progenote" is the most recent population of organisms from which all organisms now living on earth have a common descent. LUCA is the most recent common ancestor of all current life on earth. LUCA is not thought to be the first living organism on earth, but only one of many early organisms, whereas the others became extinct.

While there is no specific fossil evidence of LUCA, it can be studied by comparing the that genomes of its descendants, all organisms living today. By this means, a 2016 study identified a set of 355 genes inferred to have been present in LUCA. This would imply that it was already a complex life form with many co-adapted features, including transcription and translation mechanisms to convert information between DNA, RNA, and proteins. However, some of those genes could have developed later and spread universally by horizontal gene transfer between archaea and bacteria.

LUCA is estimated to have lived some 3.5 to 3.8 billion years ago in the Paleoproterozoic era, a few hundred million years after the earliest evidence of life on earth, for which there are several candidates. Microbial mat fossils have been found in 3.8 billion-years old sandstone from Western Australia, while biogenic graphite has been found in 3.7 billion years old metamorphosed sedimentary rocks from Western Greenland. Recent studies have tentatively proposed evidence of life as early as 4.28 billion years ago.

Charles Darwin proposed the theory of "universal common descent" through an evolutionary process in his book *On the Origin of Species* in 1859, saying, "Therefore I should infer from analogy that probably all the organic beings which have ever lived on this earth have descended from some one primordial form, into which life was first breathed." Later biologist have separated the problem of the origin of life from that of the LUCA.

**Soniya Tyagi**

B.Sc. (ZBG), V Semester

## लोग

कुछ ऐसे भी लोग होते,  
टेलीविजन वे रख न पाते।  
रूखी-सूखी रोटी खाते,  
चिकन तंदूरी चख न पाते।

दूर-दूर पैदल चलकर जाते,  
गाड़ी को छुने से ये कतराते।  
कच्चे मकानों में वह रहते,  
बिजली सड़क बिना वे जीते।

सब्जी कभी अगर न पाते,  
तो नमक, चूरा, मिलाकर रोटी खाते।

टमाटर, प्याज न वहाँ होते,  
दुनुका तड़का मारकर काम चलाते।

फटे, पुराने पहन लेते नए का उन्हें  
शौक नहीं  
दिनभर मजदूरी करते क्या यह दुख  
नहीं

कच्चे मकानों में जीवन बीताते,  
महलों के सिर्फ स्वप्न देख पाते।

लकड़ी की आग से भोजन पकाते,  
गैस-चूल्हा वे रख न पाते।

खून-पसीना खुब वे बहाते,  
फिर भी चैन की नींद सो जाते।

दूर-दूर गाँवों में रहकर बीमार हैं होते,  
इलाज वे करवा न पाते।  
क्योंकि अस्पताल तो क्या सड़क तक  
भी वे  
समय से पहुँच न पाते।

शिक्षा के लिए बने भवन,  
भवन में इंतजार करते विद्यार्थी,  
गुरुजनों के दर्शन दुर्लभ,  
आखिर इन लोगों का भविष्य सुधेरेगा  
कब।

**त्रिलोक राणा (टीलू)**

बी.एस.सी., प्रथम वर्ष



## Founder Memorial Lecture by Prof Kapil Kapoor on Indian Knowledge Systems : A Report

On 25th October, 2018 a program was organized by Department of English in which Prof Kapil Kapoor, Former Pro Vice Chancellor, JNU delivered the Inaugural Lecture of the Founder Memorial Lecture Series (FMLS) in the sacred memory of the Founder of SGRR PG College Brahmaleen Pujya Shri Mahant Indiresch Charan Das Ji Maharaj. Before elucidating the highlights of this program, it is pertinent to give a brief idea of Prof. Kapil Kapoor's contribution in the field of academics.

Prof. Kapoor is a renowned name in Indian literary circle for his contribution to the field of linguistics (both Indian and Western) and for his authority on Indian Intellectual traditions. Born in the year 1940, Dr Kapoor has devoted 52 years of his life for teaching: 41 Scholars worked for Ph D and 36 for M Phil under him during the course of his incredible journey. He was also the Dean of the School of Language, Literature and Culture Studies, JNU, from 1996 - 1999 and Rector (Pro - Vice - Chancellor) of the University from 1999 - 2002. He served as a Professor at the Centre for Linguistics and English and Concurrent Professor at the Centre for Sanskrit Studies at JNU before retiring in 2005. His teaching and research areas primarily include literary and linguistic theories both Indian and Western, the Philosophy of language, Nineteenth Century British life, literature and thought and Indian Intellectual Traditions.



Dr Kapoor is the Editor - in - Chief of the Eleven Volume *Encyclopedia of Hinduism* published in 2012. His other works include *Rati Bhakti : Bharat Ki Katha Parampara Me* (2011), *Dimensions of Panini Grammar* (2005) and many more. His two books *Abhinavgupta Manuscripts and Irish-Indian Anthology* (with Professor Welch and Mac Mathuna of the University of Ulster, UK, ) as co - editors are some of his latest publications.

Prof. Kapoor has also worked as a Visiting Professor in Irish Academy of Cultural Heritage, University of Ulster, U.K. (2005-2009). He has been a nominated member of many governmental / non-governmental organizations including Trinity College (University) Dublin, Indian Institute of Advanced Study (IIAS) Shimla and others. He was the Chairman, Editorial Committee of the Indian Historical Records Committee, National Archives Govt. of India. Currently Prof. Kapoor is Chairperson IIAS Shimla.

In the FMLS Program titled 'Vimarsh', Prof Kapoor spoke extensively on the topic 'Indian Knowledge Systems'. He mentioned the freely flowing nature of this ancient knowledge culture of our nation. Ancient knowledge scriptures were transmitted to common man in folk language by teachers and educators. Prof Kapoor started his lecture by highlighting the fact that Indian civilization has always attached great value to knowledge, that's why it has such an amazingly large body of intellectual texts. Any discussion on Indian knowledge systems invariably takes into account three terms which are closely inter connected. These terms are – darsana, jnana and vidya. 'Darsana' (philosophy) is the 'System', the point of view which leads to Jnana, (Knowledge). When knowledge gathered about a particular domain is organized & systematized for purposes of pedagogy, it is called 'vidya' (discipline).

Prof Kapoor further remarked that in Indian Knowledge Systems, Knowledge has been constituted, stored & maintained in the oral form. The Indian knowledge system has accorded great importance to meditation and reflection i.e chintan and manan. Due to this oral tradition, the Indian knowledge has followed the guru shishya mode in which the knowledge is orally transmitted from the teacher to the pupil. But it is important to remember that the oral tradition is an alternative culture of knowledge and not a default culture because there is evidence of the existence of a script in ancient India. During his lecture, Prof. Kapoor mentioned how our rich libraries were destroyed by foreign invaders. It is said that Nalanda library which was set on fire by Khilji burnt for six and a half months.

Talking about the intellectual and spiritual wisdom of India, Prof. Kapoor alluded to many illustrious philosophers of India like Adi Shankracharya, Ramanuja and Madhvacharya.

Prof. Kapoor also said that Panini's Astadhyayi is taught to the scientists in NASA with the objective of teaching them how a domain of knowledge is analyzed, categorized and how that understanding is then stated. While commenting on the ignorance and negligent attitude of Indians towards their oral and comprehensive Indian knowledge systems, he called it 'Hanuman Syndrome' as Hanuaman in Ramayana could recall or realize his immense power only when Jamwant reminded him of it.

In his address, Prof. Kapoor exhorted the teachers to make their students realize the importance of their own knowledge systems as the west has always emulated the rich Indian knowledge tradition.

Before Prof. Kapoor's Inaugural Lecture, Dr Madhu D Singh (Head, Dept. of English) paid her homage to Brahmaleen Pujya Shri Mahant Indires Charan Das Ji Maharaj in whose memory this lecture was being organized. She remembered Brahmaleen Indires Charan Dass Ji as an eminent educationist, a philanthropist and a visionary. She also mentioned how his grand legacy is being ably carried forward by his dynamic successor the present Peethaseen Maharaj Shri Mahant Devendra Das Ji Maharaj.

Principal, Prof V A Bourai in his speech highlighted the main contribution of the Founder of SGRR PG College Brahmaleen Shri Mahant Indires Charan Das Ji. He remembered his simple living, away from worldly luxuries and his great focus and zeal to transmit the prevailing Indian knowledge to the upcoming generations.

Anchoring of this program was done by Dr. Jyoti Pandey (Asstt Prof) Department of English. Dr Anupam Sanny, (Asstt Prof) presented the Vote of Thanks at the end of the program.

**Prateek Upreti**

M.A. (English), IV Semester

## देश

‘अंग्रेजों’ के जुल्म सितम से  
फूट-फूटकर ‘रोया’ है।  
‘धीरे’ हॉर्न बजा रे पगले  
‘देश’ हमारा सोया है।  
आजादी संग ‘चैन’ मिला है  
‘पूरी’ नींद से सोने दे।  
जगह मिले वहाँ ‘साइड’ ले ले  
हो ‘दुर्घटना’ तो होने दे।  
किसे ‘बचाने’ की चिंता में  
तू इतना जो ‘खोया’ है।  
‘धीरे’ हॉर्न बजा रे पगले  
‘देश’ हमारा सोया है।  
ट्रैफिक के सब ‘नियम’ पड़े हैं  
कब से ‘बंद’ किताबों में।

‘जिम्मेदार’ सुरक्षा वाले  
सारे लोग ‘हिसाबों’ में।  
तू भी पकड़ा ‘सौ’ की पत्ती  
क्यों ‘ईमान’ में खोया है?  
धीरे हॉर्न बजा रे पगले  
‘देश’ हमारा सोया है।  
‘राजनीति’ की इन सड़कों पर  
सभी ‘हवा’ में चलते हैं।  
फुटपाथों पर ‘जो’ चढ़ जाते  
वो ‘सलमान’ निकलते हैं।  
मेरे देश की लचर विधि से,  
‘भला’ सभी का हुआ है।  
धीरे हॉर्न बजा रे पगले  
‘देश’ हमारा सोया है।  
मेरा देश है ‘सिंह’ सरीखा  
सोये तब तक सोने दे।

‘राजनीति’ की इन सड़कों पर  
नित ‘दुर्घटना’ होने दे।  
देश जगाने की हठ में तू  
क्यूँ दुख में रोया है  
धीरे हॉर्न बजा रे पगले  
‘देश’ हमारा सोया है।  
अगर देश यह ‘जाग’ गया तो  
जग ‘सीधा’ हो जायेगा,  
पाक चीन ‘चुप’ हो जाएंगे  
और ‘अमेरिका’ रो जायेगा।  
राजनीति से शर्मशार हो  
‘जन-गण-मन’ भी रोया है।  
धीरे हॉर्न बजा रे पगले  
देश हमारा सोया है।

नरेन्द्र राणा

बी.कॉम., पंचम सेमेस्टर

## Farming- A Profession of Hope

Have you ever thought "What would be your life if there were be no farmers or no agricultural production?" If NO, then give a deep thought to it. You'll come to know that there'll be no 'YOU' if there is no 'FARMER'.

'Agriculture' is the oldest profession of our country. During colonization the Britishers made our peasants toil hard on the fields but the profits from agriculture they grabbed themselves.

In our country, there was a period when the total population of country was engaged in 'FARMING' to earn their lives. But, then came the era of urbanization when people started moving from rural to urban areas, leaving agriculture behind their back and fertile lands of hills barren. People still can opt for urban farming if they value farming the most. Urban farming is not only possible but it is crucial.

A major portion of India's youth has the mentality that agriculture is meant for backward class only. Such type of thinking only reflects their ignorance because the reality is this that agriculture is the only profession where one interacts with nature and can earn highest profit from it. There will be no food stuff available if there are no 'farmers'.

A farmer is the most punctual man on this whole Earth, because, he knows the thing- 'If you do one thing late in agriculture, you'll be late in every work.'

FARMING, for an honourable and high-minded man is the best occupation or art by which men procure their means of living.

There is no doubt that farming turns earth and even manure into gold and is a profession of hope.

Tanuja Chand

B.Sc. (Agriculture), V Semester



## आरक्षण इतिहास व उपयोग

चूँकि यह बहुत संवेदनशील मामला सबकी इस पर अलग-अलग राय है। आरक्षण का इतिहास काफी पुराना था। क्योंकि मेरे ख्याल से पहला आरक्षण अकबर के दरबार में लगा हो क्योंकि वहाँ मौलवी भी थे, अंग्रेज भी थे, बीरबल भी थे, चूँकि उपरोक्त कथन मेरी सोच है। आरक्षण का प्रथम उपयोग अप्रत्यक्ष रूप से महाराज साहु ने 1902 ई० में किया। परन्तु इसका प्रत्यक्ष रूप से प्रयोग (Puna Pact 1932) में हुआ। ब्रिटिशर ने गोल मेज (Round Table) सम्मेलन करके कुछ सीट दलितों के लिए आरक्षित होगी और वोट (मत) भी दलित हो देंगे। परन्तु गाँधी जी इसे अंग्रेजों के, बाँटों और राज करो की नीति से जोड़ते हुए कहा कि, दलित सीट आरक्षित होगी परन्तु वोट सभी करेंगे। आरक्षण नाम की बीमारी हमारे देश में आ चुकी थी बस देरी थी कि इसके विरोधी व समर्थक आये। सभी चाहते थे कि उन्हें भी आरक्षण का लाभ मिले। इसके बाद आया हमारा मंडल कमीशन, 'बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल', जो बिहार के सहरसा के धनी एवं सम्पन्न परिवार से थे। उन्होंने सुझाव दिया कि OBC (पिछड़ा) वर्ग को भी आरक्षण मिले। मजेदार बात तो यह है कि उस समय तक OBC वर्ग अस्तित्व में ही नहीं था। और उस समय एक डाटा (आँकड़ा) प्रस्तुत किया गया, अर्थात् किस जाति में कितने लोग अमीर है। कौन से गाँव से है इत्यादि ये हास्यपद है कि जो आँकड़ा दर्शाया गया वो 1931 का Puna Pact 1932 का यानि आपको BMW कार चाहिए पर इंजन वही मारुति 800 मॉडल का हो।

1979 में आरक्षण 50% हो गया। यानि सामान्य वर्ग का हाल द्रोपदी जैसा हो गया, तब उस समय सर्वोच्च न्यायालय आया कृष्ण बनकर और आदेश दिया कि किसी भी क्षेत्र में आरक्षण 50% से अधिक नहीं होगा। नहीं तो कुछ दिन में सामान्य वर्ग के लोग आरक्षण माँगने लगेंगे। उसके बाद कुछ राज्य आगे आये जैसे तमिलनाडु उन्होंने कहा हमारे यहाँ SC, ST व OBC की संख्या अधिक है, हमें 69% आरक्षण चाहिए। तमिलनाडु को देख हरियाणा बोला "मारा आरक्षण थारे आरक्षण से कम है के" उन्होंने ने भी अपना आरक्षण बढ़वाया।

आरक्षण का मुख्य उद्देश्य यह था कि वंचित लोगों को ऊँचा उठाना था अब वंचित तो ब्राह्मण भी हो सकता है, राजपूत भी हो सकता है, बनिया भी हो सकता है पर हमारे देश में इसका प्रयोग राजनीतिक हथकंडो को बढ़ावा देने में होता है।

आरक्षण का लाभ भारत में अधिकांशतः सम्पन्न लोग ही उठाते हैं और उठाना चाहते हैं। इसका अंजाम यह हुआ कि गुजरात में समुदाय, हरियाणा में जाट समुदाय ने OBC Status (पिछड़ा पद)

के लिए विरोध किया। हिंसा हुई, तोड़-फोड़ हुई सरकारी सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाया गया। सन् 2014 में UPA सरकार ने चुनाव से 1 वर्ष पूर्व जाट को OBC Status दे दिया। परन्तु 2015 में सर्वोच्च न्यायालय ने इसे खारिज कर दिया पर हुआ वही तोड़-फोड़ हिंसा वगैरह-वगैरह।

भारत में आरक्षण का अधिकांशतः लाभ सम्पन्न लोग उठा रहे हैं और जिन्हें जरूरत है वो इसे ऊपर के लोगों द्वारा पा नहीं रहे। भारत में कुल 1 लाख 80 हजार 657 परिवार ऐसे हैं, जिनके पास न कोई मौका है और न कोई नौकरी, न पढ़ाई है ना कुछ इसका अर्थ है 46 वर्षों में हम आरक्षण अमल में नहीं ला पाये।

निष्कर्ष:- National Crime Record Board कहता है कि 80% दलित छात्र (कुल आत्महत्या छात्रों द्वारा) सामान्य वर्ग के Troll (प्रताड़ित) करने से होता है अर्थात् 10 दलित छात्रों की आत्महत्या में 8 प्रताड़ित करने से होता है। मेरे कई ऐसे मित्र हैं जो OBC हैं SC, ST हैं और उनके पास करोड़ों की सम्पत्ति है, हर तबके में ऐसे लोग होते हैं जिन्हें आरक्षण की आवश्यकता नहीं होती है पर वे लेते हैं, और मैं ऐसे आरक्षण के खिलाफ हूँ।

आरक्षण का आधार आर्थिक होना चाहिए पर भारत में अपनी आय को छिपाना काफी आसान है क्योंकि भारत में मात्र 3% लोग ही टैक्स भरते हैं। दूसरी विधि यह हो सकती है कि परिवार में पिता को आरक्षण मिला तो बेटों को ना मिले ऐसे बहुत सारे विकल्प हो सकते हैं पर अमल में कोई नहीं लाया जायेगा क्योंकि हमारे देश के राजनेता अपने वोट बैंक नहीं गवाँएंगे। मैं इस मुद्दे से किसी को आहत नहीं करना चाहता। ये मेरी खुद की राय थी जो मैंने साझा किया।

गौतम दुबे

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

**“खुद वो बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।”**

—महात्मा गाँधी

## वंशवाद (परिवारवाद)

वंशवाद या परिवारवाद शासन की वह पद्धति है जिसमें एक ही परिवार, वंश या समूह से एक के बाद एक कई शासक बनते जाते हैं। मित्रवाद या भाई-भतीजावाद भी इसी का एक रूप है। ऐसा माना जाता है कि लोकतंत्र में वंशवाद के लिए कोई स्थान नहीं है किन्तु फिर भी अनेक देशों में अब भी वंशवाद हावी है। यह एक आरक्षण है। इसे राजतंत्र का एक सुधरा हुआ रूप कह सकते हैं।

वंशवाद से कई तरह की हानियाँ होती हैं जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं।

- वंशवाद के कारण नये लोग राजनीति में नहीं आ पाते।
- वंशवाद सच्चे लोकतंत्र को मजबूत नहीं होने देता।
- समान अवसर का सिद्धान्त पीछे छूट जाता है।
- ऐसे कानून एवं नीतियाँ बनायी जाती हैं जो वंशवाद का भरण-पोषण करती रहती हैं।
- दुष्प्रचार, धनबल एवं भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया जाता है ताकि जनता का ध्यान वंशवाद की कमियों से दूर रखा जा सके।
- जनता में स्वतंत्रता की भावना की कमी बनी रहती है।
- देश की सभी प्रमुख संस्थाएँ अपाहिज बनाकर रखी जाती हैं।
- भारत में वंशवाद अपनी जड़ें मजबूत कर चुका है।

नेहरू खानदान इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है जिसमें जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी, सोनिया गाँधी और राहुल गाँधी सत्ता का आनन्द उठाते रहे हैं।

इसके अलावा छोटे-मोटे कुछ और उदाहरण भी हैं जैसे बाल ठाकरे द्वारा शिवसेना में परिवारवाद को बढ़ावा देना, लालू यादव, शरद पवार, शेख अब्दुल्ला, माधवराव सिंधिया, मुलायम सिंह यादव आदि भी अपने स्तर पर इसे प्रोत्साहित करते आये हैं।

जैसे कि हम जानते हैं कि संसद, विधानसभा, नगर निगम, नगर पालिका और पंचायत तक के चुनाव आते ही परिवारवाद का मुद्दा उछल जाता है। विभिन्न दलों के उम्मीदवारों की घोषणाओं के साथ ही इस मुद्दे की गूँज हो उठती है। सामान्यतः मीडिया में लिखने, छापने और रेडियो, टेलीविजन चर्चाओं में गरमा-गरम बहस के लिए यह बड़ा मुद्दा रहता है।

हम जानते हैं कि लोकतंत्र में परिवार विशेष के वर्चस्व पर सैद्धांतिक आपत्तियाँ उचित ही कही जाती हैं। लेकिन विरोध की इन भावनाओं को जानते-समझते हुए भी सिक्के के दूसरे पहलू को देखने-समझने और बहस के लिए रखा जाना आवश्यक लगता है। हमेशा की तरह कुछ मित्र और पाठक असहमति के साथ अप्रसन्न भी हो, लेकिन लोकतंत्र में सबकी राय एक होना भी तो खतरनाक है।

हम मानते हैं कि संविधान निर्माताओं ने चुनाव व्यवस्था में यह कहीं नहीं लिखा कि किस पद पर बैठे व्यक्ति के परिवार के सदस्य को चुनाव लड़ने के योग्य नहीं माना जाएगा। यह भी नहीं लिखा है कि आईएस, आईएफएस, आईपीएस के परिजन को उसी तरह अधिकारी बनने के योग्य नहीं माना जा सकेगा। न्यायाधीश के बेटे-बेटी उसी अदालत में पैरवी भले ही नहीं कर सकते हो, लेकिन अन्य अदालतों में क्या वकालत नहीं करते? लेकिन यह तो जरूरी नहीं की एक मजदूर के बच्चे मजदूर ही बने। एक वकील का बेटा वकील बनता है यह अच्छा है लेकिन एक मजदूर का बेटा मजदूर ही बने यह तो कोई विधान नहीं हुआ। वे अपनी इच्छा से जिस कार्य को करना चाहते हैं उसे कर सकते हैं। राजनीति में सिर्फ अपने परिवार को ही बढ़ावा देना गलत है और भी कई ऐसे लोग हैं जो उस पद की गरिमा को बढ़ा सकते हैं लेकिन इसे अनदेखा करके परिवारवाद को बढ़ावा दिया जाता है।

परिवारवाद का मुख्य कारण जनता में शिक्षा की कमी भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ शिक्षा की कमी है वहाँ मजदूर अपने बच्चों को शिक्षा के अभाव में अपने साथ मजदूरी कराता है।

अगर हम प्रत्येक ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा का स्तर बढ़ा दे तो हो सकता है कि एक मजदूर के बच्चे भी पढ़ लिखकर अपनी इच्छा से जो कुछ भी अपने जीवन में बनना चाहते हैं वो बन सके।

हमें परिवारवाद को समझकर इस समस्या का समाधान करना चाहिए ताकि यह समस्या एक समस्या न रहे और यह एक समाधान बन जाए।

**अंशिका शर्मा**

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## *Ayushman Bharat*

Ayushman Bharat- National Health Protection Mission will subsume the ongoing centrally sponsored Scheme - Rashtriya Swasthya Bima Yojana (RSBY) and the Senior Citizen Health Insurance Scheme (SCHIS). It is an important reform and progressive step in healthcare society which is started by Central Government.

Ayushman Bharat is an initiative to address health holistically in primary, secondary and tertiary care systems covering both prevention and health promotion. It is the scheme which aims to provide cashless benefits of 5 lakh to 10 crore to poor families in the country. Ayushman Bharat is the flagship public healthcare initiative of central government.

It has two components namely-

**Health and Wellness Centers:** HWCs will be upgraded form of primary health centers. The focus area includes non communicable diseases and infectious diseases along with neonatal and maternal care. HWCs are primarily meant for early detection and prevention. This is significant in some areas as burden on secondary and tertiary health system will reduce if early detection takes place. Moreover rural areas will benefit as HWC will spread across India.

**National Healthcare Protection Scheme [NHPS]:**

NHPS is an insurance scheme which covers costing upto 5 lakhs per family per year. It will cover primary and tertiary treatment for lower income groups. This scheme will reduce the pocket expenditure and offers choice for treatment at private hospitals.

**Strategy of scheme establishment of Ayushman Bharat-** National Health Protection Mission Agency to ensure proper implementation of scheme at national, states and UTs can implement scheme through an insurance company or directly through trust/society. This would increase Ambit of the scheme at ground levels. Merits of scheme as strong network of 1.5

lakhs health and wellness centers across the country would constitute foundation of India's new healthcare systems. It will cover more than 10 crore poor and vulnerable families of the society. The support from trained nurses and health workers will increase their availability near home in rural areas. Vulnerable sections of the society would have access to health care to almost all medical and surgical conditions that can occur in lifetime. Package rates decided by government for private hospitals would help in keeping the cost low. It will generate employment especially for women. It would help in economic empowerment of women.

**Challenges-** Major challenge would be in implementation and governance of the scheme. The private hospitals are based on profitability motives and fixing rates of procedures would increase charges of hospitals neglecting poor patients. The health care is a goal under SDG 2030 Goal-3 of good health. The scheme would ensure proper healthcare facilities for most vulnerable sections of the society. Preventing disease at early stage can make a change. For example early detection of diabetes at the age of 50 can help in controlling / curing it through proper medication. Also scheme excludes patient healthcare that is responsible for 70% of healthcare expenditure. Budget allocation of 2000 crore scheme doesn't serve the purpose. Amount is meager as compared to scope of the scheme. The scheme is far from universal healthcare coverage as it excludes 80 crore (60%) of the population.

**Suggestion:** Providing insurance covers alone will not improve the healthcare system in the country. Rather, there is a need to build robust healthcare infrastructure in the remotest corners of the country where people have easy access. Budget allocation needs to be increased to realize the purpose of the scheme.

**Aaliya**

B.A., V Semester



## Value of Love

Once upon a time, there was an island where all the feelings lived: happiness, sadness, knowledge and all others, including love. One day, it was announced to the feelings that the island would sink, so all left in constructed boats, except love. Love was the only one which stayed. Love wanted to hold out until the last possible moment.

When the island had almost sunk, Love decided to ask for help. Richness was passing by love in a grand boat. Love said "Richness, can you take me with you?" Richness answered "No, I can't as there is lot of gold and silver in my boat. There is no place for you." Sadness was close by, so love asked, "Sadness, can you take me?" "Oh love! I am so sad that I need to be by myself."

Happiness passed by love too, but she was so happy that she did not even hear when love called her.

Suddenly a voice came, "Come love, I will take you." It was an elder. So blessed and overjoyed, Love even forgot to ask the elder where they were going. When they arrived at dry land, the elder went her own way. Realizing how much he owed to elder, Love asked Knowledge, about the elder, "Who helped me?" "It was time," Knowledge answered. "Time?" asked Love. "But why did time help me?" Knowledge smiled with deep wisdom and answered, "Because only time is capable of understanding how valuable love is."

**Seema Thapa**

B.Sc., V Semester

## Hydroponics

Hydroponics refers to the science of growing plants not with the use of soil but with the use of inert mediums such as gravel, sand, peat, vermiculites/sawdust etc. The nutrient solution is added containing all the essential nutrients for normal growth and development. The nutrients used in hydroponic system can come from an array of different sources and are not limited to by-products from fish wastes, duck manures or purchased chemical fertilisers.

Hydroponics is the best way to generate income because the system does not need a tractor or other big implements and need not to inherit a farm.

### **Plants suitable to grow in hydroponic system-**

Strawberries, Potatoes, Tomatoes, Mint, Green beans etc.

### **Advantages of Hydroponics-**

- No soil is needed
- Much higher yield than those grown in soil
- Quality of produce is always superior
- Freedom from soil borne disease and weeds
- Less cost of management
- Make better use of space and locality
- Less use of insecticides and herbicides
- Better growth rate

Hydroponics- "Achieve the greatest volume and highest quality of produce possible, while reducing operating costs and maximise your profitability by growing smart."

**Tanuja Chand**

B.Sc. (Agriculture), V Semester

## Digital Children

When the door was knocked, Suhana's mother came to open the door. She was surprised to see Suhana's uncle, not because he came on such a rainy day but because he came alone. She welcomed him and also inquired about aunt. He told her that she also wanted to come but at the last moment she fell ill. She said that she would miss the kids a lot. Every year, the uncle and the aunt, pay a visit at least once to their so-called relatives (Suhana's family).

"Where are the kids?" Uncle asked. "Suhana is playing Chess in bedroom and Abhi is in his room". Suhana is now ten years old and two years younger to her brother Abhi.

"Please, be seated. You will be tired after such a long journey. Let me prepare some tea for you." Suhana's mother said and went straightway to the kitchen. Uncle's eyes were searching for the kids but so far only silence was visible. When Suhana's mother brought tea, Uncle asked, "Where is Sushil? Today is a holiday."

"He's gone to the neighbouring state for his office assignment." She answered.

"You mean that, will you shift again?" Uncle asked

"Yes, but this time it will be our permanent settlement." Suhana's mother answered.

Meanwhile Abhi came with a mobile phone in his hands. "Abhi greet your Uncle" she said.

He said 'Namaste' while using the mobile phone.

"Suhana" her mother called her. "Dear come here, see your Uncle has come."

"Coming Mom" Suhana replied and came along with her mother's laptop in her hands. She sat there and started playing chess again alone but virtually. The only difference her uncle notices is that she now wears specs.

**Simran Babbar**

M.A. (English), III Semester

## गुरु महिमा

गुरु- गुरु ही होता है, उसकी अपनी ख्याति है,  
तिमिर मिटा दे सदा-सदा को, वह ऐसी जलती बाती है।  
माता-पिता जीवन देते हमको, गुरु जीवन का निर्माता है।  
अधिक क्या बताऊँ तुमको, गुरु ही भाग्य-विधाता है।  
पग-पग करते भूल सदा हम, पर गुरु क्षमादान ही देता है।  
गुरु है ऐसा सुघड़ चित्रकार, जो सुन्दर आकार बनाता है।  
अन्दर देता सहारा हाथ का, बाहर-बाहर चोट लगाता है।  
गुरु होता है विचित्र चित्रकार, जो भावों को आकार बनाता है।  
निष्ठा की तूलिका पकड़ हाथ में भी मानवता का रूप जगाता है।

गुरु है दिन मान सदा, वह प्रकाश ही प्रकाश देता है।  
अंधकार मिटा दे जीवन का, वह नित आशादीप जलाता है।  
गुरु है ऐसा विशाल वृक्ष जो पथ की थकान मिटाता है।  
तनिक विश्राम किया इसके नीचे, फिर उत्साह से उठ जाता है।  
गुरु है ऐसी पारस मणि, जिसे छू लोहा भी कुंदन बनता है।  
धुंधला-धुंधला दिखता जीवन घिस-घिस हीरा कर देता है।  
गुरु तेरी महिमा है अपार, देवी-देवता भी करते स्वीकार  
ऊँच-नीच का भेद मिटाता, कृष्ण सुदामा को एक साथ बिठाता।  
गुरु-कृपा से ही सीता राम को मिल पाई  
ऋषि-मुनियों ने सदियों तक तेरी ही गाथा है गाई।

**श्वेता भण्डारी**

बी.एस.सी., पंचम सेमेस्टर

## *Have You Earned Your Tomorrow?*

Is anybody happier because you passed his way?  
Does anyone remember that you spoke to him today?  
This day is almost over, and its toiling time is through;  
Is there anyone to utter now a kindly word for you?

Did you give a cheerful greeting to the friend who came along?  
Or a churlish sort of "Howdy" and then vanish in the throng?  
Were you selfish, pure and simple as you rushed along the way  
Or any mighty, grateful deed you did today?

Can you say tonight, in parting with the day that's slipping fast  
That you helped a single brother of the many that you passed?  
Is a single heart rejoicing over what you did or said;  
Does a man whose hopes were fading now with courage look ahead?

Did you waste the day, or lose it, was it well or sorely spent?  
Did you leave a trail of kindness or a scar of discontent?  
As you close your eyes in slumber do you think that God would say  
You have earned one more tomorrow by the work you did today?

**Ayushi Tyagi**  
B.Sc., I Semester

## *A 'Heaven on Earth' Kashmir*

Jammu and Kashmir consists of three zones i.e Jammu, Kashmir and Ladakh. Population of Jammu and Kashmir is 1,42,80,373. There are different religions, castes and culture of people in Jammu and Kashmir.

Kashmir is called 'Heaven on earth', people lived there peacefully with unity and respect for each other. But now it seems to have lost some of the glory traditionally associated with it because of politics.

But in reality it is as normal as every other place in India and as well as the most beautiful place. People should help and understand everything about Kashmir to get rid of the conflict in Kashmir.

Let's make India a great nation.

**Abdul Aziz**  
B.A., I Semester

## महिलाओं की आर्थिक भागीदारी का अभाव

हमारा देश एक पुरुष प्रधान देश रहा है। यहाँ महिलाओं को सम्पूर्ण समकक्ष अधिकार किसी भी जाति, वर्ण अथवा धर्म में आज तक उपलब्ध नहीं है। जो कि अव्यवहारिक होने के साथ-साथ एक विडंबना व चिंता का कारण है।

अन्य देशों की तुलना में भारत में युवा वर्ग की अधिकता के आर्थिक लाभ की बात अक्सर की जाती है। इसी सकारात्मकता के मध्य हमारा देश लैंगिक अंतर जैसे गंभीर मुद्दे से भी जूझ रहा है, इसी कारण से हम एक राष्ट्र की दृष्टि से आर्थिक और समाजिक रूप से पिछड़े हुए हैं।

हमारे देश की लगभग आधी जनसंख्या यानि 49 प्रतिशत महिलाओं की है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की महिला श्रमिक सूची के 132 देशों में भारत का स्थान 121 वाँ है। इसके निम्न कारण हैं-

- 1) भारत का समाज एक सामंतवादी, संकीर्ण व लिंगभेद समाज है। यहाँ पुरुष का स्थान बाहरी काम-काज का व महिला का घरेलू कार्यों तक ही सीमित माना जाता है।
- 2) महिलाओं को बाहर अकेले आने-जाने की छूट नहीं।
- 3) आर्थिक तंगी के कारण पुरुष गाँव से पलायन कर अपने बच्चों व पत्नियों को वहीं गाँव में छोड़ देते हैं।
- 4) कार्यस्थल पर महिलाओं को अनेक प्रकार से प्रताड़ित व शोषित किया जाता है।

भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश हम से उच्च क्रम पर कार्यरत है। इन देशों के कपड़ा उद्योग, अनेक महिलाओं को रोजगार देते हैं। भारत का सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग व्यापक व बड़ा है एवं अनेक शिक्षित महिलाओं को रोजगार देता है। परन्तु यहाँ के निर्माण उद्योग में निर्यात कंपनियों का अभाव है जो इस क्षेत्र में दक्ष महिलाओं को रोजगार प्रदान कर सके।

सड़क से लेकर विधानसभा तक, पंचायत से लेकर के लोकसभा तक हमारे देश की महिलाओं को पुरुष की अपेक्षा कम तर आँका गया है चाहे वह महिलाओं की भागीदारी पंचायत की हो या विधानसभा की। संविधान के अनुरूप भी महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण विधानसभा व लोकसभा में आज तक नहीं दिया गया।

विकृत सामाजिक ढाँचा व महिलाओं का सर्वांगीण दोहन किसी से भी छुपा नहीं है। उन्हें एक बोझ व मंदबुद्धि प्रवृत्ति की समझा जाता है। जब कभी भी उनके अधिकारों की समानता की बात उठती है तभी हमारे समाज की जर्जर, संकीर्ण, विकृत परम्पराएं, मान्यताएँ,

रीति-रिवाज इनकी स्वतंत्रता में बेड़ियाँ बनकर इनका दोहन करते हैं।

आज हमारे देश में एक पुरुष वर्ग 'गैंगरीन' जैसी घातक बीमारी समाज एक विकृत व कुंठित मानसिकता व चाल-चलन का अनुयायी बन गया है। इसका मूलभूत कारण भी सामाजिक बेड़ियाँ व इंटरनेट का दुष्प्रभाव है। अपनी भावनाओं के आवेश व अत्यंत समाजहीन सोच के उदय के कारण जब कोई महिला पुरुषों की अपेक्षा श्रेष्ठ प्रदर्शन करती है, इन्हें अपमान महसूस होता है। इनके हिसाब से महिलाओं को दबाकर रखना ही इनकी 'मर्दानगी' का सूचक है। जब वे डटकर मुकाबला कर आत्म-निर्भरता व स्वच्छंदता से जीवन यापन करना चाहती है तभी ये 'यमराज' बनकर उसके जीवन को उसकी अस्मिता को तार-तार कर 'मर्दानगी' का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

आजकल एक नये 'प्रेम-वर्ग' का उदय हुआ है। जो कि समर्पित न होकर कुंठित व छलीय है। ये किसी महिला को प्रेम-जाल में फँसाने का प्रयास करेंगे, उसके अस्वीकारीय निर्णय की उपेक्षा करते हुए ये उसे बर्बाद करने का ठानते हैं वे या तो 'अम्ल' से उसका चेहरा जलाते हैं, या अपहरण कर उसकी अस्मिता को तार-तार करकर संतोषित अनुभव करते हैं।

मेरे विचार से महिलायें भले ही पुरुष से बल में कमतर हो परन्तु समस्या समाधान व भावना समझ के क्षेत्र में पुरुषों से सशक्त व मजबूत है। महिला शादी से पहले अपने पिता के व विवाह के उपरान्त पति के घर की आन-बान शान होती है। जब किसी परिवार की आन-बान लूट जायेगी तो आप ही बताइयें क्या वह महिलाओं को बाहर जाकर आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना चाहेगा।

परिवारों के मिश्रण से ही समाज बनता है जब घर में महिलाओं की सुरक्षा के प्रति भय होगा तो समाज तो स्वयं ही उन्हें बेड़ियों से बाँधना चाहेगा।

पिछले चार वर्षों में रोजगार के अवसरों में बहुत गिरावट आयी है। इन स्थितियों में महिलाओं के लिए संभावना और कम हो जाती है। महिलाओं की भागीदारी केवल बोर्ड कक्षों में नहीं अपितु दुकानों, स्वरोजगारों, उत्पादन, उद्योग हर क्षेत्र में पुरुषों के समान ही होनी चाहिए तभी हमारे देश में आर्थिक समानता आयेगी जो इसकी प्रगति में चार चाँद लगा देगी।

अंत में जब किसी लड़की का जन्म होता है तो सब कहते हैं, 'लक्ष्मी आयी है', 'आसमाँ की नन्ही परी' आयी है। बचपन में इन्हें परियों



की, लक्ष्मीबाई, सावित्री आदि स्त्रियों की कथाये भी सुनायी जाती है, परन्तु जैसे ये बड़ी होती जाती है, उनकी स्वछंदता सीमा से बंध जाती है जो कि हमारी पौराणिक 'कथाओं' से बिल्कुल विपरीत मालूम पड़ती है।

अगर महिलाओं को अवसर दिया जाये तो वे कल्पना चावला की तरह अंतरिक्ष में जा सकती है, वर्तिका जोशी की तरह समुद्र यात्रा कर सकती है, दीप्ती की तरह क्रिकेटर बन सकती है, अनुप्रिया कुमारी की तरह प्रशासनिक अधिकारी बन सकती है, निर्मला

सीतारमण की तरह राष्ट्र की सुरक्षा संभाल सकती है व प्रतिभा पाटिल की तरह राष्ट्र का संचालन भी कर सकती है। इसलिए महिलाओं को सीमाओं में बाँधकर इन्हें अपार विश्व की संभावनाओं से वंचित न रखें। इनकी जिजिविषा हमारे भारतवर्ष की प्रतिष्ठा में चार-चाँद लगाकर आर्थिक मजबूती भी प्रदान करेगी।

**अंकित सैनी**

बी.ए., तृतीय सेमेस्टर

## *Save Fuel, Save Economy*

The common Indian citizens are being smacked by the soaring fuel prices for a long time. Speaking straight, there are two big reasons behind this. This first reason is the increased cost of crude oil in the International market. Today India imports crude oil for Petrol at \$86/ Barrel and is highly dependant on imports for its oil needs. Organization of the petroleum exporting countries is cutting supplies to shore up prices for their own benefits and due to disbalanced diplomatic relationships. Another reason of high fuel prices in India is the high rate of excise duty and VAT. In 2018, the excise duty on Petrol was all time high i.e. Rs 19.48/L and VAT being 27%. Even in 2013, when crude oil was imported at \$108/ Barrel, by reducing taxes the petrol price was maintained at Rs 76.10/L.

Now this hike in prices has a devastating effect on both production and consumers. Economic survey 2018 claimed that a price rise of \$10/ Barrel will accelerate high inflation and GDP growth would depress by 0.2-0.3%. The peculiar truism is that "the inflation of petrol does not reduce its demand". The inflation is affecting everyone from the common household to airline industry.

So, what should be our steps to save fuel and save our economy? Analysing the scenario the

first step is to check international price hike and form an organization of Petroleum importing countries and improvement in diplomatic relations. By forming an organization and joining hands together will inforce pressure on the OPEC and it will understand the importance and need of big economies, that are importing their crude oil. What the Indian Government can do is to reduces taxes on Petrol and diesel or to put it under G.S.T. that will put fuel under a fixed tax price that is balanced and efficient to all. The economic experts should find more ways how to distribute the energy in the country and balance its consumption. More and more should be invested in techniques in energy generation though solar, wind and geothermal energy and reduce our dependency on fuel. Promoting e-vehicles as the government is already doing but to speed up it, there should be battery chargers to charge e-vechicles at various points instead of Petrol pumps or it should be made compulsory to have e-vchicle battery charger at every Petrol pump, so that it would be more convenient and people will switch on to e-vehicles. This must be started from the big cities and the trend will follow everywhere.

**Anjali Bisht**

M.Sc., III Semester

## Workshop on Theatre and Performing Arts

The Department of English conducted a workshop on "Theatre and Performing Arts" from 26th March to 28th March, 2018 for 3 days. It was conducted by Mr. Anurag Verma from 'Pancham Ved Rachnatmak Theatre' and Miss. Sheetal Naithani, who is a theatre artist and an alumnae of prestigious National School of Drama (NSD).

Drama gives the students the tools to express themselves and imagine alternative worlds. Exposure of students to the different techniques of drama through such theatre workshops becomes important in higher studies for a holistic learning approach. Therefore, the workshop on "Theatre and Performing Arts" was organized. The workshop was attended by students of English literature in large number. The drama workshop was very informative, inspiring and demonstrated a variety of intriguing stage-drama exercises.

### 1st Day Of Workshop

The activities of 1st day helped students in understanding the nuances of stage drama. Students were taught about the importance of alertness on stage during dramatic presentation. The activities on first day included:

**Ice-breaking session-** This exercise included ice-breaking session and introduction to basic drama exercises.

**1-2-3-** An introductory warm up activity was organized to improve concentration and inculcate team spirit in students. Different activities like lapping, sitting, bending were performed by students. All the students thoroughly enjoyed this activity.

**Discussion about dramas-** This was the fourth activity of the first day of workshop where an interactive session on famous plays was held and students shared their experiences of dramatic activities and discussed about their favourite

plays. Some students enacted parts of their favourite plays such as *The Merchant of Venice*, *Othello* and *The Tempest*.

### 2nd Day of Workshop

The activities that took place on the second day helped students in getting transformed from shy, reluctant participants into confident and active learners. The activities are as follow.

**Who, What Where-** The objective of this activity was to deliver the key elements of improvisation by acting out a short scene. Teams were divided and each team was given a theme. They had to perform the scene by working on questions "Who", "What" and "Where."

**Walk together-** This activity helped in encouraging group sensitivity among students. They were also taught about the importance of covering the stage during drama performance. On a given signal, everyone had to start walking using the given space and on a given signal everyone had to stop. This activity was heartily relished by the students.

**Interactive session-** Students were divided on the basis of their classes and their groups were formed. Each group had to enact a short play. This activity was aimed at unleashing hidden talents of many students. The students were asked to select a scene from a play of their choice and enact it on the third (final) day of the workshop.

### 3rd Day Of Workshop

On the third day the activities from the previous session were revised along with new activities like:

**Moulding a character:** It was also a game to represent or bear a semblance of a character physically in given time. This activity taught us value of time on stage.

**Sculpture and statue:** Teams were divided in pairs and partners took it in turns to mould each other into living statue.

**Extempore speeches-** Students were required to speak on a topic of their choice and their speeches were recorded. Besides it, student were acquainted with the finer points of dialogue delivery, intonation, rising and falling tone of speech and so on.

**The final act:** On the 3rd day, students from every semester had to perform their plays. This put to test all that they had learned so far. Our group enacted the concluding part of Vijay Tendulkar's famous play *Silence! the Court is in Session*.

## Outcome

This workshop on "Literature and Performing Arts" helped literature students in gaining proficiency in various aspects of theatre and of performing arts. Students got an opportunity to learn about various fundamental performance skills. The workshop also helped them to know about the appropriate theatrical presentations. It was organized to promote integrated learning and holistic approach.

**Shruti Pandey**

B.A., V Semester

## प्रकृति एक उपहार

प्रकृति महज तीन वर्णों का एक छोटा सा शब्द है लेकिन इसका अर्थ व्यापक है: हमारे चारों ओर का वातावरण जिसमें विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु, पेड़-पौधे निवास करते हैं। प्रकृति हमें चारों ओर से घेरे हुए है। इसी प्रकृति में हमारे जीवन की शुरुआत होती है और अन्त में इसी में समाहित हो जाता है प्रकृति हमें जीवन जीने के लिए सभी संसाधन उपलब्ध करवाती है हमें पीने योग्य शुद्ध जल, सांस लेने के लिए शुद्ध हवा, खाद्य सम्बन्धी भोजन, रहने के लिए जमीन तथा पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि उपलब्ध करवाती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो बहती हुई पवन की धारा हमें अपने कोमल हाथों से स्पर्श करती हो। प्रकृति ने मनुष्य को जीवन दिया है इस प्रकृति का संतुलन बनाए रखना मनुष्य का नैतिक कर्तव्य है।

प्रकृति मनुष्य को ईश्वर द्वारा मिला एक अमूल्य उपहार है जिसके बिना मनुष्य अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता है। प्रकृति के पास भौगोलिक सुन्दरता है इसे स्वर्ग का बगीचा भी कहा जाता है लेकिन ये दुख की बात है कि भगवान के द्वारा मनुष्य को दिये गए इस सुन्दर उपहार में बढ़ती तकनीकी, उन्नति और मानव जाति के अज्ञानता की वजह से लगातार हास हो रहा है।

प्रकृति जहाँ एक मूल दर्शक की भांति है, वहीं मनुष्य वाचाल है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रकृति के प्रतिकूल होना चाहिए आधुनिक मनुष्य को प्रकृति के साथ अटूट सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए। मनुष्य को यह समझना चाहिए कि हम पृथ्वी एवं वायुमंडल से

उतना ही ले सकने के अधिकारी हैं, जितना कि उसे पुनः लौटा सकते हैं।

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा।

पंच-तत्त्व यह अधम सरीरा।।

मानव शरीर प्रकृति के पंचतत्त्वों से मिलकर बना है और जीवन को आरम्भ से लेकर अंत तक चक्रवात की तरह घेरे रहता है। प्रकृति के विविध रूपों, क्रिया व्यवहारों और आकर्षणों से मानव ने कितना कुछ ग्रहण किया है, प्रकृति ने मानव को बहुत कुछ दिया है इसका अनुशीलन करने पर मानव प्रकृति का सबसे बड़ा ऋणी दिखाई देता है। प्रकृति पगपग पर मानव जीवन को प्रभावित करती है और अपने क्रिया-व्यवहारों से नित नई शिक्षा और संदेश देती है। मनुष्य प्रकृति के अगाध सौन्दर्य पर विमुग्ध होते हुए आनन्द और कौतुहल का अनुभव करता है तथा प्रकृति एक नई ऊर्जा का संचार करती है। वास्तव में प्रकृति हमारी माँ की तरह होती है जो हमें, कभी भी नुकसान नहीं पहुँचाती, बल्कि हमारा पालन-पोषण करती है।

मनुष्य प्राणी को सदैव प्रयास करना चाहिए कि प्रकृति को क्षतिग्रस्त होने से बचाए धरती पर जीवन हमेशा सम्भव हो सके।

**प्रस्तावना**

बी.ए., तृतीय सेमेस्टर

## Grandma

Grown old with all her experiences  
she looks wan and riddled  
Recounting her youthful days  
when she represents herself as  
the impeccable protagonist of her non-  
fictional tales  
a light illuminates her eyes and  
turns her pale face into bright.

Once, she was young and smart  
but from school, she was put far apart  
She herself learned to write her name  
to calculate the numbers and  
to adapt in the constantly changing domain.

She had the potential to ameliorate the world  
but she was obliged to be an obedient girl  
Sadly not to morals but to every tiny living  
matter  
because her own identity was labelled as  
"just a child-producing gender".

In an old photograph with her husband  
an army man; tall, lean and tough  
She looks short, feeble and timid  
The picture shows the impact of her lonely life  
and the pain she enclosed  
while obliterating all her wishes  
"being a wife".

**Anjali Bisht**

M.Sc., III Semester

## जीवन क्या है

ये ना सोचो जीवन एक खेल है,  
हादसों उमगों उत्साहों का मेल है।  
गिरकर उठना, उठकर चलना  
ये जीवन की रीति पुरानी है।  
इसी का नाम जिन्दगानी है।  
ये ना सोचो क्या खोया तुमने  
ये सोचो कि क्या पाया है।  
मत देखो अपने जख्मों को  
ये सोचो कि किस पर मरहम लगाया है।

**जी. एस. रावत**  
सहा. लेखाकार

## हिन्दी

सदियों पुरानी एक लम्बी कहानी हूँ मैं  
रख सको तो एक निशानी हूँ मैं  
भाषा नहीं दिलो की बोली हूँ मैं  
शब्दों का मेल नहीं काव्य का श्रृंगार हूँ मैं  
ध्वनियों का खेल नहीं संगीत का सार हूँ मैं  
काव्य ही नहीं इतिहास भी लिखती हूँ मैं  
सदियों पुरानी एक लम्बी कहानी हूँ मैं  
रख सको तो एक निशानी हूँ मैं  
आजादी के वीरों का बखान हूँ मैं  
आजादी के गीत गुनगुनाती हूँ मैं  
प्रेम का पाठ भी पढ़ाती हूँ मैं  
किताबों में नहीं दिलों में बसती हूँ मैं  
सदियों पुरानी एक लम्बी कहानी हूँ मैं  
रख सको तो एक निशानी हूँ मैं।

**नरेन्द्र राणा**

बी.कॉम., पंचम सेमेस्टर



## Memory

Sudden strike  
deep into my core  
enchanted, murmuring  
Remembering old memories

Trying to pause all my emotion  
but the emotion  
empowering my brain  
to revive past

My eyes full of mist  
but, still  
my blurred vision  
zooming a black board  
a classroom  
where, my teacher  
teaching parts of brain  
yeah, it's my science class

Learning parts of brain  
cerebrum, cerebellum and medulla  
there pound of flesh  
performing as calculator  
which gives an outcome  
equal to memory  
and those memory  
accommodate emotion

My unconsciousness to  
conscious brain  
relived all emotion again  
which I had experienced or suffered.

**Lovely**

B.A., V Semester

## विचार

सपने देखकर सजाने चाहिए  
सपनों को पूरा करे बिना मिटाना नहीं चाहिए  
सपना ही तो एक ऐसा हीरा है  
जो जिन्दगी में आगे की ओर बढ़ाना चाहिए।

साथ लेने के बजाय  
साथ देना चाहिए।  
जिन्दगी रोकने के बजाय  
बढ़ानी चाहिए  
आगे बढ़ना है तो  
सारे गम भूलना चाहिए।

साथ आपका है  
हाथ इसमें हमारा है।  
साँसे आपकी चलेगी  
धड़कने मेरी रूकेगी  
सपने आप देखोगे।  
पूरा हम करेंगे  
वाद आप करेंगे  
निभाते हम चलेंगे  
लम्हों पर एक ही नाम कहेंगे  
मम्मी पापा का नाम रोशन करेंगे

कल हम हो या ना हो  
बस हमारी थोड़ी सी सिमटी हुई यादे हो  
न जाने ये जिन्दगी क्या मोड़ ले  
ये वक्त दोबारा हो या न हो।

**ज्योत्सना**

बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर

*“Arise! Awake! and stop not until the goal is reached.”*

-Swami Vivekanand

## जीवन में कला का महत्व

जीवन में सर्वोत्तम को प्राप्त करने तथा उसका अधिक से अधिक उपयोग करने की प्रवृत्ति मानव मात्र के स्वभाव के मूल में विद्यमान है।

हम जीवन में अपने को अभावों, विषम परिस्थितियों एवं कठिनाइयों में घिरा हुआ पाते हैं। इसके फलस्वरूप जीवन को सर्वश्रेष्ठ बनाना और उसमें सुख प्राप्त करना बहुत दुर्लभ हो जाता है। जीवन जैसा भी है हमें स्वीकार करना ही पड़ता है। अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में हम यदा कदा अपने को बड़ा असहाय अनुभव करते हैं, हमें ऐसा लगता है कि जीवन में जो कुछ भी हो रहा है उसे नियंत्रित करने में हम सर्वथा असमर्थ हैं। अधिकतर व्यक्तियों के लिए जीवन सत्-संघर्ष का प्रतीक है, यह कटु सत्य है कि यदि व्यक्ति जीवन को सुखमय बनाने के लिए प्रयत्न करे तो ईश्वर उसकी सहायता करते हैं। यह वरदान धर्म, दर्शन, विज्ञान और कला के रूप में हमारे सम्मुख आता है। इनमें से प्रत्येक हमें परामर्श देते हैं कि जीवन में सर्वश्रेष्ठ एवं उत्तम किस प्रकार किया जा सकता है।

मध्य मार्ग ही कला का मार्ग है। कला के संपर्क में रहने पर हम जगत में रहते हुए भी उस संसार की बात सोच सकते हैं और उसमें रहने का आनंद लाभ प्राप्त कर सकते हैं। कला काम करने की वह शैली है जिसमें आनन्द मिलता है। वैसे तो कला का नाम लेने पर हमें ललित कलाओं, संगीत कला, चित्रकला, काव्य कला, नृत्य कला इत्यादि का बोध होता है, परन्तु ये सभी कलाये जीने के अन्तर्गत हैं या यह कह सकते हैं कि जीने की कला इन सभी की माता है। जीने की कला में सबसे अच्छी तरह सफल होना हमारे जीवन का लक्ष्य है, और सब कलाएँ इसमें योगदान देती हैं। जीने की कला के अन्तर्गत संसार के सभी साधन आ जाते हैं। दर्शन, विज्ञान, कला, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, धर्म, शिक्षा, स्वास्थ्य और दूसरी सभी विद्याएँ

जीने की कला का लक्ष्य है, सुख या आनंद की प्राप्ति है और यही लक्ष्य सभी कलाओं का है। चित्रकला का ज्ञान हमें प्रत्येक कार्य को सुन्दरतापूर्वक करना सिखाता है। जीवन में यदि हम हर काम को सुन्दरतापूर्वक करें तो हमें सुख मिलेगा और यही कला का लक्ष्य है। आज हमारा समाज कुरूप और विकृत हो चुका है। ऊँच-नीच का भाव, आपस का कलह और मनमुटाव, एक-दूसरे को क्षति पहुँचाने की भावना, एक को दबाकर स्वयं ऊपर उठने का प्रयत्न, लालच, अमानुषिक व्यवहार इतने बढ़ गये हैं कि उनका प्रतिरोध कठिन हो गया है।

देश के नेता, सुधारक, उच्च पदाधिकारी इस भयानक बाढ़ को अपने भाषणों, लेखों इत्यादि से दूर करने के लिए कटिबद्ध हैं, परन्तु इस कार्य में जो सफलता मिल रही है वह भी हमारे सामने है।

समाज की यह बर्बरता लेखों और भाषणों से दूर नहीं की जा सकती। जब तक समाज का एक-एक व्यक्ति समाज को सुन्दर बनाने में योगदान नहीं देता, जब तक समाज के प्रत्येक प्राणी को सौन्दर्य प्राप्ति का मार्ग मालूम नहीं हो जाता, जब तक उसको प्रकृति से प्रेम न हो, तब तक न उसके विचार बदलेंगे, न राष्ट्र बदलेगा। यदि सचमुच हमें अपने समाज को सुन्दर, सुगठित बनाना है, तो हमें ध्वंसात्मक वृत्तियों का दमन कर रचनात्मक वृत्तियों का स्वागत करना सीखना होगा। निर्माण के आधार पर हम अपने समाज तथा जीवन को पुनः सुन्दर बना सकते हैं।

रचना का ही दूसरा नाम कला है।।

शिवांगनी शर्मा

बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर

## कर्म की शक्ति

समर्थ है तो कर्म कर इसी में पूर्ण भाव है,  
तू उठ के अब कदम बढ़ा, क्यों बेड़ियों में पाँव है,  
जीत की ललक से ही लिखेगा फिर वृत्तांत तू  
क्या फिकर तुझे भी तब के कितने गहरे घाव है।

ये कर्म की ही शक्ति से तू और जन उठाएगा  
क्या भय तुझे किसी का है, है कौन जो सताएगा  
तू चल के राही रास्ते को आज फिर संवार दे  
ठान ले विजय की तो है कौन जो हराएगा।

विवेक से तेरे ही नर ये कारवां बढ़ेगा अब  
प्रयत्न करके हो सफल, विफल भी हो प्रयत्न कर  
ये कोशिशें ही तेरी हैं जो आज सा लाएगी  
जो संग तेरे चल रहे उन्हें भी अपने साथ हर।

समर्थ है तो कर्म कर।

प्रतीक उप्रेती

एम.ए. (अंग्रजी), तृतीय सेमेस्टर

# उत्तराखण्ड का बहुमूल्य उत्पाद: माल्टा

## *Citrus sinensis*

उत्तराखण्ड की भौगोलिक स्थिति औद्योगिक फसलों के लिए प्रसिद्ध है। विभिन्न फलों के उत्पादन में इसका स्थान अग्रणी है, इन्ही फलों में माल्टा एक महत्वपूर्ण फल है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति को बढ़ाने के साथ-साथ विटामिन-सी से भरपूर होता है। यह फल Pneumonia, Blood Pressure आंत संबंधी समस्याओं के लिए भी रामबाण है। यह Citrus प्रजाति का फल है जिसका वैज्ञानिक नाम Citrus Sinensis है। Rutaceae परिवार से संबंधित इस फल का उद्भव एशिया महाद्वीप से हुआ है। सामान्यतः यह फल समुद्र तल से लगभग 1200-3000 मी० की ऊँचाई तक उगाया जाता है।

सर्दियों के मौसम में उत्तराखण्ड के मध्य ऊँचाई तथा अधिक ऊँचाई वाले स्थान प्रायः काफी ठण्डे होते हैं। जनवरी के महीने में हिमालय क्षेत्र के निचले इलाकों जिसमें राज्य की भौगोलिक क्षेत्र के लगभग 51 प्रतिशत शामिल हैं, में सर्दियों के फल माल्टा से नवाजा है। चमोली जिले के ग्वालदम, लोल्टी, थराली, गैरसैण, पिथौरागढ़, रूद्रप्रयाग, बागेश्वर, चम्पावत तथा उत्तरकाशी आदि जगहों पर सड़क के किनारे अक्सर बेचते हुए देखे जा सकते हैं। माल्टे का जूस पौष्टिक तथा औषधीय रूप से महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ चयपचय (Metabolic) दर तथा कैलोरी जलाने की क्षमता भी बढ़ाता है।

माल्टा औषधीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण फल है इसमें एंटीसेप्टिक एंटी आक्सीडेंट गुणों के साथ-साथ गुर्दे की पथरी, उच्च कोलेस्ट्रॉल, उच्च रक्तचाप, प्रोस्टेट कैंसर तथा हृदय रोगों में भी लाभदायक पाया जाता है। डा० ललित रावत, संयुक्त निदेशक, उत्तराखण्ड चिकित्सा सेवा के एक लेख के अनुसार माल्टा का छिलका सौन्दर्य प्रसाधन में उपयोग के अलावा भूख बढ़ाने, अपच तथा स्तन कैंसर के घाव को कम करने के लिए भी उपयोग किया जाता है। औषधीय महत्व के साथ माल्टा पोषक गुणों से भी भरपूर है, इसमें ऊर्जा- 47.05 कि०के०, प्रोटीन-0.94 ग्रा०, कार्बोहाइड्रेट- 11.75 ग्रा०, वसा- 0.12 ग्रा०, फाइबर- 0.12 ग्रा०, विटामिन सी- 53.2 मिग्रा०, आयरन- 0.1 मि०ग्रा०, फास्फोरस-14 मि०ग्रा०, मैग्नीशियम- 10 मि०ग्रा०, पोटेशियम- 181 मि०ग्रा० प्रति 100 ग्राम तक पाये जाते हैं।

सर्वप्रथम माल्टे का उत्पादन चीन से शुरू होकर उत्तर पूर्वी भारत

तथा दक्षिण पूर्वी एशिया तक किया जाता है। उत्तराखण्ड में माल्टा मुख्यतः सीमावर्ती जिलों पिथौरागढ़, रूद्रप्रयाग, बागेश्वर, चम्पावत तथा उत्तरकाशी में बहुतायत उत्पादित किया जाता है। चमोली जिले के मंडल घाटी (थराली, ग्वालदम, लोल्टी, गैरसैण) तो माल्टा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। उत्तराखण्ड उद्यान विभाग में एक रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में लगभग 321477 पेड़ हैं जिसमें लगभग 16224.86 मैट्रिक टन उत्पादन किया जाता है। 2012 की एक रिपोर्ट के अनुसार सभी सिटरस फलों के उत्पादन में माल्टे का सर्वाधिक 70 प्रतिशत योगदान रहा है। उत्तराखण्ड में सिटरस प्रजाति के फलों का उत्पादन लगभग 13.90 प्रतिशत होता है जिसमें सर्वाधिक रूद्रप्रयाग जिले में उत्पादित किया जाता है। जिसमें माल्टे का 45.03 प्रतिशत योगदान होता है।

जहाँ तक प्रदेश में माल्टे व अन्य मौसमी फलों की भी बात की जाय तो अधिकतर स्थानों पर यह केवल स्थानीय बाजारों व पर्यटकों को ही बेचे जाने तक सीमित है। जिसमें प्रदेश की बिखरी जोत, कम उत्पादित क्षेत्र, कोपरेटिव फेडरेशन का न होना जैसे कारक सम्मिलित हैं। यह फुटकर बाजार में 7-8 रु० प्रति कि० ग्रा० से 15-16रु० प्रति किलो० की दर से बेची जाती है। वही हिमाचल प्रदेश में माल्टे के लिए प्रसिद्ध घाटी मडूरा में कई वर्षों से फैंव इण्डिया जैसे बड़े ब्राण्ड द्वारा माल्टे का स्थानीय स्तर पर प्रसंस्करण कर मडूरा ब्राण्ड के कई उत्पादों का विपणन किया जाता है। हिमालय प्रदेश की तर्ज पर यदि उत्तराखण्ड के इस बहुमूल्य फल का उपयोग विभिन्न उत्पादों जैसे स्कॉस जूस, मुरब्बा, जैम, फ्रूट वाइनरी तथा औषधीय उपयोग कर एक ब्रॉड विकसित किया जाय तो निसंदेह यह प्रदेश के काश्तकारों के लिए आय का अच्छा स्रोत बन सकता है। बदलते मौसम के परिवेश से भी माल्टे के फल का आकार छोटा होता जा रहा है, जिसमें भी शोध की आवश्यकता है।

डॉ.हर्षवर्धन पन्त  
रसायन विज्ञान विभाग

# ***BLACK HOLES-***

## ***The mystery behind them***

### • **What are Black Holes?**

What are black holes? If you have ever had any interest in space you must be familiar with the term black holes. But what are they? Where did they come from? What do they look like? Do they pose any threats to us?

Black holes are not real holes they are basically dents on the fabric of space time. A Black hole is a region of space time which has such high gravity that not even waves of electromagnetic nature like light can escape its field. Every Black hole is said to contain a singularity, a point of very high mass concentrated in tiny areas that wraps the space time fibre to an insane amount thus causing the very high gravitational field, for which they are known.

### • **History of Black Holes**

Since the time we entered the space age there has been a lot of hypothesis about the existence and nature of black holes. Einstein tried to explain the black holes long before one was even discovered. He did this through his theory of general relativity, which is a geometric theory of gravitation and the current explanation of gravity in modern physics. It combines the special relativity theory along with the Newton's laws of gravitation. The objects which had gravitational fields from which not even light could escape were first considered back in 18th century by John Michell and Pierre-Simon Laplace but the first modern solution of general relativity that would characterize a Black hole was found by Karl Schwarzschild in 1916, although its interpretation as a region of space from which nothing could escape was first published by David Finkelstein in 1958.

### • **How are Black holes formed**

A normal star is stable because the radiation pressure generated from its fusion reaction

exactly cancel the gravitational force which wants to collapse the star. When the star runs out of fuel, however, this balance is lost and its core begins to shrink. Now a couple of things might happen.

If the star is about the mass of our sun, its end state will be a white dwarf. There's no more fusion, only the heavier elements remain, like oxygen, carbon, etc, cooling slowly. But it does not collapse further because of electron degeneracy pressure, caused by the fact that electrons in the atoms that remain are fermions and cannot occupy the same state. So if you push these atoms together, their electrons will climb to higher and higher energy states. This pressure can exactly balance the gravitational force for stars with masses less than around 1.4 solar masses or the Chandrasekhar limit.

But if the star is more massive, it will continue to collapse beyond this state. It will fuse even heavier elements. Its protons may capture its electrons producing neutrons and in the process emitting a great deal of neutrinos in a supernova. Now the star is denser and composed almost entirely of neutrons. This time held up by the neutron degeneracy pressure, which is enough as long as the mass of the star is under 2-3 solar masses, or the Tolman—Oppenheimer—Volkoff limit in this case.

Finally, say the star is even more massive, ten times more massive than the sun, it will get to the white dwarf stage and keep collapsing. It will become a neutron star and still it shrinks. There's nothing more to hold it up, so its density grows and grows, and eventually, it collapses to the point where all the mass of the star is contained within its Schwarzschild radius, and it becomes a black hole.

That's how stellar mass black holes are created.



Can our Sun form a black hole? No, our sun just doesn't have enough mass. Once our sun runs out of fuel it will form itself into a red giant and when it has completely used up its entire fuel, it will throw away its outer rings called 'planetary nebula' and then turn into a white dwarf star.

#### • **How are Black holes detected**

Black holes are a perfect example of black body, they radiate nothing and absorb everything. So how do scientist detect them if they are basically black, surrounded by black? Stephen Hawking gave a theory that Black holes must emit some thermal radiation due to their black body nature which was named after him called "Hawking Radiation" but it is very hard to detect so scientists have to use secondary ways like the effect of black holes gravity on their surroundings which could give a hint of its presence. Sometimes the gravity can be so strong that it attracts gases and mass from stars around it thus forming an accretion disk around it.

#### • **Could a Black hole destroy Earth?**

Black holes do not wander around universe destroying planets. They are like everything else in the universe, following the laws of gravitation: having a fixed orbit. If an orbit of Black hole passes really close to the solar system, it would affect Earth which is highly unlikely. If a black hole of Sun's mass is kept at Sun's place, it would barely affect the solar system. Planets would still rotate around it the same way they do around Sun.

#### • **What happens if you fall into a black hole?**

This is one of the most interesting topics. What happens if you fall into a black hole? What will you witness?

Once you fall into the black hole, you will first enter the photon sphere; it is the outermost region of black hole where the matter falls into the black hole at half the speed of light. You can see the back of your own head in the photon sphere. Now you will enter the Ergosphere, the

place where time space bends so abruptly that you can never appear at rest (until you are moving with the speed of light), however you can still escape the black hole. You will reach the event horizon of the black hole forget about you. Now not even light can escape, now it's a point of no return with utter darkness. Then you enter the Cauchy Horizon; you are no longer travelling through space but you are travelling through time, now slowly approaching the singularity. Once you reach the singularity, two of the following things might happen: either you are crushed due to the infinite gravity of the Black hole or you are transported to alternate universe, which is of course just a theory since no one has ever actually been near the Black hole, forget about reaching and crossing the singularity.

The fear of Black holes is called Melanoheliophobia.

Black Holes are actually misunderstood. They might be our way of time travels and travels to alternate higher dimensions nobody knows about.

**Here are some facts about Black holes:** They store information in 2D not on the interior but on the surface of the event horizon that's why when two Black holes merge, their masses don't get added up but their surface area of the event horizons get added every time a black hole swallows 1 bit of information its surface area gets increased by the square of one Planck's length. Black holes are the most entropy: you can put in a region. The Black hole at the centre of our galaxy has the entropy of 1090 while the entropy of observable universe (excluding every black hole) is 10<sup>188</sup>.

There is so much yet unknown lying dormant in the darkness of space waiting for somebody to discover them. That is why the space age is one of the best ages mankind has gotten in.

**Bishwas Nautiyal**

B.Sc., I Semester

## टिहरी रियासत में सड़क परिवहन व्यवस्था

गढ़वाल का अर्थ है गढ़वाल। प्राचीनकाल में यहां छोटे-छोटे गढ़ थे जिनके गढ़पति (छोटे-छोटे राजा) होते थे। सर्वप्रथम महाराजा अजयपाल ने इन गढ़ों को जीतकर गढ़वाल राज्य की स्थापना की। तत्कालीन गढ़वाल राज्य की सीमाएं देहरादून, हरिद्वार तथा सहारनपुर जिलों के कुछ भू-भागों तक फैली हुई थी। इतिहासकारों के अनुसार सन् 1803 में गोरखों ने गढ़वाल राज्य पर आक्रमण कर इस पर कब्जा कर लिया। सन् 1815 में गढ़वाल के तत्कालीन राजा सुदर्शन शाह ने अंग्रेजों की मदद से गोरखा फौजों पर आक्रमण करके उन्हें गढ़वाल राज्य की सीमा से बाहर भगा दिया। सिंगोली की सन्धि के अनुसार राजा सुदर्शन शाह को तत्कालीन गढ़वाल राज्य का पश्चिमी भाग (अर्थात् वर्तमान टिहरी, उत्तरकाशी जिले) दिये गये तथा अंग्रेजों को पूर्वी गढ़वाल (अर्थात् पौड़ी, चमोली, रुद्रप्रयाग व देहरादून जिले) दिये गये। राजा सुदर्शन शाह के आधीन गढ़वाल राज्य टिहरी गढ़वाल कहलाया और अंग्रेजों के आधीन गढ़वाल राज्य ब्रिटिश गढ़वाल कहलाया।

उत्तराखण्ड राज्य में धार्मिक यात्राओं का इतिहास अत्यधिक प्राचीन है। धार्मिक यात्राओं के लिए उत्तराखण्ड राज्य में पगडण्डियों और उबड़-खाबड़ दुर्गम रास्तों का प्रयोग किया जाता था। इन बीहड़ मार्गों पर सक्षम, बलवान एवं साहसी व्यक्ति ही यात्रा कर सकते थे। गढ़वाल के मार्गों में हरिद्वार से ऋषिकेश, देवप्रयाग होकर बदरीनाथ जाने वाला मार्ग सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। गोरखा शासन काल में और गढ़ राज्य के शासकों के शासन काल में श्रीनगर से टिपरी, चमवा खाल होकर देहरादून जाने वाले मार्ग को छोड़कर गंगा पार के मार्गों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। महाराजा सुदर्शन शाह के शासन काल के आरम्भ में टिहरी से देवप्रयाग, ऋषिकेश, गंगोत्री, यमनोत्री आदि को जोड़ने वाले सभी प्रमुख मार्ग उबड़ खाबड़ थे। टिहरी राज्य के शासकों ने इन मार्गों के मध्य में पड़ने वाले झूलों एवं सागाओं की मरम्मत करवाई तथा अनेक स्थानों पर विश्राम गृहों पर निर्माण भी करवाया। महाराजा कीर्तिशाह ने राज्य के प्रमुख मार्गों में सुधार किया, झूलों की मरम्मत करवाई और मुख्य मार्गों के मध्य में डाक बंगलों और धर्मशालाओं की स्थापना करवाई।

गढ़ राज्य के पश्चिमी भाग में देहरादून से मसूरी के डाण्डे को पार करके एक मार्ग धरासू, बड़ा हाट होकर गंगोत्री पहुँचाता था। लण्डौर, डुण्डा, बड़ा हाट, मनेरी, भटवाडी, भैरोंघाटी और गंगोत्री इस मार्ग के मुख्य पड़ाव थे। गंगोत्री मार्ग पर भैरों घाटी में जाड़ गंगा को झूले के द्वारा पार करने का साहस बिरले यात्री ही कर पाते थे। महाराजा प्रताप शाह ने राजधानी टिहरी को नवीन स्वरूप देने का

निर्णय लिया तो सड़कों के निर्माण की ओर विशेष ध्यान दिया गया। टिन की चद्दरें, लोहे के गर्डर आदि को राजधानी में पहुँचाने में लिए सड़कों के निर्माण एवं सुधार की ओर ध्यान दिया गया। सन् 1920 में एक यातायात विभाग की स्थापना भी की गई तथा आवश्यक सामग्री का ढुलान करने के लिए राज्य की ओर से घोड़े खच्चर आदि खरीदे गये। महाराजा कीर्ति शाह के राज्य काल में महाराजा प्रतापशाह द्वारा स्थापित यातायात विभाग की सेवाओं में निश्चित दर से ढुलान की राशि चुकाने पर सबके लिए सुलभ कर दी गई। यातायात विभाग केवल मुख्य और सुरक्षित मार्गों पर ही अपने पशुओं से ढुलान करता था। इन मार्गों के निकट के गांवों के प्रत्येक परिवार से प्रतिवर्ष एक रुपया लेकर उन्हें भार ढोने के कार्य से मुक्त किया जाता था। जिन मार्गों पर यातायात विभाग के पशु सामान नहीं ढोते थे उन मार्गों पर मनुष्यों द्वारा सामान ढोया जाता था। महाराजा नरेन्द्र शाह के शासन काल में मुख्य मार्गों को सुधारने एवं उन्हें मोटर चलने लायक बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया गया।

महाराजा नरेन्द्र शाह के पूर्वजों द्वारा बसाये गये नगर टिहरी, प्रताप नगर तथा कीर्ति नगर तक पहुँचने के लिए मोटर मार्ग उपलब्ध नहीं थे। वहां आने जाने के लिए ऋषिकेश से घोड़ों द्वारा या पालकी द्वारा या पैदल यात्रा हो सकती थी। महाराजा नरेन्द्र शाह ने ऋषिकेश से दस मील की दूरी पर स्थित उडाथलि नामक गांव के पास पांच हजार फीट की उंचाई पर अपने नाम से नरेन्द्र नगर बसाने का निर्णय लिया। इस नगर का निर्माण कार्य सन् 1921 में प्रारम्भ हुआ और इसके साथ ही साथ नरेन्द्रनगर ऋषिकेश मोटर मार्ग का कार्य भी आरम्भ कर दिया गया। टिहरी से ऋषिकेश को जाने वाले पैदल मार्ग को भी चौड़ा करके घोड़े और खच्चरों के योग्य बनाने का कार्य प्रारम्भ किया गया। कुछ समय पश्चात् नरेन्द्र नगर से बने मोटर मार्ग को टिहरी नगर तक पहुँचा दिया गया।

सन् 1937-1938 में ऋषिकेश से देवप्रयाग वन मोटर मार्ग का निर्माण किया गया तथा कुछ समय पश्चात् इसका विस्तार कीर्तिनगर तक किया गया। सन् 1940 तक टिहरी राज्य में उपलब्ध सड़कों की लम्बाई नीचे तालिका में दी गई है।

### सन् 1940 तक टिहरी राज्य में उपलब्ध सड़कों की कुल लम्बाई का विवरण (मीलों में)

क्र. सं.	स्थान	दूरी
1	ऋषिकेश-नरेन्द्रनगर-टिहरी मोटर मार्ग	53
2	ऋषिकेश-देवप्रयाग-कीर्तिनगर मोटर मार्ग	63
3	टिहरी-मसूरी-खच्चर रोड़	40
4	अन्य कच्ची सड़कें (बटिया)	844

कौडिया, धनोल्ती, डांगचौरा, धरासू, बड़ाहाट, भटवाड़ी, हरसिल, बड़कोट, पुरोला, कंकोट, नागनी, चम्बा, टिहरी, प्रतापनगर, नरेन्द्रनगर और कीर्तिनगर में टिहरी राज्य के बंगले विद्यमान थे। महाराजा मानवेन्द्र शाह जो टिहरी राज्य के अन्तिम नरेश थे के शासन काल में टिहरी से धरासू तक मोटर मार्ग का निर्माण किया गया। इन्हीं के शासन काल में मलेथा से कदूखाल तक सड़क बनी। भारत, चीन युद्ध 1962 के उपरान्त टिहरी गढ़वाल में सड़कों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया तथा सड़क मार्ग को धरासू से उत्तरकाशी तक पहुँचा दिया गया। पुरानी टिहरी नगर में भागीरथी नदी के ऊपर एक लोहे के पुल का भी निर्माण किया गया।

### टिहरी गढ़वाल मोटर ऑनर्स कॉरपोरेशन (प्रा0 लि0) की स्थापना

ऋषिकेश से टिहरी मार्ग पर पहली बस सन् 1942 में चली थी। यह लकड़ी के स्पोक वाले ठोस पहियों की गाड़ी विलिज ओवर बैंड थी। इसमें छः सवारियों की बैठने की व्यवस्था होती थी तथा यह गाड़ी 35 मन सामान ले जाने में सक्षम थी। ऋषिकेश से टिहरी पहुँचने वाली पहली बस को गल्लीराम बैलवाल ने चलाया था। इस गाड़ी को ऋषिकेश से टिहरी पहुँचने में आठ घण्टे से अधिक का समय लगता था। बाद में इस मार्ग पर मोटर गाड़ी का प्रयोग लाला जगत प्रसाद जैन द्वारा डाक दुलान के लिए किया गया। उनके द्वारा डाक को ऋषिकेश से राजदरबार टिहरी तक पहुँचाया जाता था। इसके अतिरिक्त राजदरबार की आवश्यकताओं की वस्तुओं को भी लाला जगत प्रसाद जैन अपनी मोटर गाड़ी के माध्यम से टिहरी पहुँचाया करते थे। राजकीय डाक दुलान की ऐवज में महाराजा नरेन्द्रशाह द्वारा लाला जगत प्रसाद जैन को प्रतिमाह रुपये 500/- अदा किये जाते थे।

कुछ समय पश्चात ऋषिकेश टिहरी मार्ग पर आवागमन के लिए लाला जगत प्रसाद जैन द्वारा जगत बस सर्विस की स्थापना की गई। जिसमें कुल गाड़ियों की संख्या 6 थी और ये गाड़ियाँ ऋषिकेश टिहरी के मध्य चला करती थीं और यात्री और माल को ढोने का कार्य किया करती थी। सेवरलेट गाड़ी छः सिलिण्डर की होती थी तथा इसमें 16 सीटों की व्यवस्था होती थी। सेवरलेट के अलावा बाद में सन् 1944 में फॉरगो मॉडल की मोटर गाड़ी भी चलने लगी थी। कुछ समय पश्चात् बेडफोर्ड मॉडल की मोटर गाड़ियाँ भी चली। उस समय फॉरगो मॉडल की मोटर गाड़ी का मूल्य रुपये 12000/- था और इस गाड़ी को लखनऊ से मंगवाया जाता था।

ऋषिकेश निवासी श्री हीरालाल अग्रवाल जी ने टिहरी गढ़वाल मोटर ऑनर्स कॉरपोरेशन की स्थापना सन् 1953 में की। इस मोटर कम्पनी का मुख्यालय ऋषिकेश में खोला गया। कम्पनी के संस्थापक सदस्यों में श्री हीरालाल अग्रवाल, श्री शिव प्रसाद पैन्थूली, श्री

दीपचन्द जैन, श्री रूपराम बैलवाल, मास्टर पुरुषोत्तम दत्त, श्री दयाराम बैलवाल, श्री गोविन्द सिंह जमादार के नाम प्रमुख थे। श्री शिव प्रसाद पैन्थूली कम्पनी के प्रथम जनरल सेक्रेटरी थे। स्थापना के समय कम्पनी के पास 16 सीटों वाली 25 मोटर गाड़ियाँ थी जिनकी आय पर कमीशन प्राप्त करके कम्पनी अपना कार्य चलाती थी। उस समय कम्पनी की गाड़ियाँ मुख्यतः ऋषिकेश-देवप्रयाग-कीर्तिनगर मार्ग पर और ऋषिकेश-नरेन्द्रनगर-चम्बा-टिहरी मार्ग पर चला करती थी। टिहरी में भागीरथी पर झूला पुल था जिसका प्रयोग पैदल आने जाने के लिए किया जाता था। अतः ऋषिकेश से आने वाली मोटर गाड़ियाँ भागीरथी को पार करके नगर में प्रवेश नहीं करती थीं और भागीरथी नदी के इस पार ही रुकती थीं। उस स्थान को पुराना मोटर अड्डा नाम से जाना जाता था।

श्री हीरालाल अग्रवाल जो कम्पनी के प्रथम अध्यक्ष तथा संस्थापक थे, ऋषिकेश टिहरी मार्ग पर मोटर गाड़ियाँ चलाने की ऐवज में महाराजा नरेन्द्रशाह को पाँच सौ रुपये प्रतिमाह अदा करते थे तथा राजदरबार की डाक दुलान का कार्य निःशुल्क किया जाता था। उस समय राजा ने चार गाड़ियों को डाक परमिट प्रदान किये थे। सन् 1952 में कीर्तिनगर और श्रीनगर को जोड़ने के लिए अलकनंदा नदी पर झूला पुल का निर्माण किया गया।

सन् 1936 में ऋषिकेश में अमेरिकन कम्पनी स्टेण्डर्ड वेक्यूम का पहला पेट्रोल पम्प श्री दीपचन्द जैन द्वारा खोला गया था। ऋषिकेश में दूसरा पेट्रोल पम्प 1953 में खोला गया। सन् 1950 से पूर्व शेवरलेट, फोर्ड तथा डायमण्ड मोबाइल गाड़ियों का ही मुख्यतः चलन था। सन् 1950 के दशक में वेलफोर्ड, क्यूडोडा तथा कोमर आदि गाड़ियाँ भी चलीं। बाद में भारतीय कम्पनी टाटा द्वारा जर्मनी की कम्पनी मर्सिडीज के सहयोग से गाड़ी का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया गया और धीरे-धीरे टाटा द्वारा निर्मित गाड़ियाँ ही कम्पनी के अन्तर्गत चलने लगीं।

दिनांक 14.03.1953 को कम्पनी का पंजीकरण कानपुर (उत्तर प्रदेश) में करवाया गया और इसे पंजीकरण संख्या 62 प्राप्त हुई। कम्पनी का गठन भारतीय कम्पनी अधिनियम 1913 के अन्तर्गत किया गया था तथा पंजीकरण संख्या हेतु कम्पनी ने मेमोरेण्डम और आर्टीकल्स ऑफ एसोसिएशन प्रस्तुत किये थे, जिसमें कम्पनी के कार्यों तथा अन्य गतिविधियों की जानकारी दी गई थी।

मेमोरेण्डम ऑफ एसोसिएशन पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति निम्न थे- श्री शिव प्रसाद पैन्थूली, श्री दीपचन्द जैन, श्री रूपराम बैलवाल, मास्टर पुरुषोत्तम दत्त, श्री दयाराम बैलवाल, श्री गोविन्द सिंह जमादार तथा श्री हीरालाल अग्रवाल। इन लोगों को कम्पनी का संचालक माना गया। वर्ष 1957 तक कम्पनी द्वारा यात्री और माल दोनों के दुलान का कार्य किया जाता था। उस समय कम्पनी के पास

लगभग 26 ट्रक थे। सन् 1957 के पश्चात कम्पनी द्वारा माल ढुलान का कार्य बंद कर दिया गया। सन् 1955 में ऋषिकेश में सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी के कार्यालय की स्थापना की गई थी। पांचवे और छठे दशकों में कम्पनी में 24 सीटर या 28 सीटर बसें चला करती थी जिसमें अपर तथा लोअर क्लास होती थी। अपर क्लास में सात सीटें तथा लोअर क्लास में 17 या 21 सीटें होती थी। इन बसों को 37 मन माल ले जाने की भी अनुमति होती थी। सन् 1958 में कम्पनी के जनरल मैनेजर श्री शिवप्रसाद पैन्थूली व कम्पनी के संचालकों के मध्य आपसी विवाद हो गया जिसके उपरान्त श्री शिवप्रसाद पैन्थूली ने सन् 1958 में कम्पनी से अलग होकर एक अन्य परिवहन कम्पनी का गठन यातायात के नाम से किया।

आठवें दशक के प्रारम्भ में कम्पनी के अन्तर्गत चलने वाली बसों में लोअर व अपर क्लास की व्यवस्था समाप्त हो गई और उसके स्थान पर फ्रंट फैंसिंग वाली एक समान सीटों की व्यवस्था की गई। बसों में माल ढुलान का कार्य भी बंद कर दिया गया। अब बसों में 42 लोगों के बैठने की व्यवस्था होती है। वर्तमान में कम्पनी के नियंत्रण में चलने वाली बसों की संख्या 572 है।

#### सन्दर्भ

1. डॉ० ध्यानी रामप्रसाद, गढ़वाल हिमालय की आर्थिक समस्याएँ एवं नियोजन, पृष्ठ संख्या - 252।
2. दौर्गोदत्ती - नरेन्द्रवंश काव्य, पृष्ठ संख्या-183।
3. तदैव।
4. तदैव।

5. डबराल शिवप्रसाद, उत्तराखण्ड का इतिहास भाग - 6, पृष्ठ संख्या - 252।
6. पूर्व लेखाधिकारी, टिहरी गढ़वाल मोटर ऑनर्स कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड से मौखिक वार्ता के आधार पर।
7. श्री अशोक चन्द जैन पुत्र स्वः श्री दीप चन्द जैन (पूर्व डारेक्टर टिहरी गढ़वाल मोटर ऑनर्स कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड) से मौखिक वार्ता के आधार पर।
8. लेखाधिकारी, टिहरी गढ़वाल मोटर ऑनर्स कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
9. तदैव।
10. श्री अशोक चन्द जैन पुत्र स्वः श्री दीप चन्द जैन (पूर्व डारेक्टर टिहरी गढ़वाल मोटर ऑनर्स कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड) से मौखिक वार्ता के आधार पर।
11. लेखाधिकारी, टिहरी गढ़वाल मोटर ऑनर्स कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
12. तदैव।
13. टिहरी गढ़वाल मोटर ऑनर्स कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड के भूतपूर्व कर्मचारियों से मौखिक वार्ता के आधार पर।
14. लेखाधिकारी, टिहरी गढ़वाल मोटर ऑनर्स कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

डॉ० महेश कुमार  
असिस्टेंट प्रोफेसर  
अर्थशास्त्र विभाग



## *Urticaria: A Common Skin Problem*

Urticaria is a common skin problem that affects people in the sudden appearance of red rashes on the skin which may be totally unannounced and take one by surprise. The moment one feels some itching; one is inclined to scratch the part and immediately after scratching the part; red rashes or wheals appear on the skin. These rashes or wheals may itch or burn and may stay for some time after which they settle down. In medical parlance, this condition is known as "Urticaria"

Urticaria or 'hives' as known in English is derived from a Latin word 'Urtica' which means 'nettle'. Though urticaria has nothing to do with nettles except that it causes itching and stinging as caused by the weeds of the nettle family, characterized by the development of red rashes that cause itching, burning and stinging; urticaria can crop upon any areas of the skin, including the face, arms, lips or eyes. The red wheals may be small in size and separated from each other by areas of normal skin or may coalesce together to form a single large area of eruption. When an allergic reaction occurs, the body releases a protein called, histamine. When histamine is released, the tiny blood vessels known as capillaries leak fluid. The fluid accumulates in the skin and causes rashes on the body. Hives affect around 20% of people at some time in their life. It is not contagious.

Some known causes of urticaria are exposure to cold, heat, sun, alcohol, drugs, exercise and emotional stress. The urticaria caused by minor pressure or scratching of the skin is 'dermographism'. Some people get hives on going out in the sun known as 'Solar urticaria'. Exposure to cold can also cause urticaria in some patients. In extreme cases of allergy, wheezing respiration and unconsciousness may accompany the skin symptom 'cholinergic urticaria'; type of urticaria triggered by exercise, heat or motions. In over half of all cases, people never find the exact cause. The best treatment for hives is to identify the trigger, but this is not an easy task.

Applying coconut oil or vaseline usually help in relieving the itching and is better source of action as compared to scratching with nail which can expose the skin to further infection by bacteria and viruses.

Commonly used homeopathic medicines for treatment of urticaria are Apis Mell, Natrum Mur, Mezereum, Dulcamara and calcarea carb. It is very important that the right medicines should be selected after a thorough study of the symptoms.

**Gauri Singh**  
M.Sc., II Semester

*"Where there is righteousness in the heart, there is beauty in the character. When there is beauty in the character, there is harmony in the home. When there is harmony in the home, there is order in the nation. When there is order in the nation, there is peace in the world."*

-A. P. J. Abdul Kalam

## स्वच्छता के पथ पर

**“स्वच्छता अर्थात् अन्तर्निहित अन्तःकरण से उत्पन्न अच्छाई का रोपा हुआ पौधा”**

इस विषय में कुछ बनावटी लेख अथवा कल्पनाओं की अपेक्षा आपको जीवन के एक बीते हुए मोड़ की ओर एक यात्रावृत्त से साक्षात्कार करवाने की अनुमति चाहता हूँ। यूँ तो स्वच्छता शब्द की याद बचपन की वो पाठशाला की ओर जीवन की डोर मोड़ लिए चलती है, “मास्टर जी की वो छड़ जो लम्बे नाखूनों को लेकर श्रवण मास की वर्षा की भाँति बरस पड़ती थी। साथ ही बिना हाथ धुले मित्रों संग भोजन पर टूटने की वो रीति। क्या दिन थे वो जब पिता जी की डांट खाते माँ की वो बातें बदलने की कला।”

चंद दिनों पहले की बात है कि मित्रों संग एक अत्यन्त ही रमणीय स्थान पर जाने का अवसर मिला। मन को मंत्र मुग्ध, मदहोश करने वाली वे राहें वह पथ निराला ही था। ख्वाबों भरी मन की उड़ान मानो गगन को छुए जा रही हो। यह रमणीय व मनोरम स्थान हिमालय शिवालिक की घाटियों में घने वनों के मध्य बसा हुआ नाम है खलिंगा। वीरों की तपोस्थली प्रेरणा स्रोत यह एक स्वास्थ्यवर्धक, जलवायु एवं आस्था के केन्द्र के रूप में पर्यटन तथा धर्माटन के रूप में विश्वविख्यात है। परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह दयनीय एवं बेहद जर्जर अवस्था में खुद को डूबा हुआ पाता है। स्वास्थ्यवर्धक जलवायु की अपेक्षा धूम्रपान, मदिरापान एवं काम वासना की ओर इस स्थान का परिचय मोड़ा जा रहा है व इसकी नींव रखने वाला अन्य कोई नहीं अपितु राष्ट्र का भविष्य निर्माता नवयुवक ही है। हद तो यह हो गई कि काम वासना में डूबा हुआ नवयुवक समाज सुधार व बदलाव को बेड़ा उठाये, लडखड़ाये कदमों लिये खड़ा है और इसकी गवाही वीरों की तपोस्थली में स्मारक पर लगे चुनावी पोस्टर चीख-चीख कर बयों कर रहे हैं।

“दूध वालों घर-घर जाए पुकारे

घर जड़ सब वासना को पुतला है हारे।”

भोर होने को है पथिक अपने बसेरों को निकल पड़े हैं। मन हुआ कि परमानंद की अनुभूति जो उस हृदयस्पर्शी स्थान पर हुई उस ओर पुनः लौट चलें। सवेरे-सवेरे एक मित्र के संग साथ ही रास्ते में एक झाड़ू व कुछ खाने को लिए चल पड़े। धूप के अभाव में तस्वीरें लिए बिन अपने पड़ाव पर पहुँच थोड़ा ठहरे तो अपने चारों ओर धूप की हल्की किरणें वृक्षों की विशाल शाखाओं के मध्य नव-जीवन की आशाओं की बेल से नव अंकुरित पौधों को जीवन की डोर से जोड़े जा रही थी। सर्वप्रथम चारों कोनों को देख व तत्पश्चात स्मारक के मुख्य

भाग की व फिर पिछले भाग की सफाई की। थोड़े समय बाद झाड़ू की सीखें एकाएक टूटी जा रही थी ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार की यहाँ के संरक्षकों के वे संकल्प एवं प्रतिबद्धता के वे वचन बिखर गये थे। वृक्ष की टहनियों से एक झाड़ू (टल्लू) बनाया साथ ही लट्टे व जूतों की नोक व नाखूनों से छोटे-छोटे काँच के कणों को समेट व किनारों के भीतरी कोने भी साफ किये। उन नन्हें कणों की चमक से चित्त मन प्रफुल्लित व जीवन प्रकाशमय हो उठा था। एक घटना प्रसंग जो हो पड़ा। एक नटखटी बाल टोली जो कि दीवार पर बैठ धूम्रपान का सेवन करने जा रही थी कि वो अपने आस-पास स्वच्छता को नहीं मानो अपने अन्तर्मान से साक्षात्कार कर बैठे हो तथा तत्पश्चात उन्होंने धूम्रपान सामग्री को परिसर से बाहर की ओर फेंक दिया। शरीर पर लगी मिट्टी की महक ममता के आँचल सी अनुभूति प्रदान कर रही थी।

गर्भ गृह में प्रवेश करते ही मित्र भी मदद को आ खड़ा हुआ। अंधकार में डूबा हुआ यह गर्भ गृह उस सेवक के जीवन के उस मोड़ की ओर ले चला जहाँ उसे भी जीवन में घुटन महसूस होने लगी। विद्यालय अर्थात् माँ सरस्वती के मंदिर के वे शुरूआती दिन जहाँ एक सेवक अथवा सैनिक अपने जीवन को राष्ट्र सुरक्षा के लिए समर्पित एवं प्राणों तक को न्यौछावर करने को सरहद पर हर क्षण खड़ा रहता है। उनकी आँखें आज नम हैं व भर आई हैं। आपके मन में सही प्रश्न उठा है, जी निश्चित ही चिंता का विषय व गंभीर कारण है। वह सरहद से लौट आ स्वास्थ्य केन्द्रों, विद्यालयों एवं बैंको इत्यादि कई संस्थानों में भटके हुए लोगों को सही राह-दिशा में अवगत करा रहा है। आज इनका रोपा हुआ पौधा ही इन्हें काँटे चुभो गया। सलाम प्रणाम तो दूर विद्यार्थी विषय ज्ञान संबंधित गुरु को ही प्रणाम करता है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार की एक जजमान अपने कुल पुरोहित के प्रति निष्ठा एवं आदरभाव प्रकट करता है।

कथन-

“शराब की दुकान नहीं खुलेगी

शराब की दुकान नहीं खुलेगी (नारेबाजी)”

- आन्दोलन सामाजिक, मानसिक स्वच्छता के पर्यायी है, यह गंभीर घटना ही आन्दोलनों की विफलता का मूल कारण है।

एक माली आया एवं सफाई कर्मचारी जो अपने आप को जहरीले एवं गन्दगी में डूबों हमारे भविष्य निर्माताओं की पीढ़ी का ख्याल, रख-रखाव व ध्यान ठीक उसी प्रकार रखते हैं जिस प्रकार कि वे बाग में नवअंकुरित नन्हें पौधों का ख्याल रखते हैं। इन्हें प्रणाम तो छोड़ो ठीक से उन संग दो पल दो क्षण ठहरना भी अपने स्वाभिमान को ठेस अथवा चुनौती समझ बैठता है। यह प्रसंग शिक्षा के गिरे हुए स्तर

को इंगित करता है। चंद गण सफाई के दौरान अन्य लोगों की नग्न तस्वीरें लेने को व्याकुल हो उठे थे। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार की वीर अमर शहीदों की पुण्य तिथि के शुभ अवसर पर कुछ गणमान्य वीरों से भावनात्मक जुड़ाव तो दूर इनकी तस्वीरों को कम तस्वीरें लेने वालों की ओर मुस्कुराहट भरी निगाहों से टुकुर-टुकुर ज़्यादा देखते हैं एवं पुष्पार्पण मालाएँ तो चेहरे पर ही चढ़ा जाते हैं। यह एक सभ्य समाज का सूचक नहीं है।

जी आप इन देश भक्तों के जीवन को तो पढ़ें  
“आप रम जाएंगे  
जीवन साकार हो उठेगा।  
जी श्वासों आपकी थम जाएंगी।”

शिवपुत्र अनुराज  
बी.ए., चतुर्थ सेमेस्टर

## स्वच्छता चालीसा

श्री पर्यावरण सरोज निज मनु करो सुधारि।  
शुद्ध पवन, जल, भोजन, भवन जो दायक फलचारी।।  
जय स्वास्थ्य, ज्ञान गुण सागर, सबका स्वास्थ्य, इक लोह उजागर।  
साफ शरीर, विराज सुवेसा, तेरी काया रहे, स्वस्थ हमेशा।  
गन्दा पानी, विकार सतरंगी, शुद्ध पानी, बना दे चंगी।  
छिड़के दवा, पानी नहि ठहरावे, कीट-मच्छर, निकट नहि आवै।  
शुद्ध पवन, अतुलित बल धामा, प्रकृति पुत्र, अमर तेरा नामा।  
जिन हाथों से पौधे लगावे, बाके काँधे, स्वास्थ्य विराजे।  
घनी छाया, महा जग बन्दन, ईश सुमन, प्रकृति के नन्दन।  
निरोग स्वास्थ्य, गुणी अति चातुर, पर्यावरण शुद्ध, बनावे आतुर।  
गन्दे हस्त नख, दस्त लगिया, ओ.आर.एस. घोल, पिवाले बसिया।  
सूक्ष्म कीट, आँख न दिखावा, विकट रूप मानव, तनु धावा।  
जो लगावे शिशु को टीका नियमित, पिलावे पोलिया की दवा।  
दूर भागे तपेदिक, तान, पोलियो, गलघोटू, कूकर खाँसी रोग आदि।  
भीम रूप धरि, रोग बढ़ावै, मानव जीवन में, दुःख लावै  
करै रोक-थाम, मानव सुख पावै, बीमारी कभी, खाँसी रोग आदि।  
स्वस्थ पोषण, करे बढ़ाई, करो कभी ना, कुपोषण भाई  
सहस्र वदन, तुम्हरो जस गावै, सब जन संतुलित, भोजन पावै।  
रोकथाम करो, मिल सब कोय, भागे रोग, निरोग सब होय।  
स्वास्थ्य मंत्र, मानव सब माना, होई सुखो, बहु विधि कल्याणा।  
जो मानव, स्वास्थ्य सुख चाहवै, पिये साफ पानी, युक्त आहार खावै।  
स्वच्छ वातावरण, में रहे शरीरा, नासै रोग, हरे सब पीरा।  
सब सुख लेह तुम्हारी शरणा, पर्यावरण रक्षक, काहूँ को डरना।  
जो यह पढ़े नित, स्वास्थ्य चालीसा, होईयुक्त, रोगों से वीरा।  
शुद्ध पानी, शुद्ध भोजन रखे स्वस्थ शरीरा।  
उत्तम स्वास्थ्य क्षेत्र ही बसहु पर्यावरण सूरभूप।।

मीमांशा कैन्तुरा  
बी.ए., प्रथम सेमेस्टर

## A Piece of Wood

A piece of wood  
only imbibe till  
it catches the flame  
burning in fire  
it ruins the beauty of piece

Burning into ashes  
leaving behind its  
dark spirit, fossil  
Now, no light of spirit  
Everything is ruined  
but my soul  
could remember  
the beauty of lumber  
it was thin flat  
cut into long  
straight piece  
Hidden behind the  
big stone

But, suddenly  
few evils in  
Giant forest blemish  
the beauty of forest

It took the breath  
of beauty  
and my soul burns  
into ashes.

Lovely  
B.A., V Semester

## *Films Versus Reality*

Nowadays, we are talking about equality, liberty development and others. These words directly reflect the image of an independent country. Independent country means, each citizen either, male or female will be independent or free, but reality is far away from it.

Equality and liberty- these two words have no meaning for women. Women do not get respect and protective environment. Women are continuously falling in a gulf of restriction.

Everyday press is busy holding debates on communal matters Hindu - Muslim affair etc but no one thinks about making programme regarding improvement in women's condition.

Political parties are busy in serving their personal interests and vote bank. But we don't ask them "What has the government done for women safety".

People are more conscious about social networking rather than real life. Recently, I noticed that some people went on a massive strike and spread violence demanding to ban the movie "Padmavat".

People claim that this movie shows disrespect to their religious mother Goddess "Padmavat". People were demanding to ban this movie. But after this act when "Asifa Rape Case" happened, nobody raised voice, nobody demanded to stop it. People didn't agitate for the safety of girls, nobody went on strike like they did for 'Padmavat'.

I think it is enough to say, how pitiable it is... I have clearly understood, our society cares more for 'movie scenes' than for a living human.

Sharing my personal experience, I observed gender discrimination in an educated family, in which both brother and sister had love affair.

Parents accepted their son's relationship despite the fact that girl was not a good match for their son. On the other hand, their daughter's relationship was rejected by the parents, though the boy had excellent qualities.

Parents gave their decision in a single line "What will society say about a girl's love marriage?"

At every step of life, women are directly or indirectly humiliated in society.

Observing my surroundings and considering myself mature enough, I have given my views on that 'bitter truth', I know my views are a bit rebellious and it can hurt the orthodox but it is so pitiable.

At last, to improve the women's conditions first we must change our mindset. "If you can't treat women as Goddess, respect women only just like human beings".

Government should take steps regarding women safety and make more stringent punishment for rapists.

Punishment should be hard enough until rapist will be shamed on crime.

Death is not enough for those who have no heart. They should be shamed thoroughly and made to realise the heinousness of their act.

**Mehjabeen**

B.A., V Semester



## Perfection is not Perfect

Perfection is not beautiful

If the path of Earth had been perfectly circular  
We might not have all the beautiful seasons

If the moon had been perfectly bright  
We couldn't have seen him smile

If the trees had perfect shapes  
They mightn't have had those shades

If river had perfectly straight course  
It would have affected the crops

If the rain fell perfectly all over the place  
We would not have seen the cactus who  
stands with grace

If you had a perfect vision  
We might not have had this confusion

If you could understand what I say  
You would have not left me half way

If you had perfectly dissolved into me  
Then no one could have inferred who are we

If the world around you had been perfect  
How would you know about your own defect?

**Ayesha Praveen Siddiqui**  
M.A. (English), III Semester

## अब वो दिन बीत गये

अब वो दिन बीत गये,  
जब सब यूँ ही रहा करते थे।

कभी यहाँ तो-कभी वहाँ,  
सब संग में घूमा करते थे।

गली, चौराहों, खेतों पर सब संग दौड़ा करते थे,  
कूड़ा-गोबर, मच्छर-मक्खी संग में बैठा करते थे।

सुबह-सुबह सब लोग हाथ में,  
बोतल-डिब्बा लेकर फिरते थे,  
झाड़ी, जंगल, खेत, नदी को अक्सर ढूँढा करते थे।

मोदी जी स्वच्छता नाम का अभियान स्वजल गाँव में लेकर आया  
जिसने सबको स्वच्छता का मूल मंत्र बतलाया।  
निर्मल ग्राम बनाने का सपना सबको दिखलाया।

अब कोई न डिब्बा ढूँढ़ेगा, और न कोई जंगल जाएगा,  
लिया प्रण अब गाँवों ने कि घर-घर शौचालय बनवायेंगे।

और अपने गाँव, देश का सौन्दर्य बढ़ायेंगे,  
भारत चलता गाँवों से इस बात को सच कर दिखलायेंगे।

निर्मल भारत अभियान को अब हम घर-घर तक पहुँचायेंगे,  
निर्मल भारत का सपना, अब मिलकर पूर्ण कर दिखलायेंगे।

**कु० मीमांशा कैन्तुरा**  
बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

*"Truth is by nature self-evident. As soon as you remove the cobwebs of ignorance that surround it, it shines clear."*

-Mahatma Gandhi

## बी. आर. अम्बेडकर

डॉ. अम्बेडकर जैसे विचारशील, दूरदर्शी, मनीषी चिंतक और महान व्यक्तित्व का प्रभाव धीरे-धीरे समाज में बढ़ रहा है। क्योंकि वे बहुत गहरी पड़ताल और छानबीन करते हैं। उनकी वैचारिकी ने भारत में धीरे-धीरे ही सही लेकिन एक व्यवस्थित एवं क्रांतिकारी परिवर्तन क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित किया है। उनके अनुभव ठोस और सटीक है।

डॉ. अम्बेडकर एक ऐसा लोकतांत्रिक समाज रचना चाहते थे जिसमें समानता, स्वतंत्रता और भाईचारा का विचार दर्शन हो और ऐसा दर्शन और व्यवहार शास्त्र जिसकी कोई कल्पना नहीं है। यह हमारी धरती पर ही निहित है।

अम्बेडकर का जन्म ब्रिटिश भारत के मध्य प्रांत में स्थित नगर सैन्य छावनी महू में हुआ था। वे रामजी मालोजी और भीमाबाई की 14वीं व अंतिम संतान थे। उनका परिवार मराठी और वे आंबडवे गांव जो आधुनिक महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में है। वे हिन्दू महार जाति से संबंध रखते थे, जो अछूत कहे जाते थे और उनकी आर्थिक स्थिति के साथ भेदभाव किया जाता था। डॉ. भीमराव अम्बेडकर के पूर्वज लंबे समय से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में कार्यरत थे और उनके पिता भारतीय सेना की मऊ छावनी में सेवा में थे और यहाँ काम करते हुए वो सूबेदार के पद तक पहुँचे थे। अम्बेडकर जी ने औपचारिक शिक्षा अंग्रेजी और मराठी में प्राप्त की थी।

अपनी जाति के कारण उन्हें समाजिक प्रतिरोधों का सामना करना पड़ा। अम्बेडकर ने सन् 1898 में पुनर्विवाह किया और परिवार के साथ मुम्बई (तब बम्बई) चले आए। यहाँ अम्बेडकर एल्फिस्टोन रोड पर स्थित गवर्नमेंट हाई स्कूल के पहले अछूत छात्र बन गए। गायकवाड़ शासक द्वारा सन् 1913 में संयुक्त राज्य अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय में जाकर अध्ययन के लिए अम्बेडकर का चयन किया गया। साथ ही उन्हें 11.5 डॉलर की छात्रवृत्ति प्रदान की गई। न्यूयॉर्क शहर में आने के बाद डॉ. भीमराव जी ने राजनीति विज्ञान विभाग के स्नातक अध्ययन कार्यक्रम में प्रवेश दे दिया गया। 1916 में उन्हें उनके एक शोध के लिए पी.एच.डी से सम्मानित

किया गया। और जब सन् 1916 में भीमराव जी ने डाक्टरेट की डिग्री हासिल कर ली। तब वह लंदन चले गए। जहाँ उन्होंने ग्रेज इन और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में कानून का अध्ययन और अर्थशास्त्र में डायरेक्ट शोध की तैयारी के लिए अपना नाम लिखवा लिया, अगले वर्ष छात्रवृत्ति की समाप्ति के चलते मजबूरन उन्हें अपना अध्ययन अस्थायी तौर पर बीच में ही छोड़कर भारत वापस आना पड़ा। अपने एक अंग्रेज जानकर मुम्बई के पूर्व राज्यपाल की मदद से उन्हें कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड इकोनॉमिक्स में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रोफेसर के रूप में नौकरी मिल गई। 1920 में महाराजा के मदद से वह दोबारा इंग्लैंड में जाना सम्भव हो गया। भीमराव जी जर्मनी भी रहे जहाँ उन्होंने अपना अर्थशास्त्र का अध्ययन बाँ विश्वविद्यालय में जारी रखा। 8 जून 1927 को कोलंबिया विश्वविद्यालय द्वारा पी.एच.डी की डिग्री प्रदान की गयी। 15 अगस्त 1947 में स्वतंत्रता के बाद वह भारत के पहले कानून मंत्री बनने का अफसर प्राप्त हुआ। भीमराव जी ने जाति प्रथा और धर्म विभाजन के इस कानून को बहुत बढ़ावा दिया। 1951 में संसद में अपने हिन्दू कोड बिल के मसौदे को रोके जाने के बाद अम्बेडकर ने मंत्रीमंडल से इस्तीफा दे दिया। 1952 में उन्हें संसद के ऊपरी सदन यानि राज्यसभा का चुनाव निर्दलीय उम्मीदवार के रूप के लिए नियुक्त किया गया। उन्होंने लगभग 5,00,000 समर्थकों को बौद्ध धर्म में परिवर्तित किया। 1948 से अम्बेडकर जी मधुमेह से पीड़ित थे। 6 दिसम्बर 1956 को अम्बेडकर का महापरिनिर्वाण नौद में दिल्ली में उनके घर में हो गया। 7 दिसम्बर को दादर चौपटी समुद्र तट पर बौद्ध शैली में अंतिम संस्कार किया गया।

“मैं उस धर्म को पसंद करता हूँ जो

स्वतंत्रता, सामाजिकता और भाईचारे की भावना सिखता है”।

पियुष गुसाईं

बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर

“जीवन लंबा होने की बजाए महान होना चाहिए। ”

—बी. आर. अम्बेडकर

## *Importance of Yoga in Daily Life*

The word 'Yoga' originated from Sanskrit word which means 'union'. Yoga has a holistic effect and brings body, mind, consciousness and soul into balance.

Yoga in daily life is a system of practice consisting of eight levels of development in the areas of physical, mental, social and spiritual health. When our body is physically healthy, the mind is clear focused & stress is under control. This gives us space to connect with our loved ones & maintain socially healthy relationships.

The main goal of 'Yoga' in daily life is physical health, mental health, social health, and spiritual health. Self realization or realization of the divine is within us, we need to awaken our senses and reconnect with the supreme self within such state can be achieved through yoga.

Pranayama is a very important technique to purify our lungs system. It is related to inhale & exhale breathing, when we perform those exercises, our lungs become strong.

Nowadays, not in India, but all over the world people have been facing diseases like asthma, obesity, diabetes, hypertension, blood pressure etc. When we perform 'Yoga' exercise, we can

reduce the percentage of such types of dangerous disease.

There are a few asanas which help us to prevent these types of disease. These are: Tadaasan, Bhurjangan, Trikonasan, matsyaasan etc.

### **Benefits of 'Yoga' in daily life**

- Controls body weight
- Increases immunity power
- Prevents diseases like obesity, diabetes, hypertension etc.
- Increases endurance and muscle power
- Improves meditation power
- Improves digestive system
- Reduces body fat
- Increases body height

**Ansh Malhotra**  
B.Sc. (PMG), I Semester

## *Hope*

When failure upon failure falls  
and your hope is nowhere  
When despair, decadence and depression  
surround you everywhere.

Joy, when becomes a thing of past forlorn  
and sorrow from seclusion arise  
When glances from your near ones hurt you  
most, a voice within you cries

As joy with sorrow, day with night  
So does dwell hope with despair  
An illusion is incarnated with in  
Saying that, "Thou shall fail!"

So what? Even if I do fail  
I will try again and again  
Neither failure nor success is fixed  
Journey lies in balancing between.

**Simran Babbar**  
M.A. (English), III Semester

## *Is Social Networking Really Important?*

George Bernard Shaw once famously remarked that "The single biggest problem in communication is the illusion that it has taken place."

Social networking and social media is a collective online platform, channels, website, which allows people to communicate, share ideas, thoughts, marketing, pictures, videos, music, education as well. With arrival of internet in 1970s, emails and other chatting platforms came into existence. In early 2000s, various sites like My Space, Orkut arrived. With the arrival of Youtube, facebook and twitter, the scenario has completely changed.

### **Is Social Networking really important?**

It is imperative that we should weigh and consider everything at disposal, instead by taking anything for granted.

Social Networking is that sensational instrument which allows people to get connected instantly, reconstruct old relations and friendships, which might be transformed into lifelong time. It is usually seen that a person expresses totally the opposite personality of which he/she bears into a beautiful and organized manner to have everyone's amazement. This so called platform gives freedom to modify or reconstruct one without any actual change. In this era, the ease with which an issue gets reported and highlighted has relatively changed the concept of 'news'. This has enabled the celebrities, renowned personalities to connect with the general public inspiring them and helping them occasionally.

Consumers and customers can easily connect with service providers and can complain about, give feedback or suggestions to them. There are now emerging practices among the police

administrations as well to install communication with public via social media, where anyone can inform the police over 'facebook' or 'whatsapp' which are taken as evidences. The online shopping and marketing has also changed drastically with emergence of social media. This not only saves energy but also creates employment. In this way, it is boosting economy of the country.

But if we consider the other changes after its emergence which are affecting our lives, we will find the biggest problem which is created by us by violating the delicate barrier between our public and private lives. This mistake is committed by people of all age groups from kids to even elderly people as well. The opportunity to share everything with the entire world has led people to be least concerned about their private issues. People tend to casually publicize their entire life in order to satisfy their craving for more attention.

### **Its Outcome**

The outcome of such a blunder can be of various forms such as misuse of private information, pictures, etc. Till date, we have faced everything from harassment to cyber bullying, from cruel banter to suicides, from murders to black mail, from honey trapping to terrorist recruitment, from theft to hacking, from riots to impeachment and resignation. From love affairs to marriages, from marriage to divorce and this all will continue in future as well.

Whenever we are indulging in leisurely surfing into social media, we are energized with countless information, which creates short term attention and confusion in our instant judgement. As a result, we readily accept fake news and disseminate it with responsibility. As a



result, important issues also get overlooked due to lack of exposure and attention. We might create a lot of relations over the social network within a short time period but all those hardly matter to us due to lack of warmth and touch. By spending excessive time over the social media, we develop an addiction for it. In the event of being ignored or made fun of, depression and suicides like outcomes are known to us.

### Soul of Social Media

Social media is not a monster that is all set to harm us, but mishandling and inappropriate use might turn it against us. Every individual user has his or her pattern and reasons for using it. The most important thing is to realise the mistake committed by us while using social media.

In India, there is a blurred line between information on social media and that of practical world. It has led to an unhealthy habit of copying and following of information from social media which is not only diminishing our creativity or ability of free thinking (innovative) but also weakening our analytical power due to instantaneous solutions and answers all over.

In India around 30 crore people are using smart phones irrespective of their financial status, education level and age groups.

No doubt, social networking has provided India a lot of positivity. Many creative minds have taken to social media to manifest their talents as well as for recognition. Everything comes with some advantages and disadvantages which lead to misuse and malpractices such as hacking, piracy and cyber security threats.

But the heartening reality is that India intends to bring some order into this social media world which has united with world forever and we really cannot do without it. Hence social media is of paramount importance to us. So it is our duty to use it judiciously and shape it in such a manner so that our future generations might not get endangered.

**Ankit Saini**

B.A., III Semester

## संघर्ष

अज्ञानता के अंधकार को  
आओ मिलकर दूर करे हम  
सभी लोगों के संग में मैं भी  
ज्ञान का दीपक जला दे हम  
जीवन में संघर्ष है करना  
गिरकर उठना और संभलना  
कठिनाईयाँ तो बहुत है लेकिन  
इन सब को पार है करना  
जीवन में सफल है होना  
चाहे कुछ भी पड़े करना

जीवन में संघर्ष है करना  
गिरकर उठकर और संभलना  
स्वयं जलकर दूसरों को भी  
हमें प्रकाश है देना  
भूले भटके पथिक को भी  
हाथ बढ़ाकर थाम है लेना  
जीवन में संघर्ष है करना  
गिरकर उठना और संभलना  
मैं सोचती हूँ कि मैं ऐसा कुछ करूँ  
यही है मेरी अभिलाषा, यही है मेरी अभिलाषा।

**कुसुमलता सेमवाल**

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## आर.टी.आई. : भूत, भविष्य और वर्तमान

हमारे देश में उस समय सात अधिकार हो चुके थे, जब 12 अक्टूबर 2005 को 'सूचना का अधिकार अधिनियम-2005' सफल रूप से एक अधिकार समान पारित किया गया था। जिसका उद्देश्य कानूनी अपराध से देश को मुक्त करना है। वो भी सूचना के माध्यम से। इस अधिकार की विभिन्न धाराओं के अन्तर्गत अधिकार का विस्तृत अध्ययन प्राप्त होता है कि कैसे, कब और क्यों इसका उपयोग किया जाए?

आर.टी.आई. के उपयोग द्वारा किसी भी सरकारी संस्था, कार्यालय या विभाग द्वारा किए गए कार्यों का वर्णन व प्रगति सम्बन्धी सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है। जिसके तहत प्रत्येक सरकारी कार्यालय में 'लोक सूचना अधिकारी' व 'सहायक लोक सूचना अधिकारी' स्थापित किया जाता है। किसी भी व्यक्ति-विशेष या विषय-वस्तु से संबंधित सूचना प्राप्त करने हेतु शुल्क 10रु. देय होता है। (विभिन्न राज्यों अनुसार भिन्न)।

सूचना का अधिकार पारित होने से आज 2018 तक लगभग 2.75 करोड़ बार हमारे देश की जनता या हमारे द्वारा इस अधिकार का उपयोग किया गया है। और मैं दावे के साथ कहता हूँ कि भविष्य में अवश्य यह संख्या भारत की जनसंख्या को पार कर जाएगी। किन्तु दुख तब होता है जब विभिन्न आँकड़ों के माध्यम से ज्ञात होता है कि उपरोक्त संख्या में से मात्र 6 प्रतिशत संख्या के लोगों को सूचना प्राप्त हो पायी है। अर्थात् अन्य सब व्यर्थ साबित हुए हैं।

कहा जाता है कि सूचना के अधिकार से कानूनी अपराध को कम किया जा सकता है। परन्तु वर्तमान तक की स्थिति में यह स्पष्ट होता है कि यह अधिकार अपराध को कम करने के विपरीत परोक्ष रूप से

अपराध का कारण बन रहा है। वर्तमान आँकड़ों से ज्ञात होता है कि आज तक सूचना के अधिकार के प्रयोग करने वाले 38 व्यक्तियों की हत्या कर दी गई है। इतना ही नहीं 274 व्यक्तियों पर जानलेवा हमला किया गया। इन आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि किस प्रकार यह अधिकार अपराध संख्या में वृद्धि कर रहा है, और भविष्य में इसके स्वरूप को खत्म करने की आवश्यकता है। जिसका सबसे कारगर हथियार मैं 'जन जागरूकता' को समझता हूँ, क्योंकि जागरूक अर्थात् सतर्कता के साथ कार्य करना देश के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्राथमिकता समझना होगा। और यही कारण निसंदेह अपराध को मुक्त करने में सहायक सिद्ध होगा।

सूचना के अधिकार को प्रयोग करना भी हमारा एक कर्तव्य है। परन्तु हमें इस अधिकार का सम्पूर्ण ज्ञान नहीं होता है। जो कि कारण बन जाता है, सूचना प्राप्त ना होने का। और साथ ही साथ एक कारण यह भी कि उपरोक्त अधिकार की धाराओं में पायी गई कई गलतियाँ। उदाहरण हेतु, 'इस अधिकार का उपयोग करने वाले व्यक्ति की पहचान को गुप्त ना रखना'। जिस वजह से व्यक्ति की जान को खतरा हो जाता है।

अर्थात् अन्ततः निष्कर्ष स्वरूप यह प्राप्त होता है, कि दोनों ही पक्षों (सूचना माँगने वाले, व सूचना देने वाले) में जागरूकता एवं सतर्कता आवश्यक है, तभी यह अधिकार अपनी सफलता सिद्ध कर पायेगा।

**अजय जोशी**

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## स्वतंत्रता सेनानी

स्वतंत्रता सेनानी वीर गति को हुए प्राप्त

खून के रंगों से

हुई स्वतंत्रता हमें प्राप्त।

आजादी की लड़ाई में,

वीर गति हुई उन्हें।

स्वतंत्र जीवन हुआ हमारा

उनके बलिदानों से।

रो-रो कर आँसू बहाये माताओं ने

फिर गर्व हुआ उन्हें अपने वीर जवानों पर।

स्वतंत्रता सेनानी वीर गति को हुए प्राप्त

खून के रंगों से

हुई स्वतंत्रता हमें प्राप्त।

**ज्योत्सना**

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## माँ

दया की मूर्ति होती है माँ,  
ममता, सहनशीलता, करुणा और निःस्वार्थ  
से भरी होती है माँ।  
कड़कती धूप में खेत खलियानों में,  
ऑफिस से थकी हारी घर आती है माँ।  
बच्चों को सहलाती है माँ, घर का पूरा काम करती है माँ,  
खाना बनाती हमको बड़े प्यार से भोजन कराती,  
कभी-कभी हमको खाना खिलाकर खुद भूखी सो जाती है माँ।  
कितना बोझ रहता है माँ पर हमारे घर का, समाज का,  
सब अकेले सहकर अपने दुख को भुलाकर,  
हमारे आँसू पोंछती है माँ।  
हमारे छोटे से घाव पर अपने आँसुओं से धोकर,

ममता की मरहम लगाती है माँ।  
कभी-कभी अकेले में बहुत उदास रहती है माँ,  
लगता है हम सब के बारे में सोच रही है माँ।  
चेहरे से बहुत खुश लगती है माँ,  
पर अन्तरमन में सिसकती है माँ,  
हमारी खुशी में खुश हो जाती है माँ।  
धीरे-धीरे समय के साथ कही दूर चली जाती है माँ,  
फिर कभी सपनों में, कभी यादों में, कभी तस्वीरों में बातें  
करती है माँ।  
बात करते-करते आँसू अधरों पर आ जाते हैं,  
सिसकते ओठ अधीर मन कह उठता है,  
सच में तुम कितनी प्यारी हो माँ।

अधवेश प्रताप

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## राजधानी में तेजी से बढ़ रही हैं सड़क दुर्घटनाएं

समय के साथ परिवर्तन सृष्टि का नियम है पचास हजार की आबादी वाला देहरादून पचास लाख की आबादी का होने को आतुर है। गुरु द्रोण और श्री गुरु राम राय महाराज ही की यह पावन धरती है। जो तेजी के साथ व्यावसायिक होती जा रही है। खुश गवार आबोहवा के लिए विश्वविख्यात इस दून की घाटी को शायद किसी अंग्रेज की नजर लग गयी। रिस्पना, बिंदाल नदियों के साथ ही अन्य तमाम गंधेरो से अब पानी की जगह कूड़ा-कबाड़ बहता है। जब से देहरादून राजधानी बनी है, नौकरशाही के साथ ही अन्य राजनेता और दल गांधी जी के तीन बंदरों की श्रेणी में चले गये। भविष्य में देहरादून की हालत इतनी खराब हो जाएगी कि पैदल नहीं चला जायेगा। वाहनों की रफ्तार अब बहुत तेज हो चुकी है, जिसके कारण पैदल चलने वाले लोगों को झेलना पड़ता है। कहने को तो अधिकारियों से लेकर सिपाहियों तक की फौज खड़ी है लेकिन कई घरों के इकलौते चिरागों को यह भी नहीं बचा पाते।

वर्तमान में किसी भी परिवार को आर्थिक सामाजिक और मानसिक रूप से वर्षों पीछे धकेल देने वाले सड़क हादसे की स्थिति देहरादून में बेहद चिंताजनक है। पिछले साल के आंकड़ों के अनुसार माह जनवरी से लेकर अक्टूबर के अंत तक जिले में कुल 250 सड़क हादसे हुए। इसमें 105 लोगों की जान गई और 225 के करीब लोग घायल हुए। जबकि 80 के करीब जीवन भर के दिव्यांग हो गए।

उत्तराखण्ड पुलिस मुख्यालय के रिकार्ड में पिछले साल उत्तराखण्ड में सड़क हादसों में 960 की मौत हुई जबकि 1800 के करीब लोग

घायल हुए। इसमें सर्वाधिक सड़क हादसे देहरादून, नैनीताल, उधमसिंह नगर और हरिद्वार में हुए हैं। सड़क पर यातायात नियमों के प्रति बेपरवाही भी मौत के मुँह में जाने का अहम कारण बन रही है। यातायात पुलिस के पिछले 10 माह की कार्यवाही पर नजर डाले तो यातायात नियमों की अनदेखी 1.19 लाख के चालान हुए। यह आंकड़ा अकेले देहरादून जिले का है तो सोचो की उत्तराखण्ड के परे क्या स्थिति होगी।

वर्ष	हादसे	मृतक	घायल
2017	250	105	200
2016	270	135	220
2015	295	151	298

देश में हर रोज 1300 के ज्यादा सड़क दुर्घटनाएं होती हैं। जिनमें 400 से अधिक लोगों की मौत हो जाती हैं। इनमें आधे से ज्यादा लोग अल्प आयु अर्थात् 18-35 के आयु में होते हैं। वर्ष 2015 की तुलना में वर्ष 2016 में सड़क दुर्घटनाओं में 4.1 प्रतिशत बढ़ी है। और उत्तर प्रदेश 12.8 प्रतिशत घटनाओं के साथ पहले स्थान पर 11.4 प्रतिशत के साथ तमिलनाडु दूसरे और 8.6 प्रतिशत तीसरे स्थान पर महाराष्ट्र है।

“जिन्दगी बहुत अनमोल है, इसे खुशी और अच्छी तरह से निभाए क्योंकि यह जिन्दगी दोबारा नहीं मिलनी”।

पियुष गुसाईं

बी.एस.सी., द्वितीय सेमेस्टर

## *Life Must Go On*

Life must go on, life must go on  
Let sadness be scattered around  
Let happiness to be worn  
But, life... must go on

Sit, wait, practise  
Rest or yawn  
But, life... must go on

No matter, no success  
Let yourself face the storm  
But, life... must go on

Let them weep, let them mourn  
Let the earth be torn  
But, life... must go on

Let the sun to flourish the darkness  
Let strain be born  
But, life... must go on

Let people leave your hand  
Let God gift you thorn  
But, life... must go on.

**Gauri Singh**  
M.Sc., II Semester

## *God Among Us*

Where is god? Have you ever seen?  
Do you ever desire to meet him?  
Making soul free where you have been  
reaching  
Think about what you have been

Free from rage, kingdom, relationships  
A sight touching earth's grandeur  
Complete silence, but still continuity  
Blossoming everyday with fair feelings

Making crops ripe like infant smile  
All glittering down the sky  
Remain silence, after a blood stain fall  
After a huge damage it never fragile

**Mahima Bisht**  
B.A., I Semester

## *Life is an Examination*

God is the greatest examiner  
We all are the students

Life is the answer sheet on which we have to  
give exams  
Time allowed in it is three hours

The first is childhood  
Second is youth  
Third is old age  
When the bell of the last hour is rung  
by the messenger of need

The exam is over  
The copy is attached

The paper is long  
The time is short

If we long for something it will make us to  
come to the same hall  
Then to new life once more if we pass  
We go to heaven and return no more.

**Gauri Singh**  
M.Sc. (Chemistry), II Semester



## माँ की महिमा

माँ एक ऐसा शब्द है जिसके स्पर्श मात्र से ही व्यक्ति व शरीर के कण-कण को शीतलता प्राप्त होती है। माँ एक ऐसा शब्द है जो कि एक नन्हा सा शिशु भी जानता है भले ही वह कोई भी भाषा न जानता हो। हम सभी को दर्द में सबसे पहले माँ का ही स्मरण होता है, क्योंकि जब तक माँ हमारे साथ होती है तब तक हम पर आँच तक नहीं आने देती। व्यक्ति कितना ही बलशाली क्यों न हो, माँ के आँचल में स्वयं को हमेशा सुरक्षित महसूस करता है। इसलिए तो किसी शिक्षाविद् ने कहा है कि ईश्वर हर जगह एवं हर समय विद्यमान नहीं हो सकते इसलिए उन्होंने धरती पर माँ को भेजा है।

एक आदर्श व्यक्ति के लिए माँ का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि कहा गया है

माँ तूने भगवान को जना है  
संसार तेरे ही दम से बना है  
तू पूजा है, मन्त है मेरी  
तेरे चरणों में जन्त है मेरी।

परन्तु आज के युग में समाज के बदलते स्वरूप के चलते कुछ विक्षिप्त मानसिकता के प्राणियों ने माँ के महत्त्व को संकुचित सा कर दिया है। बचपन से माँ की ममता में पल बढ़कर बड़े होने के बाद भी अपने फर्ज व जिम्मेदारियों से विमुख होकर एकल परिवार के ढोंग के तले खुशहाल जीवन यापन करने की चाह में जीते हैं। जबकि होता इसके विपरीत है अपने फर्ज से भागकर माता-पिता से सम्बन्ध न रखने वाला व्यक्ति सुखी कभी नहीं हो सकता। इस पर किसी महापुरुष ने कहा है कि जब हम छोटे बच्चे थे, आपस में लड़ते थे कि माँ मेरी है, माँ मेरी है। अब हम बड़े हो गये हैं, डॉक्टर बन गए, इंजीनियर बन गए हैं और फिर आपस में लड़ रहे हैं कि माँ तेरी है, माँ तेरी है।

आखिर क्यों हम सभी अपनी जिम्मेदारियों से भाग रहे हैं, उसे क्यों आज अपने पास रखने में झिझक रहे हैं, उसने भी तो हम सभी को 9 महीने अपनी कोख में रखा और इतनी पीड़ा सही। माँ का स्थान हमारे जीवन में अद्वितीय है, इसलिए माँ की महत्ता समझें और उसका कभी अनादर न करें।

आकाँक्षा चौधरी  
बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## नेत्र अंतरआत्मा का दर्पण हैं

नेत्र मन और भाव का दर्पण हैं भावनाओं एवं संवेदनाओं की स्पष्ट छाप इनमें अंकित होती है। आँखों में व्यक्ति का व्यक्तित्व झलकता है। नीलकाँठ का दर्शन ही आँखों का उद्देश्य है। नेत्र वह शक्तिपीठ व शास्त्रकलाएँ हैं जो अंतरआत्मा की सच्चाई को दिखलाती है।

जिस प्रकार एक सुन्दर भवन में उसकी सुन्दरता दृष्टिगत करने के लिए कई सारे खिड़की व दरवाजे होते हैं, उसी प्रकार शरीर रूपी भवन की सुन्दरता स्पष्ट करने के लिए परमात्मा द्वारा मनुष्यों को दो नेत्र प्रदान किए गए हैं। नेत्रों का चंचलपन एक मनुष्य के जीवन जीने के तरीके को दिखलाता है।

परमात्मा द्वारा प्रदान की गई इस अमूल्य देन का पूर्ण रूप से उपयोग करके समस्त संसार का कल्याण करना ही सम्पूर्ण मानव जाति का परम धर्म है।

प्रतिमा पटेल  
बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

**“आपकी मान्यताएं आपके विचार  
बन जाते हैं, आपके विचार  
आपके शब्द बन जाते हैं, आपके  
शब्द आपके कार्य बन जाते हैं,  
आपके कार्य आपकी आदत बन  
जाते हैं, आपकी आदतें आपके  
मूल्य बन जाते हैं, आपके मूल्य  
आपकी नीयति बन जाती है।”**

—महात्मा गाँधी

## डॉ० कलाम के सूक्त

- जीवन में एक लक्ष्य बनाइये। उस लक्ष्य के मुताबिक ज्ञान अर्जित कीजिए। ज्ञान अर्जित करने के लिए किताबें पढ़िए। नामचीन लोगों से मुलाकात कर उनके अनुभव जानिए। मशहूर वैज्ञानिकों, इतिहासकार, तकनीकी विशेषज्ञों की जीवनी पढ़िए। इनसे सफलता के प्रक्रिया के सूत्र मिलेंगे।
  - समस्याओं को अपना कप्तान मत बनाइए। समस्या आप पर हावी होगी तो आप सफल नहीं हो पाएंगे। आप सफल तब होंगे जब आप समस्या का सामना करेंगे।
  - तीन गुण अगर आप में हैं तो आप आसानी से सफल हो सकते हैं।
1. जानने की इच्छा।
  2. सोचने की क्षमता।
  3. ज्ञान हासिल करने की चाहत।

ये आपको आपकी मंजिल तक पहुँचा सकते हैं।

तन्वी

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## अब रहम नहीं करूँगा मैं

मैं जगा रहूँगा रात-दिन,  
चाहे धूप हो या बरसात हो।  
चाहे तूफान आये या पूस की ठंडी रात हो,  
मैं खड़ा रहूँगा सरहद पर सीना ताने।  
चाहे गोलियों की बौछार हो,  
चाहे न खाने को कुछ भी आहार हो।  
अपने 'वतन' की खातिर मैं,  
हर दर्द सह लूँगा।  
निकले जो खून बदन से मेरे,  
मैं खुश हो लूँगा।  
कभी आँखों में रेत भी चला जाए तो,  
वादा है, मेरी पलके नहीं झपकेगी।  
लहू भी जम जाए अगर जो सीने में,  
मेरे हाथ बंदूक नीचे नहीं रखेगी।  
दुश्मन के घर मेरे 'वतन' का टुकड़ा न जाए,  
जमीं दोज कर दूँगा मैं काफिर तुमको।  
कितना भी दुर्गम रास्ता हो,  
किंचित भी डरूँगा मैं।  
चप्पे-चप्पे पर रहेगी नजर मेरी,  
देश के गदारों पर अब रहम नहीं करूँगा मैं।

आयुषी त्यागी

बी.एस.सी., प्रथम सेमेस्टर

## Irony of Life

Sometimes when I sit beside and think  
Life's nothing but just an eye wink

Life begins with tears and ends the same  
But he keeps on crawling, just to establish  
his name

He climbs each stair with a different glare  
But forgets that God's judgement is never  
unfair

He who stands amidst the mob  
But from inside he quietly sobs

He keeps on playing tricks and games  
For him life is nothing but just a matter of  
fame

He walks his path with a different pace  
For most of the people he has a different  
face

He spends the whole day in different tasks  
And hides himself under an invisible mask.

Saumya Lakhera

M.A. (English), II Semester

## नया आगाज़

गमगीन है हिमालय गंगा ठहर सी गई है,  
दामन में मुँह छुपाकर आजादी रो रही है।  
अमीरी-गरीबी की खाई बढ़ती ही जा रही है  
ये आसमाँ, ये जमी कुछ थम सी गई है।  
भूख से बिलख रही है जनता  
नेता सत्ता के मद में चूर हैं।  
गरीबी से किसान आत्महंता बना,  
बचपन बना मजदूर है।  
पथ से भटका युवा, बेकारी नशे से मजबूर है,  
वेदना से भरा कोमल मन शिक्षा से बहुत दूर है।  
श्रमिक घिरा हताशा से आमजन भी त्रस्त हैं,  
कमर तोड़ती महंगाई से उसके हौसले पस्त हैं।  
भूखों को भोजन नहीं अनाज गोदामों में सड़ रहा है,  
सभ्यता एवं संस्कृति भूलकर मानव आपस में लड़ रहा है।  
बचपन की मासूमियत कहीं खो सी गई है,  
शिक्षा का स्वरूप बदला पर देश की तस्वीर वही है।  
बेकारी, गरीबी, बेबसी से जनता तड़प रही है,  
नेताओं, बाबाओं की झोली रिश्वत से भर गई है।  
होंठ मुस्कराना भूले, तकलीफ भी जिंदगी को अजनबी लग रही है,  
अच्छे दिनों के वादों से जनता छली गई है।  
राष्ट्रभाषा हिन्दी अपने ही घर में जंजीरों से जकड़ी हुई है,  
मनाकर एक दिन 'हिन्दी दिवस' कर्तव्यों की इतिश्री हो गई है।  
गैरों से हम आजाद हुए, अंग अपने ही छल रहे हैं,  
हिंसा साम्प्रदायिकता का जहर फिजाओं में घोल रहे हैं।

माँ, बहन, बेटियाँ नहीं महफूज हैं हमारी,  
आज भी खुली तिजोरी जैसी निर्भया लुट रही है।  
आतंक के साये में जी रहे हैं हम,  
खून से लतपथ है धरती, बेबस है आमजन।  
भ्रष्टाचार का धुँआ फैला है चारों ओर  
सिसक कर मानवता तोड़ रही है दम।  
संस्कृति का पुरोधा, विश्वगुरु था देश यह हम भूलते जा रहे हैं  
अपने ही हाथों अपनी इज्जत लुटाये जा रहे हैं।  
आओ फिर से नई सोच की फसल उगायें,  
देश को दुनिया की नजरों में बहुत ऊँचा उठाएं।  
मिलजुल कर अब सब कदम बढ़ायें  
भारत को पुनः विश्वगुरु का स्थान दिलायें।  
वीर शहीदों के बलिदानों को यूँ ही न बरबाद करेंगे,  
कृष्ण की धरती पर फिर से गीता का गान सुनेंगे।  
बापू के रामराज्य का सपना हम फिर से साकार करेंगे,  
सुभाष, तिलक, आज़ाद, भगत बन एक नया आगाज़ करेंगे।  
अब कृष्ण बनकर हमें सुदर्शन थामना होगा,  
बदलेंगे जब हम, तभी नया सवेरा होगा।  
ऐसा सवेरा जहाँ हर किसी के हिस्से की धूप हो,  
न अशिक्षा का अंधियारा न कहीं भूख हो।  
फैले शिक्षा का उजियारा, सबका विकास हो,  
बढ़े कदम से कदम मिला देश खुशहाल हो।

डॉ. एच. सी. जोशी

प्राध्यापक, रसायन विज्ञान विभाग

## शरीर

शरीर है तो मैं हूँ, शरीर है तो तुम हो।  
शरीर है तो नाम है, शरीर से ही पहचान है।  
शरीर से ही पीड़ा है, शरीर से ही सब खुशियाँ।  
शरीर से आप मित्र हैं, शरीर से आप शत्रु।  
शरीर से ही प्रेम है, शरीर से ही नफरत।  
शरीर नहीं तो सृष्टि नहीं, न सूरज, न अम्बर, न खुदा है।

शरीर से ही दुनिया व ये दुनियादारी है।  
स्वस्थ रहे शरीर सबका, तभी तो ये दुनिया हमारी है।

शशि प्रकाश कोटनाला

प्रयोगशाला परिचर

रसायन विज्ञान विभाग

## *In Conversation with Prof. Dinesh Singh (Former Head, Department of Mathematics)*

**Q.** Sir, in which year did you complete your Ph.D.? How many years you have dedicated to your teaching career?

**Ans.** I completed my thesis in 1976. My first interview was in SGRR PG College and I got selected in the same. Then, I decided to settle down in Dehradun and I already preferred to stay in Dehradun I never thought of going back to Gorakhpur. I dedicated 44 years of my life to the sphere of education and teaching and tried to give my 100% effort in it.

**Q.** Why did you decide to become a Maths teacher?

**Ans.** I decided to become a Maths teacher because I was much interested in studying mathematics. I also got 100 out of 100 in High school in the same subject. I got good marks in Mathematics as compared to other subjects so I decided to become a Maths teacher.

**Q.** Who was your mentor in your life? How you got inspired by him/her?

**Ans.** I met my first mentor when I was pursuing M.Sc. His name was Mr. D. P. Mishra. He was my Maths professor. I would like to share an incident where if my Maths professor saw any of his students in the market or cinema, he used to give that particular student one of the most difficult questions to solve. Mr. Mishra influenced me greatly.

My second mentor was Mr. Srivastava whom I met while I was pursuing B.Sc.. I was highly inspired by him.

**Q.** What are the experiences you gained



throughout your teaching career?

**Ans.** The experience that I have gained in my entire life is that if we study well with utmost dedication, determination and work to the best of our abilities, we can achieve anything. I also believe that if one does a lot of hard work in his/her life it is beneficial for his/her future. So, the hardwork that we are doing in our lives today will surely benefit us in our future.

**Q.** Sir, Maths being a complicated subject, how can one make it simplified?

**Ans.** Mathematics can be divided into two major parts-

- 1) Pure Mathematics
- 2) Applied Mathematics

We as teachers try different methods to simplify it and make it easier for the students.

Applied mathematics has got a wider scope for simplification and is much more interesting as compared to pure mathematics.

**Q.** Mathematics tends to get monotonous. How



can a teacher make it interesting?

**Ans.** The scope of making mathematics interesting is around 40%. We as teachers try to make it interesting as well as easy for our students. I think if the basic concepts of a student are clear, then he/she will naturally find it interesting.

**Q.** What are your views about Social Media? Do you like to spend time on it or not?

**Ans.** I give sufficient amount of time to studies. I am not much active on social media.

**Q.** Students often have phobia related to mathematics, what do you think is the main reason behind it?

**Ans.** I think the more a student practices mathematics, the less phobia or fear he/she will have regarding it. There are certain concepts of mathematics which should be well understood and continuously practiced. If a student practices those basic concepts of mathematics he/she will never have any fear or phobia related to mathematics.

**Q.** Which subject other than mathematics interests you?

**Ans.** Other than mathematics, I like History. In 1979, I appeared for the preliminary examination of I.A.S. and I cleared the written examination which had a portion of history in it. I like History and it's quite natural that if you like a particular subject you remember it for a longer period of time.

**Q.** According to you, what are the basic attributes that should be evident in a teacher?

**Ans.** According to me, if a teacher has 100% knowledge but he is not able to deliver that knowledge to his students, and on the other

hand, there is another teacher who only has 20% knowledge but he/she delivers the whole knowledge to his/her students, then he/she will be a better teacher.

I think there is a strong relation between a good teacher and his/her delivery of knowledge to students.

**Q.** What is your message to all the students and teachers?

**Ans.** My message to all the students and teachers is that they should give their 100% to their respective occupations or professions. Teaching has always been a very challenging profession. Earlier the patterns and methods of teaching were different. Now specific criteria have been fixed on which overall performance of a teacher is being checked and monitored which is quite challenging. A lot is being expected from a teacher, he has to keep a check on various spheres- sports, theatre, academics etc due to which he/she has to skip his/her lectures and it also creates a dilemma and a tough challenge for a teacher.

**Q.** How would you spend your life after your retirement? Which phase is more enjoyable, before retirement or after retirement?

**Ans.** I feel that both are phases of life. I have spent half of my life in teaching and have contributed significantly in the sphere of education. The second phase of my life is retirement. This phase of my life revolves around my family members and grand children.

**Saumya Lakhera**

**Kritika Sawan**

M.A. (English), II Semester

## National Conference on "History and Literature : Aspects of Convergence and Divergence" : A Report

A National Conference was jointly organized by the Department of English and Department of History on 26th March, 2019. The topic of the conference was "History and Literature: Aspects of Convergence and Divergence". The conference generated a lot of interest in the academic community which was reflected in the participation of a large number of delegates from several states of India such as Uttarakhand, Uttar Pradesh, Himachal Pradesh, Punjab, Haryana, Delhi and J&K.

The conference was spread over five sessions - Inaugural Session, Plenary Session, Two Technical Sessions and Valedictory Session. The Keynote Speaker of the Inaugural Session was Prof. Pushpesh Pant, former Professor of JNU, who is a well known academician and historian. In his Keynote Address, Prof. Pant spoke elaborately about the relationship between History and Literature.

Prof. Durgesh Pant, Director of USERC (Uttarakhand Science Education And Research Centre), the Guest of Honour in the Inaugural Session, shared his views on the aspects of Convergence and Divergence between History and Literature. This session was chaired by Principal Prof. V A Bourai . In his address, Prof. Bourai underlined the importance of organizing



conferences on such intellectually stimulating themes. He dwelt at length on the mutual relationship of History and Literature, in order to emphasize how history and literature impact each other. He specifically referred to an incident in the life of the great warrior Maharana Pratap which turned the course of Indian history. It is said that Maharana Pratap after his defeat at the hands of Mughal forces was in a despondent mood, but he was motivated by the heroic poem of a poet so much that he decided to challenge the mighty Akbar once again.

The speakers in the Plenary Session included eminent speakers like Prof. D R Purohit, (Former Professor HNB Garhwal University) Prof. Surekha Dangwal (Professor HNB Garhwal University) Prof. William S Sax, Dept of Anthropology, (University of Heidelberg, Germany) and Prof. Annette Horbrash, (Institute of Anthropology, University of Heidelberg, Germany). While Prof. Purohit spoke on "Folklores and the Little

Histories: A Context of the Central Himalaya", Prof. Surekha Dangwal spoke on the topic "Constructing History through Memory: Relocating Women in Select Partition Narratives". During this Session Prof William S Sax was felicitated by Nauti Jankalyan Samiti for his research work on "Nanda Devi Raj Jat". In the two Technical Sessions, more than 60 research papers were presented which covered various aspects of the main theme such as "History and Literature : The Interface", "Indian Epic Tradition from the Perspective of History", "Portrayal of Indian Freedom Struggle in Literature", "Historical Literature", "Historical And Literary Adaptations in Films" and " New Historicism in Literature". Dr. Arun Pant and Dr. Anita Tomar conducted Technical Session I and II respectively.]

The Valedictory Session was presided over by Prof B K Joshi, Former VC, Kumaun University and currently Director of Doon Library and Research Centre. In the Valedictory Session Dr. Lokesh Ohri and Dr Rajiv Bahuguna were the invited speakers who gave enriching talk dwelling upon the various dimensions of the inter relationship of History and Literature . Dr Ohri emphasized on the need of creating awareness in the youth regarding local history. Dr Rajeev Bahuguna emphasized on the need of properly documenting history. Prof. B K Joshi in

his concluding remarks lucidly explained how history and literature shape and influence each other.

The Inaugural Session and the Valedictory Session were anchored by Dr Anupam Sanny and Dr Jyoti Pandey respectively. The Plenary Session was anchored by Dr M S Gusain. Apart from the delegates, a large number of UG and PG students of the college, many teachers of SGRR Public Schools and several faculty members of the college attended this conference.

The main highlight of this conference was that students of the college, specially P G students from Dept of English were very actively involved in the conference . They not only participated in this academic activity by attentively listening to the speakers and giving their feed back in the form of assignments but also by learning a lot about organizational aspects of such activities as they worked as members of various committees constituted for this Conference. All in all, it was an immensely enriching experience for them.

**Ashish Henry**

M.A. (English), IV Semester

## *Interview*

### *Tete-a-tete with Dr. Aruna Mital*

#### *(Former Head, Department of Political Science)*

**Q.** Madam, in which year did you join SGRR PG college? What was your first experience about the college?

**Ans.** I joined SGRR PG College in 1989 though I taught in Lucknow, District Sitapur, Mehmoodabad in 1984. It was a government college, there were only Bachelor classes. I taught for four months there. After that, I completed my Ph.D. My first experience in SGRR PG college was very good.

At that time the girls' classes were held at SGRR Public School, Talab branch and boys classes used to be held in college campus. Due to this, we had more work load but it was good to teach because the students were interactive and interested.

**Q.** What were your greatest concerns when you began teaching? Did those turn out to be justified concerns or just the typical nerves of a new teacher?

**Ans.** My childhood dream was that I had to teach in a degree college and my dream was fulfilled here. I have a lot of interest in teaching. I teach and always keep updating myself. Our concerned staff and the students were all good. They were all very co-operative too.

**Q.** Who inspired you to be a teacher? Have you ever thought of a different career? If so, which career you had in your mind other than teaching?



**Ans.** I had never thought of any other career as I had passion for teaching. When I was in the IX and X grade, we had an English teacher. She was pursuing Ph.D. at that time, So I was very impressed with her as Ph.D. at that time was not very common so I got Inspiration from her and decided that I have to do a Ph.D. Apart from that, my sister was in a degree college, sometimes I used to go there and used to think that I would do teaching in the degree college. So, I got inspiration from both my teacher and my sister.

**Q.** What place do you think a subject like Political Science occupies in Indian education system?

**Ans.** Political Science should be made a compulsory subject. As we see, whatever our Indian education system is, whether CBSE and ICSE, Civics and Political Science has been made a compulsory subject everywhere upto tenth class because we should know about the government and political systems of our



country.

**Q.** To lead a vast country like India, its leaders should be well educated but presently it is not so. Do you think there should be a law regarding it?

**Ans.** Laws should be amended because if we see, there are some educational qualifications for every small post in India but there is no educational qualifications for politicians anywhere to run such a big system. So amendment is needed in the constitution regarding the education of political leaders. And also when the members of the Lok Sabha and Rajya Sabha are elected, they should have a training program, where they will be given basic knowledge instead of theoretical knowledge.

**Q.** What changes have you come across over the course of your career, regarding the college, its academic standards, and the overall progress of the college?

**Ans.** If we talk about infrastructure, then lot of change is evident. When I joined in 1989, there was only one building at that time and there were no windows and doors in the rooms. There were no fans, so it seemed as if are teaching in the open environment of Shantiniketan. So there is a lot of increase in infrastructure.

The education system has increased the readiness of education, so many means of education have developed, such as the Internet, whereby students neglect the importance of classroom study. There are many reasons of it. The most important is that nowadays students indulge into a lot of things at the same time like sideways computer training, coaching and many more. So because of involvement in many spheres, they don't focus on one main aim.

**Q.** Education has always been a two way process the teachers not just imparting knowledge but also learning from the pupils. So has there been anything which you have learnt from students in these years?

**Ans.** Teaching is a lifelong learning process. We are teaching what we have studied. But as time is changing, new things have started coming up, students know more about them and we learn from them. And I like to learn something new from them, as there is no age boundaries to learn. Like we did not have computers in our time. When the computer was brought into use, a training program was conducted by the college in which we feared even touching it. But with the changing times, the need of computer has increased today. In order to learn, I went to a training institute also. It turned out to be very helpful for me in teaching and thus an addition in our profile.

**Q.** Do you think that students union election held at college level makes the students get diverted from their main aim i.e. studying, is there a need for these elections?

**Ans.** There should be elections but not in this form. Criteria for election should be changed, such as the Class Wise Election, where a student should be selected on the basis of their qualities and merit because a student with a class merit would be able to create a good atmosphere.

Before the election process as it was introduced in 2005, syllabus used to be vast but still we were able to complete it within time but now the situation has totally reversed. So leadership should be there with some necessary changes.

**Q.** What according to you, plays the greatest role in shaping and moulding the psyche and overall personality of students?

**Ans.** Education is important but with it personality development is also important on its overhead. Only bookish knowledge is not enough, but even though we can motivate students to implement the curriculum of the books in their life. As we tell them about Fundamental Rights and Human Rights so they should apply this knowledge in their real life. And as a teacher, we also keep informed about

personality development.

**Q.** Do you think all these years, you were able to give your best in your profession? Were these years sufficient enough for you to impart the knowledge you wanted to?

**Ans.** I have always tried to give the best of my knowledge and career. I keep updating myself with new things so that I can interact with students. So it's my interest only which keeps me moving forward. And about the case whether career sufficient enough or not then I would like to say that it has been a long time. I am 65 now, its been 30 years. So much as what is given is a sufficient and if the chance ahead, not on regular basis but keep on doing a little bit.

**Q.** Can you please sum up your whole teaching experience in just a phrase?

**Ans.** Teaching is a noble profession.

**Q.** Would you like to convey any message for the upcoming generation of teachers?

**Ans.** I feel that upcoming generation of teachers don't have a deep and vast knowledge as they opt teaching as last resort before trying

everything else, which causes a degradation in quality because now people don't come up voluntarily by their own will. I believe that only 1% of people pursue teaching as their career in the same line from beginning to end. Teaching as a profession no longer remains much noble. This is my message for the upcoming generation of teachers to maintain the integrity and nobility of the profession.

**Q.** What is the one thing which you will always remember about SGRR PG College?

**Ans.** The environment of SGRR PG College has been very cooperative regardless of teachers or students. We feel great when students pass out and still remember us in the same way. So I will remember everything about SGRR and cherish its memories.

**Ayesha Praveen Siddiqui**

**Ayushi Maletha**

M.A. (English), IV Semester

## National Service Scheme (NSS) Year 2017-18 & 2018-19

Personality development through community service is a prime objective of the National Service Scheme. To achieve this objective various activities like awareness programmes related to Environmental Education, Plantation, Blood Donation Camps, Cash-less Economy, Disaster Management, First AID, different rescue operations, Swachh Bharat Abhiyan, Anti-Drug Addiction Drive, AIDS awareness rallies, Female Foeticide etc. were organized by the NSS volunteers during 2017-18 and 2018-19.

- During the academic year **2017-18**, total 383 volunteers were enrolled (Unit A-126, Unit B-117 & Unit C-140). The details of Five One Day Camps organized by NSS units of SGRR (PG) College are as follows.

- i. 12 January, 2017 International Youth Day
- ii. 29, August, 2017 National Sports Day
- iii. 09 September, 2017 Himalaya Day
- iv. 24 September, 2017 NSS Day
- v. 01 December, 2017 World's AIDS Day

- Two Special 07 Day's Day/Night Camps were organized from 12 February 2018 to 18 February 2018 at South and North Block of Community Health Centre, Mothorowala, Dehradun, in which 27 volunteers of Unit A and 76 volunteers of Unit B & C participated respectively. During this camp, our volunteers participated in cleaning campaign at Mothorowala, village. A training programme was organized by Civil Defense Department and Red Cross society of Uttarakhand in the field of different rescue operations for the volunteers. Some activities were also conducted like literacy drive, promoting cashless economy, anti drug addiction drive,

a forestation, HIV-AIDS, energy conservation etc.

- In the academic year **2018-19** total 382 volunteers were enrolled (Unit A-130, Unit B-121 and Unit C-131) and participated in various activities under the guidance of NSS Programme Officers Dr. M.K. Purohit, Mr. Manoj Baloni and Dr. Anuradha Verma. The details of activities are as follows.

**National Sports Day** (29th August, 2018) was celebrated in the College Campus. The Principal of the College, Programme Officers and all volunteers participated in it and had a discussion on the importance and the role of games and sports in the life of students.

**NSS Day** (24th September, 2018) was celebrated in the College campus. Principal and Programme Officers motivated volunteers to work for the Nation and had a talk on the importance of NSS.

**National Voluntary Blood Donation Day** (01 October, 2018) A Blood donation camp was organized by Volunteers with the help of Shri Mahant Indresh Hospital and Amar Ujala. In this camp around 90 volunteers donated blood, made this camp a great success.

**National Unity Day** (31st October, 2018) was celebrated in the college campus. Students were made aware about Sardar Patel's contribution in India's freedom movement and his role in the merger of princely states with British ruled India to make India a sovereign united country after independence.

**Flag Day** (22nd November, 2018) was celebrated by volunteers, teaching and non teaching staff. All donated generously to

National Foundation for Communal Harmony (An Autonomous Organization with the Ministry of Home Affairs, Govt. of India)

Apart from all above mentioned activities, volunteers also participated in International Yoga Day at FRI, Dehradun, on 21 June, 2018 and Book Fair (28 August, 2018 to 05 September, 2018) at Prade Ground, Dehradun. National Youth Day on 12 January, 2019 at Nagar Nigam Town Hall Dehradun, Youth Festival on 06 March 2019 at Prade Ground, Dehradun and Disaster Awareness Fair on 30 April 2019 organized by

State Disaster Response Force (SDRF) Govt of Uttarakhand.

National Service Scheme (NSS) has been doing great work since its inception. Every year the manifold challenges are increasing and the NSS evolving itself as an effective tool to overcome these challenges.

**Dr. M.K. Purohit**  
**Mr. Manoj Baloni**  
**Dr. Anuradha Verma**  
NSS Incharge Officers

## Department of History

Under-Graduate course started in the year-1965AD. The Post-graduation under self-finance scheme is started in the 2005AD. The Number of Permanent Teacher sanctioned in the department is 01. In present the department having one permanent faculty. We do admission as per HNB Garhwal (Central) University norms. The Student of lower and middle sections as well as urban areas take admission in the department. The good number of other state student also take admission in the department (H.P,J&K,U.P,North East). The classes are taken in Hindi medium and English medium because we have student from reputed English medium background as well from the normal Hindi background. We also get admission of the student from purely rural backgrounds that are good in their studies but having poor English background. The department of history is gradually developing its learning resources. It has small but good departmental library. In Present Dr M.S Gusain is working as Assistant Professor and Head of the Department having

M.A in Ancient History and UGC/NET, Ph.D,LL.B . The department got recognition as research center from 2012 onwards and in present- 05 research scholars is enrolled under Dr M.S.Gusain and one is going to submit her Ph.D . The department is always part of various activity of the college. The department is giving always 100% result as well as the student are holding the top five position of the University ranking. Priyanka Chauhan received Gold Medal-2018 in M.A (History) .Under the department more than 250 dissertation and 250 project reports were completed by the student. The department is working on Heritage Gallery. It will be opened in April-2019. We are trying to contribute in making the good citizen of the nation so that we can pride on our department and Institution .

**Dr. M.S. Gusain**  
Head  
Department of History



## English Department : Activities and Achievements

The Department conducted several activities during the 2017-18 & 2018-19 sessions such as organizing Workshop / Conference, besides presentation of research papers by its Faculty members as well as students. These are as follows:

**No. of Research papers published (2017-18) : 5**

**No. of Research papers published (2018-19) : 1**

**No. of Seminars / Conferences attended / Presented Papers (2017-18) : 5**

**Paper Presentations in Conferences / Seminars etc (2018-19) : 5**

**Extension Activities (2017-18):**

- The Department organized a three days "Theatre Workshop" in collaboration with "Pancham Veda" on 20-22 March, 2018. Sixty students including UG and PG classes attended it. They were made aware of the intricacies of theatre.
- Students and faculty members attended the 2nd Doon Literature Festival organized by "Samay Sakshay and Arsh" on 22-24 Dec, 2017.
- Faculty of English Dept. attended "Uttaranchal Literature Festival" organized by (WIC) World Integrity Centre on 19-23 April 2018, Dehradun.
- "Meet the Author" Programme organized by "English Literary Society" of the English Dept. on 2 Dec, 2017. In this programme students discussed aspects of creative skills and interacted with the invited writer Dr. Anurag Shourie, author of novel *Half a Shadow*.
- "Adhi Awam Ke Geet", a programme was organized on Women's Day (8.3.2017) by English Dept. in collaboration with Mahila Uttarjan, a unit of DHAD.

**Extension Activities (2018-19):**

- The Department organized the Inaugural Lecture of Founder Memorial Lecture Series (FMLS) in the Sacred Memory of the Founder of the College Brahmaleen Shri Mahant Indires Charan Dass Ji Maharaj on 25th Oct, 2018. The Lecture was delivered by Prof Kapil Kapoor, Former Pro VC JNU New Delhi.
- Dr. Madhu D Singh and Dr. Jyoti Pandey attended Doon Literary Festival on 24 - 26 Nov 2018.
- Students of MA English participated in the Jaipur Literature Festival January 2019

**Workshops / Conferences organized (2018-19):**

- The Department organised a workshop on "Personality Development and Interview Skills" on 11. 3. 2019 which was conducted by Ms Mona Verma and Mr. S. Hali (Team Disha). In this workshop about 70 students from different departments participated.
- The Department of English and Department of History jointly organised a National Conference on the topic "History and Literature : Aspects of Convergence and Divergence" on 26th March, 2019.

**Invited as Judges** - Faculty of English Dept. were invited in reputed schools as judges and nominated as members of interview board.

- Dr. Jyoti Pandey invited as judge in Debate Competition by Marshall School on 4.10.2017.
- Dr. Anupam Sanny invited as judge in Speech Competition/ Nukkad Natak by Scholars Home on 12.8.2017.

- Dr Anupam Sanny was member of Interview Board ( English) in Jawahar Navodaya Vidyalaya for PGT selection on 24.1.2018.

**Selections in Set and other Competitive Exams (2017-18):** The following students were selected in NET/SLET/LT

Batch	Name of Student	Exam
2010-2012	Seema Sharma	SET (Jammu and Kashmir) 2017
2012-2014	Arjun Singh	USET ( Uttarakhand) LT (Uttarakhand) 2017

**Selections in NET / SLET (2018-19):**

Batch	Name of the Student	NET Exam
2014-16	Sugand Singh	NET July 2018
2013-15	Albert Kaihru	NET July 2018
2015 - 17	Amrit Sufi	NET July 2018

**Student Progression (2017-18) :**

Batch	Name of Student	Course
2011-13	Astha Aswal	Pre Ph D Entrance English (HNBGU) 2017
2012-14	Arjun Singh	Pre Ph D Entrance English (HNBGU) 2017
2014-16	Sugandh Singh	Pre Ph D Entrance English (HNBGU) 2017

**Selections in Competitive Exams (2018-19):**

Batch		
2011-13	Aastha Aswal	LT(Uttarakhand)

**Merit positions obtained by students of M A English in HNB Garhwal University Merit list (2018-19):**

Batch		
2015 - 2017	Kalpa Bhardwaj	I
	Abhilasha	II
	Amrit Sufi	II

**Student Placement (2017-18) :**

- Yachna Suryavanshi was selected as Assistant Professor ( English) in Graphic Era Hill University, Dehradun. 2017
- Kalpa Bhardwaj joined Shri Guru Ram Rai University , Dehradun as Assistant Professor ( English). 2017

**Student Progression / Placement (2018-19) :**

2013 -15	Albert Kaihru	Pursuing M Phil ( English) from D U.
----------	---------------	--------------------------------------

Ms Aman Deep Kaur submitted her thesis under the supervision of Dr. Madhu D Singh on 6. 3. 2019. She has been selected as Asstt. Prof. in Graphic Era University.

## Department of Chemistry : At a Glance

Department of chemistry came into existence in the year 1960, when S.G.R.R. (P.G.) College was established. The Post Graduate classes in chemistry were started in 1966. A wonderful environment for teaching, research and writing has been given by college administration. The department is well equipped to impart teaching at undergraduate and postgraduate levels. The rich tradition of excellence is being maintained by the department till date. In view of the number of students the Department of Chemistry is the biggest department of the college and selected as Star Department under CPE of UGC. Apart from route in admissions, classes, practical and research works, Chemistry department earned the following achievements during the session 2017-18 and 2018-19...

**Paper Presented:** More than 25 papers are presented in various seminars by the faculty members.

### Education Tours:

Three education tours are being organised by the department for M.Sc. students to upgrade their knowledge towards latest technologies used in industry and Academia. The students and faculty members have visited Salud care (I) Pvt Ltd, Roorkee and Himalayan Drugs Company, Dehradun..

### Research Oriented Activities:

- Organised National Science day on 28th February 2018 and National Seminar on "Emerging Trends and Future Challenges in Science" on February 27-28, 2019.
- Ms Diksha Giri has been selected for Ph.D. programme in IIT, Bombay and Mr. Amit Adhikari in CDRI, Lucknow.
- Mr Kamesh Prasad selected for Ph.D.

programme in IISER Pune, Ms Shefali Banga selected for Ph.D. programme in IISER Mohali and Mr. Inderjit Singh selected for Ph.D. programme in NCL Pune.

- Four students Ms Swati Saini, Shefali Banga, Ms Priyanka Dashmana and Mr Kamesh Prasad cleared CSIR NET JRF.
- More than 50 students of Uttarakhand Open University have been supervised by faculty members for their dissertation/project works.
- Annually conducted competitive exam for chemistry students in collaboration with Association of Chemistry Teachers for providing scholarships.
- Conducted induction programme for INSPIRE students every year.

### Faculty Development Programme:

Seven faculty members successfully completed short term, Refreshers and Orientation courses from various UGC-HRDC institutes.

### Skill Development Programme:

More than 40 M.Sc. students completed certificated course for skill enhancement programme conducted by ENOVA Company.

### Certificate Course in PCA of Milk and Water:

45 students completed certificate course in Physico Chemical Analysis of Milk and Water.

**Dr. Atul Kumar Gupta**  
Head  
Department of Chemistry

# Department of Zoology

## Summary of Key Achievements by Zoology Department

Apart from routine admissions, classes and practicals Zoology Department did the following activities during the session 2017-18 & 2018-19.

**Research Publications :** 03( UGC Approved National Research Journals)

## Seminars, Conferences and Workshops Attended & Full Length Paper Presented/ Published

- (i) National Seminar/Conference :18
- (ii) Interactional Seminar/Conference :04
- (iii) State Conference :03
- (iv) Faculty Development Programme : 03(One O.P & 2 Short Term i.e. 7 days)

## Achievements & Placements of Students

- I. Two students of M.Sc. got selected in Ph.D Research Programme of HNB Garhwal Central University.
- II. One student cleared CSIR-UGC NET- LS (Life Science) Examination in the year 2017-18.
- III. Abhishek Gaur (2016-18) joined as Faculty member of Zoology in Uttaranchal PG College of Biomedical Sciences & Hospitals, Dehradun.

## Awards & Honours

- 1. Dr. M.K. Purohit Nominated as Observer for Entrance Examination session 2018-19 by Registrar Doon University, Dehradun.
- 2. Dr. M.K. Purohit Nominated as External Expert for Interview Panel for JRF post by Dept. of Biotechnology, Graphic Era University, Dehradun.
- 3. Dr. M.K. Purohit worked as Resource Person in a Workshop for class room teaching Science & Maths through innovative Practices by Director Academic Research & Training Uttarakhand.
- 4. Dr. M.K. Purohit Nominated as Subject Expert/Judge for Cluster level Science Exhibition at JNV, Shankarpuar, Sahaspur Dehradun.
- 5. Dr. M.K. Purohit Nominated as Co-Chairperson in Scientific session in a National Seminar held at DAV(PG) College, Dehradun, 26-28 Oct., 2018.
- 6. Dr. M.K. Purohit Nominated as Resource Person in workshop held at BFIT, Dehradun on 15th of Nov., 2018.
- 7. Miss Shweta Singh awarded by Young Scientist Award (Oral) in 11th National Conference of Medical Arthropodology on Vector Borne & Zoonotic Diseases by SOMA, Hyderabad, Telangana.

**Dr. M.K. Purohit**

Asst. Professor & Head,  
Department of Zoology



# Achievements Of Department of Physics

## ❖ National Level Exams Qualified (GATE / NET)

Many of our students have passed the CSIR-NET, GATE and other competitive exams and working in national and international Institutions. In 2017 two students of Physics department Akanshu Chauhan qualified NET-JRF and Vijay Bhatt cleared NET-Lectureship. In 2018 seven students of our department have qualified GATE, including Ankit Purohit with AIR-126 and Akanshu Chauhan with AIR-446. In the same year two students, Sachin Verma qualified JRF-NET and Mamta Gaur qualified NET-Lectureship. In the year 2019, two students of department, Parvesh Negi with AIR 445 and Dheerendra Singh Bhandari with AIR 1744 cleared GATE Exam.

## ❖ Research Oriented Activities

- In the year 2018, Raghvendra Posti has been selected for Ph.D. program in IIT Ropar and Sachin Verma has been selected for Ph.D. program in IIT Roorkee.
- Mr. Anoop Nautiyal is enrolled as P.D.F. in 2018 in University of Liege, Belgium.
- Taufiq ahmed is enrolled in H.N.B.G.U. Srinagar as Ph.D. research scholar in 2017.
- Pranjal Rawat student of M.Sc. II Sem. is selected from Uttarakhand State for attending Summer School Research Programme-2019 at Institute of Plasma Research, Gandhi Nagar, Gujrat.
- Ayush Thapliyal was selected from Uttarakhand State for attending a short term research project at Homi Bhabha Center of Science and Education (Tata Institute of Fundamental Research), Mumbai.

## ❖ Training Programmes

- In year 2018, four M.Sc. Final year students were selected for doing their project work at I.R.D.E. (D.R.D.O.), Dehradun.
- In year 2018, twelve M.Sc. Final year students were selected for doing their project work at A.T.I. – E.P.I., Dehradun.
- In year 2019, four M.Sc. Final year students were selected for doing their project work at I.R.D.E. (D.R.D.O.) Dehradun
- In year 2019, ten M.Sc. Final year students were selected for doing their project work at A.T.I. – E.P.I., Dehradun.

**Programme Organised by Department** with association of Indian Association of Physics Teachers (IAPT), Uttarakhand.

- A Physics stage show was organised for U.G. and P.G. students. Prof. T.R. Ananthakrishnan from International School of Photonics, Chochin University of Science and Technology, Chochin demonstrated experiments on 30-10-2017.
- A Lecturer series of National Initiative for Undergraduate Sciences (N.I.U.S.) by Dr. Rajesh B. Khaparde, Academic Coordinator, NIUS (Physics) Programme, HBCSE, TIFR, Mumbai on 2-11-2017.

**Manoj Baloni**

Head  
Department of Physics

## NIUS Lecture Series

In the series of lectures on 'National initiative for Undergraduate Science' the first program was organized on 2.11.2017 at SGRR (Post Graduate) College Dehradun under the joint auspices of the College and the Regional council – 5 (Uttarakhand) of Indian Association of Physics Teachers. Dr Rajesh Khaperde from Homi Bhabha Centre for Science Education TIFR Mumbai and Prof B P Tyagi (Coordinator) National Graduate Physics Examination were the main speakers. The organizer of the event, Dr Anand Singh Rana Secretary RC-5 (Uttarakhand) IAPT welcomed all the guests and the students present at the occasion.

Prof. B.P Tyagi thanked the Principal SGRR College for permitting to hold this program in



this campus and welcomed all the guests and students. He explained the students and the teachers that IAPT has been organizing NATIONAL GRADUATE PHYSICS EXAMINATION since last 30 years for the self-evaluation of graduate students in Physics without any fear and pressure. The meritorious students are awarded and even provided opportunities for

betterment of their career by way of academic programs. He added that the examination is conducted at about 300 centers in the country.

As main speaker of the day, Dr Rajesh Khaperde informed the students and teachers of the program on 'NATIONAL INITIATIVE FOR UNDERGRADUATE SCIENCE' organized by HBCSE Mumbai. The program is basically for graduate





Even sometimes the students serve as good resources.

Dr Rajesh also highlighted various scholarship open for these students and narrated the other opportunities through NIUS. He made a call for students to apply for NIUS and expressed that preference shall be given to the students from institutions not having adequate facilities for Science Education.

students and their teachers who are motivated to be useful resources. Dr. Khaperde introduce the program with three of its objectives. First the Research and Development: here the first year graduate students from different institutions are exposed to innovative experiments which they might have not seen in their respective institutes. The student is supposed to perform the experiment, analyze the data with his/her own comments and derive innovation. Second part is to popularize Science through these groups of students and teachers. The third stage is to invite teachers from different institutions, train them and invite them as resource persons.

The program was concluded by a vote of thank by HOD Physics Mr Manoj Balooni. The dignitaries present at the occasion included the vice principal of the college Dr Dinesh Singh, Dr Atul Gupta, the Chief Proctor Dr Sandeep Negi, the anchor Dr Anita Manori, Dr Harsh Vardhan Pant, Dr Rakesh Todiya, Dr Harish Chandra Joshi Dr Gossain, Dr Raj Bahadur Dr Sumangal Negi, Ms. Anita Manori and many more.

**Dr. Anand Singh Rana**

Secretary Regional Council – 5 (Uttarakhand)

IAPT

*“Our duty is to encourage every one in his struggle to live up to his own highest idea, and strive at the same time to make the ideal as near as possible to the Truth.”*

-Swami Vivekanand



## Physics Stage Show

Prof T. R. Ananthakrishnanan (faculty, International School of Photonics), Cochin University of Science & Technology (CUSAT) Cochin was invited in SGRR PG College on 30.10.2017. He demonstrated a number of experiments in a PHYSICS STAGE SHOW.

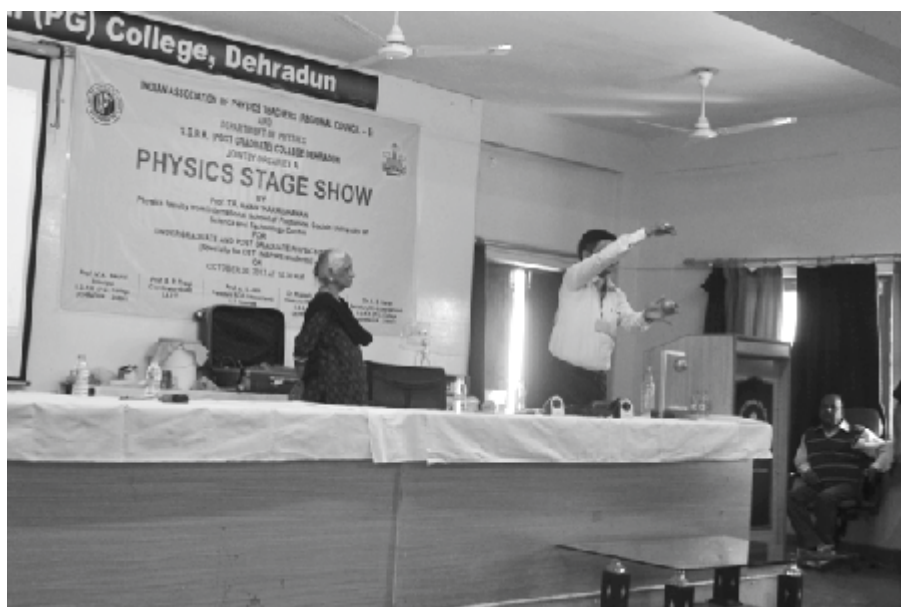
The Show started with a Physics Meditation that was unique experience for the students and teachers in the Hall with lights off and the air filled with a special music. A slow tone talk by Prof. Ananthakrishnan on 'Physics is nothing but probing into the secrets of nature', took them through the bygone days of our great scientists like Aristotle, Galelio, Newton, Faraday, Maxwell and so on to Pauli, Bohr, Einstein, Fermi, Raman, Bose and many more, passed through the big screen!

The Demonstration included various basic & fundamental aspects of Physics. He started with



the Philosophy as the part of Metaphysics with strength of sound as the chanting energy with different amplitudes and at various altitudes. Prof. Krishanan presented various properties of simple pendulum & complex pendulum from the point of view of energy, resonance and coupling among them. He has coupled the gravitational field with magnetic field to produce beautiful pictures of Lissajous figures.

Free, damped, forced and coupled oscillations were then demonstrated. System of several oscillators were then brought to the stage showing 'beats' and 'resonances'. How transmission of oscillations brings in concept of waves and energy propagation was well enjoyed by a large number of students participating in a dance like modelling created on the stage. These demos opened way to further demos on field-field interactions, (Faraday's and Lenz's laws) interference (Young's double







slit experiment), Doppler effect and many more. Students were invited to the stage to perform the Macroscale Demos with the Master, so as to provide them exciting memories!

**The laws of conservation of linear momentum was successfully demonstrated by moving the balls of different size, in different directions with different velocities. Students enjoyed arrival of Sir Isaac Newton (a student) with whom conservation law of momentum was beautifully demonstrated using two balls. Galileo's experiments on free fall, inclined planes and simple pendulum were duplicated by students on the stage.**

As to how interaction with nature opens out to never ending source of knowledge was demonstrated with pouring water from a pot on a "Linga" symbolizing nature! The basic physics behind this magical show was then explained bringing Pascal and his laws to the picture! The variation of the centre of the gravity through the distribution of the meteorites of masses is shown through a beautiful video in the last phase of the show. Another half hour was

then used to take them to the principle of interferometers and LIGO Experiment!! It was a thrilling experience for the students and teachers who attended the Show.

Physics stage show was organized by Dr Anand Singh Rana. The Principal of the College Prof. V A Baurai chaired the inauguration function and presented a brief sketch of the College & its achievements like "A" grade by NAAC & CPE by UGC. The other dignitaries present were Dr Anil Kumar Singh from Allahabad, Dr S

K Sastri from Dharamshala Himachal Pradesh, Dr Manoj Kumar Srivastava from IMA Dehradun, along with the faculty members Mr Manoj Baloni, Dr Sandeep Negi, Dr H C Joshi, Dr H V Pant, Dr Sumangal Negi, Dr V S Rawat and Mr Jitender Bharat Jakhmola and Mr PremPatari. The programme was anchored by Ms. Anita Manori.

**Dr. Anand Singh Rana**

Secretary Regional Council – 5 (Uttarakhand)  
IAPT



## Achievements of Department of Botany

- M.Sc. student Bhavna Kaushik (2017) got IV position in HNB Garhwal University merit list and selected as PGT (Biology) in an international boarding school.
- Km. Neha (M.Sc. 2017) pursuing Ph.d from SGRR University.
- Richa Jahngra (M.Sc. 2018) doing B.Ed. from HNB Garhwal University.
- Aakansha Pandey (M.Sc. 2018), Faculty in Uttaranchal PG College of Biomedical Science and hospital.
- Dr. Arun Joshi got 'Young Scientist Award' and received International travel grant from DST Government of India. He also acted as a keynote speaker and chairperson in international conferences held at Bangkok Thailand and University of Rajshahi Bangladesh (2017 and 2018). Given oral presentation in National Seminar held at Periyar University of Tamil Nadu (2018).
- Dr. Poonam Sharma attended seven days workshop 16 to 22 September, 2017 at Doon University and Short Term programme 14 to 20 November, 2018, HRDC of Lucknow University. She presented papers in various national and state level conferences and seminars in the field of palynology, algology, economic botany etc.

## "Meet the Author" Program Organized by English Literary Society (ELS)

English Literary Society is an important wing of the Department of English which invites eminent writers every year to broaden the intellectual and creative horizon of the students of literature. In the 'Meet the Author' program organized by the English Literary Society (ELS), the Department of English invited a young writer Anurag Shourie on 2nd December 2017. Dr Anurag is a doctor by profession. Based in Chandigarh Dr. Anurag is the author of the novel *Half a Shadow*, which is a medical thriller.

During this programme, the students of B.A. displayed their skills by narrating poetry and M.A students performed the play *The Misanthrope*, a comedy written by the famous

French playwright Moliere which was highly appreciated by the audience. Dr. Anurag spoke on his experiences on fiction writing and how he got inspired to write his debut novel. He also encouraged students to participate in creative writing.

At the end of the session there was an interesting round of interaction between the students and Dr. Anurag who answered their queries with great zeal and enthusiasm. On the whole it was an informative, enriching and enjoyable experience for the students of English Literature.

## Department of Economics: An Educational Tour to Amritsar

We went on an extremely memorable and joyful educational tour organized by department of Economics for its final semester students of M.A. (Economics). It was a 3 days trip from 27th march 2019 to 30th March, 2019. There were 14 students from which 12 girls and 2 boys participated in this tour. This tour was supervised by Dr Raj Bahadur (HOD) sir who went with us on this tour.

We all were reached at Dehradun railway station around 6.30 pm from where we had our reservations in Lahori express (Dehradun to Amritsar) train. This train leaves for Amritsar at 7 pm and after a full night train journey we reached to Amritsar in early morning around 7 am of 28th march. We pre-planned for our accommodation at Shri Ganga Niwas of Golden temple.

### About the City

Amritsar city is located in northern Punjab state, northwestern India. It lies about 15 miles (25 km) east of the border with Pakistan. Amritsar is the largest and most important city in Punjab and is a major commercial, cultural, and transportation centre. It is also the centre of Sikhism and the site of the Sikhs' principal place of worship—the



Harmandir Sahib, or Golden Temple. Amritsar is also a centre of the textile and chemical industries and also engages in food milling and processing, silk weaving, tanning, canning, and the manufacture of machinery. The city lies on the main highway from Delhi to Lahore, Pakistan, and is a major rail hub.

### Day 1: 28th March 2019

On first day we visited Golden temple which is also known as Harmandir Sahib. The temple is surrounded by a beautiful lake.

### Jallianwala Bagh

Located near the famous Golden Temple of Amritsar, Jallianwala Bagh is a public garden that also houses a memorial to commemorate the massacre of peaceful celebrators by the British forces. Spread over 6.5 acres of land, Jallianwala Bagh is associated with one of the saddest days in Indian History when thousands of innocent people were killed on the orders of General Dyer as they gathered for a peaceful celebration of Baisakhi. There is a memorial tablet at the entrance which serves as a record of history. The tragic incident left a deep scar on the country, and a memorial was constructed post independence for the innocents who lost their







lives in this devastating incident. Established by the government of India in 1951, the massacre memorial was inaugurated by Dr Rajendra Prasad on 13th April 1961. The place has now been turned into a beautiful park and is managed by the Jallianwala Bagh National memorial trust.

### The Partition Museum

The first-ever museum in the entire world to focus on the stories and trauma of the millions who had to suffer from the bloody consequences of a ruthless partition; was recently opened up at Town Hall in Amritsar.

Developed by the Arts and Cultural Heritage Trust (TAACHT), the museum is a part of the newly inaugurated Heritage Street at Amritsar, which begins from the Golden Temple and ends at the Town Hall. Collections at the Partition Museum include newspaper clippings, photographs as well as personal items that were donated by people who had witnessed and lived during the Partition.



### Day 2: 29th March 2019

It was an important day of our educational tour reached as we went to the Wagha boarder and the custom gallery to see the gateway of trade in Pakistan and central Asia. We booked a bus to reach the border and the driver also guided us for the famous places coming in the way to the border like Durgiana temple and Vaishno temple.

### Day 3: 30th March 2019

This day was planned to explore some other place of the city and we went to the wholesale markets of Amritsar and observed the main specialty of these markets where clothing production contributes to a main source of market revenue. Phulkari was one of those famous items which we observed almost everywhere.

Represented by

**Jaya Sarkar**

M.A., IV Semester





# One Day Workshop on Interview Skills and Personality Development organised by the Dept. of English

A one day Workshop conducted by team Disha was organized by the Dept of English on 11 March 2019 for the students in various disciplines of SGRR PG College on "Interview Skills and Personality Development" with the aim of enabling them to communicate confidently during interviews for job recruitment and to learn various aspects of personality development. The members of the team Disha, Ms. Mona Verma and Mr S. Hali addressed the students on the issues of communication and gave them valuable suggestions on how to enhance their skills in communication. The workshop drew enthusiastic participation from the students who with the aid of some interesting and humorous videos and some practical exercises learnt life skills which helped them to build their confidence in Spoken English, to understand their responsibilities and also to prepare themselves for the various challenges that occur in one's professional and personal life. At the end of the Workshop, the students expressed their views about the Workshop. They said that to a large extent their hesitation and fear with respect to speaking fluently in English was overcome.

## Students' Feedback on the Workshop

After the Workshop students were asked to fill the Feedback forms. Some of the responses are as below:

"After the workshop I can take my decisions and my interactive skills with my peer group have also improved. Such workshops need to be held more often in college as these kinds of activities included in the workshop can help us



to prepare for future job interviews"

**-Snehil Agri, B.A., II Semester**

"Personality development classes should be included in the University curriculum"

**-Manjeet Kaur, B.A. IV Semester**

"The workshop had proved to be beneficial to me in terms of instilling in me practical knowledge and accelerating my confidence."

**-Nidhi Lakhera, B.A., VI Semester**

"After this workshop I realized the need to improve my soft skills and overcome my inhibitions in facing a formal interview".

**-Ankush Jain, M.A. (English), II Semester**

"I was quite impressed with the presentation of the speakers of Team Disha. It was definitely a beneficial activity for us. Not every individual has the same level of abilities and confidence to face a competitive world so there is need for them to become aware of their shortcomings and work on their personalities which will in turn help them to present themselves effectively in all facets of their lives."

**-Ayesha Siddiqui, M.A. (English) IV Semester**

## Games & Sports Activity 2017-2018

In the year 2017-2018, College Annual Sports meet was held on 18 November 2017. Students & faculties of all departments including Arts, Science, Agriculture and Commerce participated in College Annual Sports with a lot of enthusiasm. The students participated in High jump, Long jump, Discus throw, Short put, Javelin throw, different races like 100 mt, 200 mt, 400 mt and other were also conducted.

In the year 2017-2018, different teams of the college participated in HNB Garhwal University Inter - Collegiate tournaments. Teams participated in HNB Garhwal University Inter - Collegiate Chess, Cross - country, Football, Weight lifting, Kabadi (M) Badminton (M & W) Table tennis (M & W), Cricket (M), Boxing (W & M) Handball (M & W) and Volleyball (M) Tournament.

Athletic team of 14 boys & 12 girls of the college participated in Inter Collegiate Athletic meet which was held at Maharana Pratap Stadium, Raipur Dehradun.

Cricket team of the college performed well in HNB Garhwal University Inter - Collegiate Cricket Tournament and was champion of the tournament held at Maharana Pratap Stadium, Raipur, Dehradun, Uttarakhand.

Football team of the college performed very well in HNB Garhwal University Inter - Collegiate Football tournament held at Ambedkar Stadium ONGC Dehradun, Uttarakhand. The team emerged semi-finalist in this tournament.

Chess team of the college participated in Inter - Collegiate tournament and emerged champion in single event and earned third place in team events.

Women players actively participated in different

sports activities in the college and earned championship in Table tennis & Boxing event tournament of HNB Garhwal University.

The following students of the college were selected in different teams of the university to participate in Inter - University level competitions.

Name & Class of the players	Games
Rishabh Semwal, M. Sc, III Sem.	Chess
Sandeep Gairola, B.Sc. III Sem	Chess
Amit Rawat, B.A. I Sem.	Boxing
Kalpana Negi, B.A. V Sem.	Boxing (W)
Sushant Badoni, M.A. I Sem.	Football
Naveen, B.Sc. I Sem.	Football
Deepak Rawat, M.A. I Sem.	Football
Vishal Dangwal, B.A. III Sem.	Cricket
Vaibhav Panwar, M.A. I Sem.	Cricket
Sunny Kashyap, B.A. III Sem	Cricket
Aman Negi, B.A. I Sem.	Cricket
Subal Yadav, B.A. III Sem.	Cricket
Shravani Sharma, M.Sc. III Sem.	Basketball (W)
Mansi Pharswan, B.A. III Sem.	Basketball (W)
Akansha Rauthan, B.Com. III Sem.	Table Tennis (W)
Gitika, B.A. I Sem.	100mt Hurdle (W)
Ram Raj S. Rawat, B.A. I Sem.	400 mt Race
Ankit Kumar, B.A. III Sem.	Basketball

**Dr. Harish Chandra Joshi**

Games & Sports Secretary

## Games & Sports Activity 2018-2019

In the year 2018-2019, College Annual Sports Meet was conducted on 15-16 October, 2018. More than 220 students of Arts, Science, Agriculture and Commerce and faculties of the respective departments participated enthusiastically. The students participated in different athletic activity like High jump, Long jump, Discus throw, Short put, Javelin throw 100 mt, 200 mt, and other different races were conducted.

The college team of 26 athletic players participated in HNB Garhwal University Inter Collegiate Athletic tournament held at Maharana Pratap Stadium, Raipur Dehradun.

The collegiate Cricket team performed well in HNB Garhwal University Tournament and was runner-up of the tournament held at Ranger's ground, Dehradun, Uttarakhand.

Football team of the college performed very

well in HNB Garhwal University Inter - Collegiate Football tournament and was runner-up of the tournament held at Ambedkar Stadium ONGC Dehradun, Uttarakhand.

Basketball team in HNB Garhwal University Inter - Collegiate Basketball tournament was semifinalist of the tournament.

Amit Thapa participated in Inter Collegiate Boxing tournament held at DBS P.G. College, Dehradun and was emerged as a champion in free-style (70 kg) Boxing events.

Chess, Kabadi, Volleyball team of the College also participated in the HNB Garhwal University Inter - Collegiate tournament held at different locations.

The following students of the college were selected in different teams of the university to participate in Inter-University level competitions.

### Achievements of the players in 2018-19

Name or the players	Games	Winners of North Zone
Hamenant Singh (B.A. I Semester)	Basketball	Jamia Hamdard University, New Delhi (from 16-21 October 2018)
Parvind S. Chauhan (M.A. (Eco.), 1 Semester)	Football	Sant Baba Bhag Singh University Jalandhar, Punjab (23-30 October 2018)
Mukul Rai (B.A. I Semester)	Football	
Abhishek Bhatt (B.A. I Semester)	Football	
Sachin Rawat (B.A. I Semester)	Cricket	M.D. University, Rohtak, Haryana (From 15-28 December 2018)
Rohan Rawat (B.A. I Semester)	Cricket	
Pradeep Chamoli (B.A. III Semester)	Cricket	
Akhil Kumar Miyan (M.A. I Semester)	Cricket	
Amit Thapa (M.A. (English), I Semester)	Boxing	J.R.N. Vidyapeeth University, Udaipur (From 21-28 February 2019)

**Dr. Harish Chandra Joshi**  
Games & Sports Secretary

# सांस्कृतिक-शैक्षणिक रिपोर्ट, वर्ष 2017-2018

- 1) 14 सितम्बर 2017 महाविद्यालय में राष्ट्रभाषा हिन्दी दिवस के अवसर पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें एकता (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर), अंकित सैनी (बी.ए प्रथम सेमेस्टर), सिमरन (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर) ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 2) 2 अक्टूबर गाँधी जयन्ती के अवसर पर 'स्वच्छता अभियान' पर एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें तुली (एम.ए. तृतीय सेमेस्टर)– प्रथम, प्रेरणा कश्यप (बी.एस.सी प्रथम सेमेस्टर), शैफाली सिंह– (बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर)– द्वितीय तथा कोमल– (बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर)– तृतीय स्थान पर रही।
- 3) गाँधी जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय में एक पत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक था– 'प्रिय बापू (महात्मा गाँधी) आप मुझे बहुत प्रेरित करते हो' जिसमें बी.ए तृतीय सेमेस्टर की छात्रा .....प्रथम, बी.ए. पंचम सेमेस्टर की छात्रा रूखसार द्वितीय स्थान पर तथा बी.ए. तृतीय का छात्र हरि मोहन तृतीय स्थान पर रहा।
- 4) 5 अक्टूबर आर.टी.आई क्लब देहरादून द्वारा महाविद्यालय में सूचना के अधिकार पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें बी.ए. तृतीय की छात्रा सिमरन ने प्रथम, बी.एस.सी पंचम सेमेस्टर की छात्रा दिपाणी प्रधान ने द्वितीय तथा बी.ए तृतीय सेमेस्टर की छात्रा दिव्या नेगी व एम.एस.डब्लू तृतीय सेमेस्टर के छात्र तनुज प्रताप सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 5) 7 अक्टूबर 2017 को आर.टी.आई. क्लब देहरादून द्वारा आयोजित अन्तर महाविद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में बी.ए. तृतीय सेमेस्टर की छात्रा दिव्या नेगी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।
- 6) डी.ए.वी. एलुमिनाई एशोसिएशन द्वारा आयोजित अन्तर महाविद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्र तनुज प्रताप सिंह (एम.एस.डब्लू तृतीय सेमेस्टर) तथा आशुतोष जोशी (बी.एस.सी तृतीय सेमेस्टर) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
- 7) सरदार भगवान सिंह (पी.जी.) संस्थान देहरादून द्वारा

आयोजित राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में महाविद्यालय के एम.एस.डब्लू. चतुर्थ सेमेस्टर) के छात्र तनुज प्रताप सिंह ने सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार जीतकर 10,000/ ₹ का नगद पुरस्कार प्राप्त किया।

- 8) दिनांक 6-11-17 से दिनांक 13-11-17 तक महाविद्यालय में सांस्कृतिक-शैक्षणिक सप्ताह का आयोजन किया गया।

**रंगोली प्रतियोगिता** जिसका शीर्षक था- 'हमारे धार्मिक पर्व' जिसका परिणाम इस प्रकार रहा—

प्रथम— सीमा (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर)

द्वितीय— आस्था सिंह (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)

तृतीय— प्रस्तावना (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर)

तृतीय— उज्ज्वल (बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर)

**'जल संरक्षण' पर पोस्टर प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। जिसका परिणाम इस प्रकार रहा—

प्रथम— ओसीन कुनवाल (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर)

द्वितीय— लवली (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)

तृतीय— दिव्या तोमर (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर)

तृतीय— आयुशी कैन्तुरा (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर)

**स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता** का परिणाम इस प्रकार रहा—

प्रथम— शिवम (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर)

द्वितीय— काजल डोभाल (बी.ए. प्रथम सेमेस्टर)

तृतीय— शिवम बड़ोनी (बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर)

तृतीय— नरेन्द्र राणा (बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर)

**लोक संस्कृति एवं लोक गायन पर आधारित एकल गायन प्रतियोगिता** का परिणाम इस प्रकार रहा—

प्रथम— दिनेश चन्द्र भट्ट (एम.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर)

द्वितीय— ध्रुव लाल (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)

द्वितीय— दमनजीत सिंह (बी.कॉम. पंचम सेमेस्टर)



तृतीय— दिपाणी प्रधान (बी.एस.सी. (एग्रीकल्चर) छठा सेमेस्टर)

तृतीय— रागिनी बिन्जौला (बी.ए. पंचम सेमेस्टर)

**‘वर्तमान भारत की वैदेशिक नीति’ पर भाषण प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया, जिसका परिणाम इस प्रकार रहा—

प्रथम— सिमरन (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)

द्वितीय— आशुतोष जोशी (बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर)

तृतीय— चारु सिंह (बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर)

**‘जी.एस.टी. भारतीय अर्थव्यवस्था में उपयोगी है’** विषय पर **वाद-विवाद प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया, जिसका परिणाम इस प्रकार रहा—

प्रथम— शाम्भवी काला (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर)

द्वितीय— दिव्या नेगी (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)

तृतीय— सिमरन (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर)

9) श्रीनगर गढ़वाल विश्वविद्यालय में आयोजित **अंतर महाविद्यालयी सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक प्रतियोगिता** में महाविद्यालय ने शानदार प्रदर्शन किया।

सामूहिक प्रतियोगिता कब्बाली में महाविद्यालय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि एकांकी, लोकगीत, एवं देशभक्ति में महाविद्यालय ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

एकल प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्र दिनेश भट्ट (एम.एस.सी. चतुर्थ सेमेस्टर) ने सुगम संगीत में द्वितीय, परमजीत कौर (बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर) ने शास्त्रीय संगीत में तृतीय स्थान तथा रितिका बिन्जौला (बी.एस.सी. (एग्रीकल्चर) छठा सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

**डॉ० सुमंगल सिंह**

सचिव

सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक समिति

# सांस्कृतिक-शैक्षणिक रिपोर्ट, वर्ष 2018-2019

- 1) 14 सितम्बर 2018 महाविद्यालय में हिन्दी दिवस के अवसर पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें शिवम शर्मा (बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर) ने प्रथम, दिव्या नेगी (बी.ए पंचम सेमेस्टर) ने द्वितीय तथा शिवांगी शर्मा (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 2) 01 अक्टूबर 2016 को आर.टी.आई. क्लब, देहरादून द्वारा महाविद्यालय में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें साक्षी बड़ोनी (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर) ने प्रथम, अंजलि कुमारी (बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर) ने द्वितीय तथा कर्णिका (बी.ए प्रथम सेमेस्टर), शारमीन (बी.ए प्रथम सेमेस्टर) व अंकित सैनी (बी.ए तृतीय सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 3) 2, अक्टूबर 2018 गाँधी जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय में स्वच्छता अभियान पर एक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें रीना गुप्ता (बी.ए. तृतीय सेमेस्टर) ने प्रथम, रश्मि (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर) ने द्वितीय तथा लक्ष्मी (बी.ए तृतीय सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 4) 15 अक्टूबर 2018, आर.टी.आई. क्लब देहरादून द्वारा आयोजित अन्तर महाविद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में साक्षी बड़ोनी (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर) की छात्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
- 5) राष्ट्रीय सेवा योजना एवं राष्ट्रीय युवा कल्याण एवं खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित युवा संसद में महाविद्यालय के दो छात्र आशुतोष जोशी (बी.एस.सी. छठा सेमेस्टर) तथा दिव्या नेगी (बी.ए. छठा सेमेस्टर) ने प्रतिभाग किया जिसमें दिव्या नेगी ने विभिन्न राउंडों को पार करते हुए नई दिल्ली में उत्तराखण्ड राज्य का प्रतिनिधित्व किया।
- 6) 1 नवम्बर 2018 से 3 नवम्बर 2018 तक महाविद्यालय में सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक सप्ताह का आयोजन किया गया।

**रंगोली प्रतियोगिता** में आस्था सिंह (बी.ए पंचम सेमेस्टर) ने प्रथम, वैष्णवी गुप्ता (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर) ने द्वितीय तथा सीमा (बी.ए तृतीय सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

**पोस्टर प्रतियोगिता** में सीमा थापा (बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर) ने प्रथम, ओशीन कुनवाल (बी.ए तृतीय सेमेस्टर) ने द्वितीय तथा शिवानी पाल (बी.एस.सी. तृतीय सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

**स्वरचित कविता प्रतियोगिता** में शिवांगिनी शर्मा बी.एस.सी. (प्रथम सेमेस्टर) ने प्रथम, दीक्षा रतड़ी (बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर

ने द्वितीय तथा दिव्या नेगी (बी.ए पंचम सेमेस्टर) व नरेन्द्र राणा (बी.कॉम पंचम सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में छात्र संघ की सार्थकता विषय पर एक **भाषण प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिनमें शारमीन (बी.ए प्रथम सेमेस्टर) ने प्रथम, आरिहा शाहनी (बी.ए प्रथम सेमेस्टर) ने द्वितीय तथा शिवांगिनी शर्मा (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

**‘क्या मीटू’** अभियान महिलाओं को शक्ति प्रदान करने में सहायक है। विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें साक्षी बड़ोनी (बी.ए प्रथम सेमेस्टर) ने प्रथम, आशुतोष जोशी (बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर) ने द्वितीय तथा दीक्षा रतड़ी (बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

**एकल गायन प्रतियोगिता** में जयंत रावत (बी.ए पंचम सेमेस्टर) ने प्रथम, आयशा प्रवीन (एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर) व शालिनी नेगी (बी.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर) ने द्वितीय तथा उज्ज्वल जैन (बी.एस.सी. पंचम सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

7) श्रीनगर गढ़वाल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर महाविद्यालयीय सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक प्रतियोगिता में इस वर्ष महाविद्यालय का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक दोनों प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय रनर अप रही।

सामूहिक प्रतियोगिताओं में लोक नृत्य तथा एकांकी नाटक में महाविद्यालय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, लोक गान, देशभक्ति गान तथा माइम में महाविद्यालय ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

एकल प्रतियोगिताओं में वाद-विवाद (पक्ष) में साक्षी बड़ोनी (बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर) ने प्रथम, वाद-विवाद विपक्ष में शिवांगिनी शर्मा (बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर) ने प्रथम, पेंटिंग में उज्ज्वल जैन (बी.एस.सी. छठा सेमेस्टर) ने प्रथम तथा पाश्चात्य गायन रितिका जोशी एम.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

शास्त्रीय नृत्य में रितिका बिन्जौला (बी.एस.सी. (एग्रीकल्चर) छठा सेमेस्टर) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मिमिकरी में अजहर सैफी (बी.ए चतुर्थ सेमेस्टर) ने तृतीय, कार्टून मेकिंग में वैष्णवी गुप्ता (बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर) ने तृतीय तथा शास्त्रीय गायन में जयंत रावत (बी.ए छठा सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

**डॉ० सुमंगल सिंह**

सचिव

सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक समिति

## Department of Mathematics: A report

The Department of Mathematics was established in the year 1960 (when S.G.R.R. (P.G.) College came into existence) under the headship of Professor D.S. Rawat (Retired Vice Chancellor of H.N.B. Garhwal University, Srinagar). During the journey of 59 years, the Department of Mathematics progressed well with time. In view of the number of students and the researchers, Department of Mathematics is the second biggest department of the college. Out of five faculty members, three faculty members are research supervisors of H.N.B. Garhwal Central University, Srinagar. Fifteen research scholars have been awarded D. Phil./ Ph. D. degree under the supervision of faculty members of Department of Mathematics.

In 2017, UGC recognized the Department of Mathematics as one of the Star Departments of the college in CPE programme.

During 2017-18 Session, the Department of Mathematics organized a National Conference on 05 – 07 October, 2017 on “History of Mathematical Sciences”. The faculty members of other departments also participated in the conference because of increasing use of Mathematics in number of other field of studies. In organizing this conference, faculty members of other departments of the college also contributed significantly. The students took a lot of interest in the conference.

Dr. S. K. Padaliya, Dr. A. P. Singh and Dr. Vivek Kumar attended professional development programmes, i.e. Short Term Course, titled ‘(FDP) Innovative Teaching Learning Practices in the Distance and Higher Education’ from 08 - 14 July 2017.

Dr. S. K. Padaliya attended UGC sponsored short term course, titled ‘Environmental Frontiers’ from 07 – 13 February, 2019 and ‘Developing Synergy between Information Communications Technology and Academics’ from 25 – 31 March 2017.

Publications by the faculty members of the

Department:

Dr. S. K. Padaliya published a research paper in Science Citation Index (SCI) journal ‘Filomat 32:10 (2018), 3751–3758 with 0.789 impact factor.

Dr. Vivek Kumar published a research paper in SCI journal ‘An Shams Engineering Journal’ (an Elsevier Journal) 9 (2018), 1591–1600 with 3.09 impact factor.

Dr. A. P. Singh published 03 Research papers in the Journals notified on UGC website during the year with 5.070 impact factor.

Dr. A. P. Singh published 06 books for UG and PG students. Mr. Rahul Goyal was awarded Ph. D. degree from Graphic Era Deemed University, Dehradun under the supervision of Dr. A. P. Singh.

All faculty members participated in 01 international and 09 National Seminars/Conferences during 2017 – 18. Dr. Sanjay Kumar Padaliya presented 09 research papers in international/national Seminars/Conferences during 2018–19. At present 02 research scholars have been registered for Ph.D. programme.

Dr. Sanjay Kumar Padaliya is Subject Expert in Mathematics of interview committee for Assistant Professors at S.G.R.R. University, Dehradun and Subject Expert in School education of Uttarakhand for Super-100 programme. He also delivered an invited talk during the session entitled ‘Correlation and Regression’ in three week Research Methodology Workshop for Ph. D. scholars from 04 – 24 December 2017.

In H.N.B. Garhwal Central University merit list, Sadiya Maryum, (M. Sc. Mathematics) got Vth position in class B. Sc. and Sakshi Chauhan got IVth position in M.A. Mathematics.

In 2019, students Surbhi Aneja, Namita Rawat and Anil Singh Bisht were selected in School Education Uttarakhand lecturer (Mathematics) Exam conducted by UKPSC, Haridwar.

**Dr. S. K. Padaliya,**  
HoD, Mathematics

## In Memoriam: A Homage to Late Dr. Seema Saxena

It has been more than two years when Dr. Seema Saxena, (Head, and Botany Department) unarguably one of the best teachers of our college left for her heavenly abode. The cruel hands of death snatched her away from us on 23rd April, 2017.

The sudden and untimely death of Dr. Seema Saxena left all of us shell shocked. Such is the tragic irony of life that when we were praying for her early recovery from cancer and were looking forward to seeing her amidst us once again, there came the shattering news that she was no more. She was one of the pillars of strength of our college. She would undoubtedly be missed by all of us.

My association with Dr. Seema Saxena was more than two decades old. The first time we worked together very closely was during NSS (Girls) Day- Night camp in 2001 which used to be of ten days duration in those days. During this camp I had the opportunity to see the various facets of Dr. Seema's personality. I observed that she was very systematic in her over all approach, especially in organizing things. She was very disciplined and she had a very highly commendable work ethics . Once she committed herself to some task, she would devote herself whole heartedly to it.

Later on we worked together in many other committees of the college but here I would like to mention specially the Cultural Committee. I remember how in the year 2006 ,she worked very diligently for preparing Questionnaire for a G K Quiz that we planned on an elaborate scale. It was quite exciting because it was for the first time the entire event was going to be videographed. For this Quiz Dr. Seema made a



detailed question bank for questions based on science while I prepared questions based on literature, philosophy and fine arts etc. Now a days technology has made such kind of exercise quite easy as one has a ready access to a vast store house of information on any subject under the sun and hence it is not so difficult to prepare Questionnaire etc. but it used to be quite a time consuming task in those days. One had to consult a lot of books for preparing Question Bank for Quizzes etc., specially when the range of the Quiz was very comprehensive as it covered diverse field of Politics, Economics, Geography, Literature, Science etc. Due to her hard work that Dr. Seema put for preparing the Question Bank, the Quiz turned out to be quite exciting and challenging and a large number of



students participated in it. It was undoubtedly a mentally stimulating exercise for us and it was hugely appreciated by one and all. This was made possible, to a large extent, by the sincere efforts and intelligent preparation made by Dr. Seema.

Another quality of Dr Seema was that whenever the students went to her for seeking guidance for debate, she would sit patiently with them and discuss with them in detail all aspects of speech competition etc. the topic of debate or Speech competition , so that the students were well prepared . Under her guidance, the college won many prizes in collegiate and inters university competitions. Similarly she worked very conscientiously as member of the Editorial team of Pragya, our college magazine.

Here I would like specially mention that Dr. Seema and myself participated in two training programs for Capacity Building of Women in Higher Education. One Program was held in DAV College Faridabad in 2011 and the other in Kurukshetra University in 2013. Both the programs were of one week duration each and were very hectic as there were many brain storming sessions, group discussions and presentations etc during the program. In both these programs Dr. Seema's performance was brilliant and she won accolades from the other participants as well as from the senior members of the organising team.

Similarly when we were preparing for the second cycle of NAAC Accreditation, Dr. Seema made a very rich contribution as a member of the NAAC Steering Committee. She was assigned the task of preparing the fifth criterion of NAAC Evaluation titled 'Student Support and Progression'. This Criterion required a lot of effort in collecting and collating data and

preparing tables etc. Dr. Seema did this work very meticulously. Whenever I requested her to come to IQAC office to discuss some point related to SSR, she would spare her time and sit for hours to fine tune the draft. Eventually when due to some personal exigency I had to take leave during the time of NAAC Peer Team visit in March 2016 as Associate Co-ordinator IQAC, she coordinated the entire program so well under the guidance of Principal Prof. V. A. Bourai that she earned the appreciation of one and all. She kept the flag of our dear institution flying high. It was due to such spirit of dedication that the college was accredited with 'A' Grade.

Working together closely for so many years, I came to know many sterling qualities of her personality. Her dedication to duty was unparalleled. She was very sincere and hard working: she was very meticulous in preparing Research Proposals. We used to consult her regularly while preparing / submitting Research Proposals. As in-charge of Research Committee, she did a highly commendable job. Her documentation was perfect.

Although there are unending memories of Dr. Seema Saxena which I cherish in my heart, I would like to specifically mention three qualities of her personality her melodious voice, her hospitality and her cheerful smiling face. Although the cruel hands of death have snatched her from us, she would always remain alive in our memories. She was one of the finest teachers of our college and a role model for us all.

**Dr. Madhu D. Singh**

Associate Professor & Head  
Department of English

## श्रद्धांजलि



मेरा सुश्री मधु मिश्रा से परिचय सन् 2010 में हुआ जब उन्होंने हमारे कॉलेज में स्थापित वीमेंस स्टडीज़ सेंटर (यूजीसी द्वारा प्रायोजित प्रोजेक्ट) में डॉक्यूमेंटेशन ऑफिसर के रूप में कार्य करना प्रारम्भ किया। इस प्रोजेक्ट में सुश्री मिश्रा ने लगभग पाँच वर्षों तक अपना योगदान दिया। सुश्री मधु मिश्रा स्वभाव से बहुत सरल, मृदुभाषी तथा कर्मठ थीं। वीमेंस स्टडीज़ प्रोजेक्ट से जुड़े कार्यों को वे सदैव पूर्ण निष्ठा और लगन के साथ संपन्न करती थीं।

सेन्टर के अर्द्धवार्षिक न्यूज़लेटर 'शक्तिरूपा' के प्रकाशन में उनके महत्वपूर्ण योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उनकी असामयिक मृत्यु हम सभी के लिए अत्यंत दुखद समाचार है। ईश्वर से उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना।

**डॉ० मधु डी सिंह** (एसोसिएट प्रोफेसर एवं हेड, अंग्रेजी विभाग)

---

Ms. Madhu Mishra was very hardworking and genuine person. Her departure to heaven has been a great loss to us as she was a dear friend. May her soul rest in peace.

**Dr. Jyoti Pandey and Dr. Anupam Sanny**, Dept. of English

---

Ms. Madhu Mishra was a brilliant student of M.A. English 1993 Batch. She was part of the research team of our college in which we worked together in Indo-Canadian Shashtri Project funded by Calgary University Canada. Ms. Mishra was very hardworking. She also taught UG and PG classes in Dept. of Economics for two years. Her nature was very friendly and caring. It is very painful to lose a close friend like her. Her magnetic smile will be missed by all who knew her. It is difficult to accept that she is not with us anymore. God's will is unalterable but it really sad that she was called away so soon. May her soul rest in peace.

**Dr. Rajbahadur**, Head, Dept. of Economics



# *Student Union Week*





# *Student Union Election*





# *Games & Sports*





# Games & Sports





# *Games & Sports*





# *Various Activities*





# *Various Activities*



## Student Union 2017-18



शुभम रावत  
अध्यक्ष



निशात परवीन  
उपाध्यक्ष



अजय नेगी  
महासचिव



दमनजीत सिंह  
कोषाध्यक्ष



काजल डोभाल  
सहसचिव



सिद्धार्थ ठाकुर  
विश्वविद्यालय प्रतिनिधि

## Student Union 2018-19



प्रवीन्द गुप्ता  
अध्यक्ष



आसिफ मलिक  
उपाध्यक्ष



अकमल अली  
महासचिव



शिवानी नेगी  
कोषाध्यक्ष



दीपा गड़िया  
सहसचिव



दमनजीत सिंह  
विश्वविद्यालय प्रतिनिधि





# SHRI GURU RAM RAI UNIVERSITY (SGRRU)

Pathri Bagh, Patel Nagar, Dehradun, Uttarakhand

(Established under Shri Guru Ram Rai University Act No. 03 of 2017)

"Recognized by UGC u/s 2 (f) of UGC Act, 1956"

*Quest for  
Excellence*

**"Quality Education  
at  
Affordable Fee"**

## ADMISSIONS OPEN FOR 2020-21

### SGRR INSTITUTE OF MEDICAL & HEALTH SCIENCES

MBBS (Including 1 Yr. Internship) 5½ Yrs.  
MD/MS 3 Yrs.

Admission Helpline: (0135) 6672698, Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in)

### COLLEGE OF PARAMEDICAL SCIENCES

B.P.T. (Physiotherapy including 6 months' internship) 4½ Yrs.  
B.M.L.T. (Medical Lab Technology including 6 months' Internship) 3½ Yrs.  
B.M.R.I.T. Bachelor in Medical Radio Imaging Technology 3½ Yrs.  
B.Sc. (Optometry) (including Internship) 4 Yrs.  
B.Sc. (Medical Microbiology) (including 6 months internship) 3½ Yrs.  
M.Sc. M.L.T. 2 Yrs.  
M.P.T. (Ortho, Neuro, Sports, Cardio, Pedia, Obs & Gynae) 2 Yrs.

Prospectus available at Admission Cell, SGRR College of Paramedical Sciences, Patel Nagar, Dehradun

Admission Helpline: 9758580250, 9412402414 Call: (0135) 6672536, Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in), E-mail: [dean.spms@sgrru.ac.in](mailto:dean.spms@sgrru.ac.in)

### COLLEGE OF NURSING

A.N.M. (Auxiliary Nurse & Midwifery) 2 Yrs.  
G.N.M. (General Nurse & Midwifery) 3 Yrs.  
Post Basic B.Sc (Nursing) 2 Yrs.  
B.Sc. (Basic Nursing) 4 Yrs.  
M.Sc. (Nursing) 2 Yrs.

Note: Eligibility Criteria may change as per INC norms.

Admissions will be on the basis of Entrance Exam.

Prospectus available at Admission Cell, SGRR College of Nursing, Patel Nagar, Dehradun

Admission Helpline: (0135) 6672537, 6672538

Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in), E-mail: [con@sgrrmc.com](mailto:con@sgrrmc.com)

### SCHOOL OF COMPUTER APPLICATION & INFORMATION TECHNOLOGY

M.C.A. 3 Yrs.  
M.C.A. (Lateral Entry) 2 Yrs.  
B.C.A. 3 Yrs.  
B.Sc. (I.T.) 3 Yrs.  
B.Sc. (Hons.) Computer Science 3 Yrs.

Prospectus available at Admission Cell, SGRR University

Patel Nagar / Pathri Bagh Campus, Dehradun

Admission Helpline: 7248889222, 7900210707, Call: 0135 - 2726209, 2726457

Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in), E-mail: [admission.sgrruit@gmail.com](mailto:admission.sgrruit@gmail.com)

### SCHOOL OF PHARMACEUTICAL SCIENCES

D.Pharm 2 Yrs. M. Pharm - Pharmaceutical Quality Assurance 2 Yrs.  
B. Pharm 4 Yrs. M.Pharm - Pharmacy Practice 2 Yrs.  
B. Pharm (Lateral Entry) 3 Yrs. M. Pharm - Pharmaceutics 2 Yrs.  
Pharm. D 6 Yrs. M. Pharm - Pharmacology 2 Yrs.  
Pharm D (PB) 3 Yrs. M. Pharm - Pharmacognosy 2 Yrs.  
M.Sc. - Pharmaceutical Chemistry 2 Yrs.

Prospectus available at Admission Cell, SGRR University, Patel Nagar/ Pathri Bagh Campus, Dehradun

Admission Helpline: 7248889222, Call: 0135-2726209, 2726457

Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in), E-mail: [dean.spcs@sgrru.ac.in](mailto:dean.spcs@sgrru.ac.in)

### SCHOOL OF AGRICULTURAL SCIENCES

B.Sc. (Hons.) Agriculture 4 Yrs. Prospectus available at  
B.Sc. (Hons.) Horticulture 4 Yrs. Admission Cell  
M.Sc. (Ag.) Agronomy 2 Yrs. SGRR University,  
M.Sc. (Ag.) Horticulture 2 Yrs. Pathri Bagh/Patel Nagar Campus, Dehradun  
M.Sc. (Ag.) Seed Science and Technology 2 Yrs. Admission Helpline:  
M.Sc. (Ag.) Plant Pathology 2 Yrs. 9720006689, 7017286650  
M.Sc. (Ag.) Soil Science 2 Yrs. Call: 0135-2721763, 2726435  
M.Sc. (Ag.) Entomology 2 Yrs. Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in)  
E-mail: [dean.sas@sgrru.ac.in](mailto:dean.sas@sgrru.ac.in)

### SCHOOL OF BASIC & APPLIED SCIENCES

B.Sc. (Hons.) Biotechnology 3 Yrs. M.Sc. Zoology 2 Yrs.  
B.Sc. (CZ/CB with Biotechnology) 3 Yrs. M.Sc. Geology 2 Yrs.  
B.Sc. (CZ/BZ/CB with Microbiology) 3 Yrs. M.Sc. Chemistry 2 Yrs.  
B.Sc. (CBZ), (PCM), (PMD), (PMG) 3 Yrs. M.Sc. Physics 2 Yrs.  
M.Sc. Biotechnology 2 Yrs. M.Sc. Mathematics 2 Yrs.  
M.Sc. Microbiology 2 Yrs.  
M.Sc. Botany 2 Yrs.

Prospectus available at Admission Cell, SGRR University,

Patel Nagar / Pathri Bagh Campus, Dehradun

Admission Helpline: 9997334586, 8755487416, 8279756638, 9756208105

Call: (0135) 2726209, 2726457, Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in), E-mail: [dean.sbas@sgrru.ac.in](mailto:dean.sbas@sgrru.ac.in)

### SCHOOL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES

B.A. (History, Economics, Geography, Hindi, English, Political Science, Statistics, Psychology, Defence Studies) 3 Yrs. M.S.W. 2 Yrs.  
B.A. (Hons.) Journalism & Mass Communication 3 Yrs. Certificate Course in Yogic Science 6 Months  
M.A. History 2 Yrs. Post Graduate Diploma in Yogic Science 1 Yrs.  
M.A./M.Sc. Geography 2 Yrs. B.Sc. Yogic Science 3 Yrs.  
M.A./M.Sc. Statistics 2 Yrs. B.A. Drawings and Painting 3 Yrs.  
M.A. Political Science 2 Yrs. B.A. Drawings and Painting 2 Yrs.  
M.A. Mass Communication 2 Yrs. B.A. Home Science 3 Yrs.  
M.A. English 2 Yrs. M.A. Home Science 2 Yrs.  
M.A./M.Sc. Yogic Science 2 Yrs. B.A. Music Vocal & Instrument 3 Yrs.  
B.A. Music Vocal & Instrument 2 Yrs.

Prospectus available at Admission Cell, SGRR University, Pathri Bagh/Patel Nagar Campus, D.Dun

Admission Helpline: 7900210707, 9897858130, 9411528492, 9760678610.

Call: (0135) 2721763, 2726435, Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in), E-mail: [geeta74rawat@gmail.com](mailto:geeta74rawat@gmail.com)

### SCHOOL OF MANAGEMENT & COMMERCE STUDIES

M.B.A. 2 Yrs. Prospectus Available at  
M.H.A. 2 Yrs. Admission Cell, SGRR University,  
M.Com. 2 Yrs. Patel Nagar/ Pathri Bagh Campus, Dehradun  
B.B.A. 3 Yrs. Admission Helpline: 7248889222, 7900210707  
B.Com. 3 Yrs. Call: (0135) - 2726209, 2726457  
B.Com. (Hons) 3 Yrs. Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in),  
E-mail: [admission.sgrrumgt@gmail.com](mailto:admission.sgrrumgt@gmail.com)

### COLLEGE OF EDUCATION

B.Ed. 2 Yrs. Prospectus available at Admission Cell,  
M.Ed. 2 Yrs. SGRR University,  
P.G. Diploma In Guidance and Counselling 1 Yrs. Pathri Bagh/Patel Nagar Campus, Dehradun.  
M.Phil (Education) 1 Yrs. Admission Helpline: (0) 7900211188/9997511185  
Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in)  
E-mail: [dean.coe@sgrru.ac.in](mailto:dean.coe@sgrru.ac.in)

### SCHOOL OF ENGINEERING

B.Tech (Compute Science Engineering) 4 Yrs. Prospectus available at Admission Cell,  
B.Tech (Civil Engineering) 4 Yrs. SGRR University Patel Nagar/ Pathri Bagh  
B.Tech (Agriculture Engineering) 4 Yrs. Campus, Dehradun

Admission Helpline: 7248889222, 7900210707, Call: 0135 - 2726209, 2726457  
Visit: [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in), E-mail: [admission.sgrruit@gmail.com](mailto:admission.sgrruit@gmail.com)

### CERTIFICATE / DIPLOMA COURSES TO BE COMMENCED

O.T. Technician, SPA, Electrician, Plumber, Carpenter, Certificate Courses in Computer

*Ph.D. available in 29 disciplines except Nursing*

Call: 9805556005 Email: [dean.research@sgrru.ac.in](mailto:dean.research@sgrru.ac.in)

All courses and combinations are running in the above Schools and Colleges

## For Admissions Please Contact:

Mobile: (0) 7248889111/222, 7900210707, 9639120202 Log on to [www.sgrru.ac.in](http://www.sgrru.ac.in) for online registrations





# श्री गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज

(NAAC ACCREDITED GARDE 'A' COLLEGE)

पथरीबाग, देहरादून-248001, उत्तराखण्ड

फोन/फैक्स: 0135-2624881

वेबसाईट: [www.sgrrcollege.com](http://www.sgrrcollege.com)